RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 15-16 नवंबर 2024
डाक प्रेषण तिथि : 15-17 नवंबर 2024
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 62 अंक : 15
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 68
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

धार्मिक पाक्षिक

महत्तम शिखर वर्ष

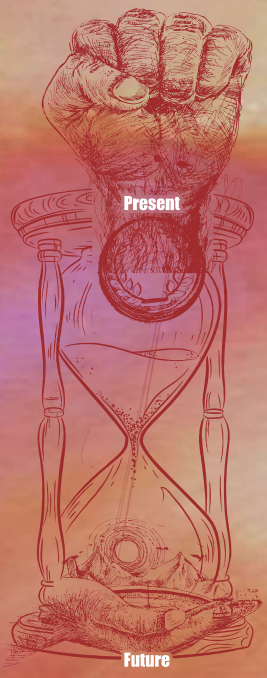

भविष्य का निर्माण
वर्तमान की नींव पर ही होता है,
उसे भूलो मत।

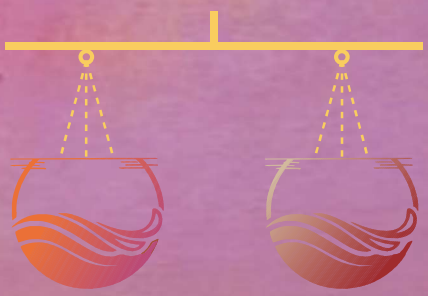

अनाज की तुला में
स्वर्ण को नहीं तोला जा सकता।

आजादी तुम्हारी
बर्बादी की कहानी
लिखने वाली न हो।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आगमवाणी

झाणणिलीणो साहू, परिचागं कुणइ सव्वदोसाणं।
तम्हा दु झाणमेव हि, सव्वदिचाररस्स पडिक्कमणं।।

- नियमसार (63)

ध्यान में लीन हुआ साधक सब दोषों का निवारण कर सकता है, इसलिए ध्यान ही समग्र अतिचारों (दोषों) का प्रतिक्रमण है।

The aspirant who is engrossed in (pious) meditation can destroy all flaws. Therefore, meditation is the true regression from all transgressions.

औयं चित्तं समादाय झाणं समुप्पज्जइ।
धम्मे ठिओ य विमणो, निव्वाणमभिगच्छइ।।

- दशाश्रुतस्कंध (5/1)

चित्तवृत्ति निर्मल होने पर ही ध्यान की सही स्थिति प्राप्त होती है। जो बिना किसी विमनस्कता के निर्मल मन से धर्म में स्थित है, वह निर्वाण को प्राप्त करता है।

Meditation is achieved only on purification of the psyche. One who establishes himself in the true faith without any distraction, liberates.

एक्को हु धम्मो नरदेव! ताणं, न विज्जई अन्नमिहेह किंचि।

- उत्तराध्ययन सूत्र (14/40)

राजन! एक धर्म ही रक्षा करने वाला है। उसके सिवा विश्व में मनुष्य का कोई भी त्राता नहीं है।

O King ! Dharma is the only saviour. Nothing else can save a man in this world.

धम्मो मंगलमुक्कट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

- दशवैकालिक सूत्र (1/1)

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं। जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं।

Dharma is the best benediction. It manifests itself in the form of non-violence, restraint and penance. The gods also bow to him whose mind is always engrossed in such Dharma.

वत्थु सहावो धम्मो।

- कार्तिकेयानुपेक्षा (478)

वस्तु का अपना स्वभाव ही उसका धर्म है।

The true nature of a thing is its Dharma.

साभार- प्राकृत मुक्तावली

राम चमकते भानु समाना

अनुक्रमणिका

ज्ञान सार

08 **आध्यात्मिक आरोग्यम्**.....
– संकलित

12 **श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला**..
– कंचन कांकरिया

14 **श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र**.....
– सरिता बैंगानी

भक्ति रस

19 **मोह**.....
– ललित कटारिया

26 **महत्तम आनंद रस पाओगे**.....
– बी. शांतिलाल पोकरणा

27 **मुझे सुंदर बनना है**.....
– डॉ. स्मिता कोटड़िया

संस्कार सौरभ

17 **धर्ममूर्ति आनंद कुमारी : जयपुर से अजमेर**.....
– संकलित

20 **पर-पीड़ा की हो अनुभूति**.....
– गौतम पारख

22 **महत्तम-समीक्षण भाव**.....
– पदमचंद गांधी

25 **समता दर्शन के पर्याय गुरु नानेश**.....
– बनेचंद बोथरा 'बन्नू'

विविध

28 **भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार**....
– महेश नाहटा

40 **श्री अ.भा.सा. जैन संघ**
संघ समर्पणा महोत्सव एवं 62वाँ संयुक्त वार्षिक अधिवेशन.....

47 **श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति**
सत्र 2023-25 की चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक संपन्न.....

50 **श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ**
सत्र 2022-24 की अष्टम कार्यसमिति बैठक संपन्न.....

चिंतन पराग

संतोष ही तृप्ति है

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

समुद्र का पानी प्यास बुझाने में समर्थ नहीं होता। यदि कोई पीए तो भले वह पीता ही रहे, उससे प्यास नहीं बुझती। प्रश्न हो सकता है कि ऐसा क्यों? समुद्र का जल भी है तो पानी ही, फिर वह प्यास क्यों नहीं बुझा पाता? इसका उत्तर यह है कि सारा पानी एक समान नहीं होता। पानी पीने वाले यह अच्छी तरह जानते हैं कि पीया जाने वाला जल भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। सारी नदियों का जल भी एक समान नहीं होता। स्वाद व वर्ण आदि में अंतर सुस्पष्ट है। अतः सागर का पानी, पानी होते हुए भी पेय नहीं है। उसमें प्यास बुझाने की क्षमता नहीं है, इसलिए उस पानी को कोई इनसान पीता ही नहीं है। यदि पी भी ले तो वह उससे प्यास बुझा नहीं पाता। प्यासा व्यक्ति यदि नासमझी से पी ले तो उसका कंठ गीला हो सकता है, किंतु प्यास नहीं बुझती। वैसी ही दशा धन व नाम के चाह की है। धन और नाम आदमी को जितना मिलता जाता है उसकी प्यास भी बुझने के बजाय बढ़ती जाती है। मजे की बात यह है कि समुद्र के पानी को व्यक्ति पीना नहीं चाहता, पीता भी नहीं है, लेकिन धन व नाम की चाह का पानी पीने से चूकता नहीं। यद्यपि पीने के बाद भी उसे शांति-समाधि मिलती नहीं है। तृप्ति भी होती नहीं है फिर भी पीने से पीछे नहीं हटता, पीने को तत्पर रहता है। चक्रवर्ती की ऋद्धि भी मिल जाए तो भी तृप्ति हो नहीं पाती। जैसे उदधि का सारा पानी कोई पी ले तो भी उसकी प्यास ज्यों की त्यों रहेगी, ठीक वैसे ही विश्व की सारी दौलत मिल जाए, सब तरफ नाम की गूँज हो जाए तब भी उसकी प्यास बुझना कठिन है। वह चाहेगा और मिले। उसके पीछे भागने वाला आज तक कोई सुखी नहीं है, यह सर्व विदित है या यों कहें कि प्रायः विदित है। फिर भी लोग उसके पीछे दौड़ते नजर आते हैं। उसमें कैसा रस है, यह तो वे ही लोग जान सकते हैं जो उसे चखते हैं, पर शायद उसमें रस होगा नहीं। यदि रस होता तो उनकी प्यास क्यों नहीं बुझती? प्यास बुझाने का एक ही उपाय है, वह है संतोष। *'जब आए संतोष धन सब धन धूरि समान।'* इसी प्रकार कहा जाता है *'संतोषी सदा सुखी।'* वस्तुतः संतोष ही तृप्ति है।

कार्तिक कृष्ण 13, सोमवार, 09-11-2015

साभार- ब्रह्माक्षर

Chintan Parag

CONTENTMENT IS FULFILMENT

-Param Pujya Acharya Pravar 1008 Shri Ramlal Ji M.Sa.

Sea water is hardly capable of quenching thirst. Should someone drink it, he might as well keep gulping it without slaking his thirst. The question might arise as to why it is so. Sea-water is water all the same, so why can it not assuage thirst? The answer is, not all waters are alike. Those who drink water know very well that potable water is of different types. Waters of rivers too are not alike. Clearly, they vary in taste and quality. As such, ocean water, notwithstanding its being water, is not fit for drinking. It is not capable of quenching thirst, hence no human drinks it. Should he drink it, he will not find his thirst slaked. A thirsty person may quaff it by mistake; he will find his throat moistened, but will hardly find his thirst satiated.

Similar is the case with the desire for wealth and fame. Far from feeling satisfied, the more a person acquires wealth and fame, the more is his desire fuelled. And the amusing part is, while he hardly wishes to drink sea water, and by no means consumes it, he would not shrink from partaking of the waters of wealth and fame. He will know no peace and bliss though, even upon savouring it. He experiences nothing in the way of satisfaction either, and yet he would not shy away from 'drinking' it; rather, he is ever poised to 'drink' it.

Even though he were to gain the opulence of the whole world, he would know no satisfaction. Even if somebody were to drink the ocean, his thirst would remain intact; likewise, he would hardly feel contented even if he acquires all the world's wealth, and has his name and fame resound all over. He will desire more.

It is universally known, or at least generally known, that none who chased wealth and fame ever found happiness. And yet people chase after it. Now, what relish it has can be known only to those who savour it, but perhaps there may be no relish at all. If there had been, why is it that their longing is not sated? There is just one way to satiate the craving, and that is, contentment.

'Jab aaye santosh dhan, sab dhan dhuri samaan.'

(Or, when the wealth of contentment is gained, all the other types of wealth are just akin to dust).

Likewise, it is said, ***'one contented is ever happy'***. Truly speaking contentment is happiness.

Monday, 09-11-2015 **Courtesy- Brahmakshar**

समय का मूल्य पहचानें : आयाम साधकर जीवन सजाएँ

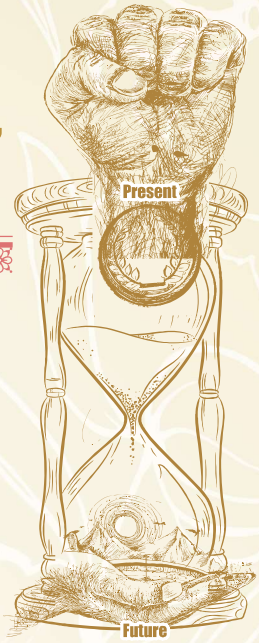

समय का जीवन के साथ महत्त्वपूर्ण संबंध है। समय का कद्रदान होना जागृत अवस्था का प्रतीक है। जो समय की कीमत नहीं करता, समय का सदुपयोग नहीं करता, वह स्वयं के जीवन को सही नहीं रख सकता। क्षण का ज्ञाता, समय का ज्ञाता, अवसर का जानकार, आत्मा का ज्ञाता पुरुष ही पंडित होता है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

उपरोक्त कथन अपने आप में सुस्पष्ट व शिक्षाप्रद है। अपने संपूर्ण जीवन में हमें कई ऐसे अवसर प्राप्त हुए हैं जब हमने ऐसे हृदय परिवर्तनकारी वाक्यांश एवं उपदेश पढ़े अथवा सुने हैं। शायद कई बार आत्मसात भी किए हों। महत्त्वपूर्ण है कि कोई भी उपदेश कब, कैसे, कहाँ व कितना आत्मसात करना है। यह मूल्यांकन करना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप अभी हमारे समक्ष परम पूज्य श्रमण भगवान महावीर का निर्वाण दिवस उपस्थित हुआ। इस परम दिवस पर हम सभी ने अहोभाव व्यक्त करते हुए साधना की। यहाँ पर ध्यातव्य बिंदु यह है कि अवसर का जानकार व्यक्तित्व चिंतन–मनन करता है कि यह प्रभु का 2550वाँ निर्वाण दिवस है। मैंने इस दिवस पर अपने आप पर क्या कार्य किया? क्या मेरा एक कदम भी आत्मकल्याण की ओर बढ़ा? क्या मैंने अपनी धर्माराधना व ज्ञान में वृद्धि की? यदि ये भाव हमारे जीवन में परिणत हो जाएँ तो हम पाएँगे कि प्रत्येक वर्ष हमारे भीतर अद्भुत परिवर्तन हो रहा है और हम समाधि भाव की ओर बढ़ रहे हैं।

जिस तरह बीज को अंकुरित करने के लिए सही समय पर हवा, पानी व प्रकाश की आवश्यकता होती है, उसी तरह आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होने के लिए ऐसे सुअवसरों की आवश्यकता है। इसी ऊर्जा के फलस्वरूप यदि हमारा चिंतन क्रियान्वयन में परिणत हो जाए तो हमें परमानंद की प्राप्ति से कोई नहीं रोक सकता। आवश्यकता है सही समय पर सही रूप में पुरुषार्थ करने की।

परम पूज्य आचार्य प्रवर जन–जन के धार्मिक विकास हेतु चिंतन स्वरूप निरंतर आयाम प्रदान कर रहे हैं। अगर वे सभी आयाम जीवन रूपी पात्र में ग्रहण कर लिए जाएँ तो निश्चय ही हमारा जीवन धन्य बन जाएगा। इसी शुभभावना के साथ...

– सह–संपादिका

ज्ञान सार

आध्यात्मिक आरोग्यम्

गुणपरक दृष्टि

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. का जन-जन के चिंतन हेतु अमूल्य आयाम **'आध्यात्मिक आरोग्यम्'** ब्यावर की पुण्यधरा पर ज्ञान पंचमी को प्रदान किया गया था। धारावाहिक के रूप में आप सभी के समक्ष आत्मकल्याण के लक्ष्य के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसे जीवन में उतार कर अपने जीवन को आध्यात्मिक आरोग्यम् की ओर उन्मुख करें।

दृष्टि गुण की राखिए,
गुण धारिए दिल माय।
गुणपरक दृष्टि सुखद,
गुरु वाणी सुखदाय।।

आध्यात्मिक आरोग्यम् का पहला गुण है **गुणपरक दृष्टि**। गुणपरक दृष्टि का एक नायाब उदाहरण मिलता है एक माली और एक व्यक्ति की बातचीत में।

एक व्यक्ति घूमते-घूमते बगीचे में पहुँचता है। वहाँ वह देखता है सफेद मोगरे के फूल, लाल कमल के फूल, लीली के नीले फूल, अमलतास के पीले फूल और चमेली के सफेद फूल। फूलों के अलावा उसे वहाँ दिखता है मीठा गन्ना, कसैला आँवला और कड़वा नीम। उसे तीखी मिर्च भी दिखती है। इन सबको देखकर वह बगीचे के माली से पूछता है कि भाई, चमेली में सफेदी कहाँ से आई? वह यह भी पूछता है कि गन्ने में मीठापन और नीम में कड़वापन कहाँ से आया?

माली कहता है कि कड़वा, मीठा, तीखापन आदि सारे रस जमीन में हैं, जिसकी जैसी ग्रहण क्षमता होती है, वह उसी प्रकार ग्रहण करता है।

बगीचे में जाने वाले उस व्यक्ति की तरह किसी के मन में यह प्रश्न आए कि यह दुनिया कैसी है तो किसी से पूछने से पहले वह यह टटोले कि हमारी ग्रहण क्षमता कैसी है। वह यह देखे कि हमारा चश्मा कैसा है। जिसका जैसा चश्मा होता है उसको दुनिया उसी रंग की नजर आती है। काले चश्मे वाला काली दुनिया देखता है और हरे चश्मे वाला हरी। चश्मा बहुत महत्त्व रखता है। चश्मे के अनुसार हमारी नजर बनती है।

इसे एक घटना से जान सकते हैं। कृष्ण ने दुर्योधन को बुलाकर कहा कि जाओ हस्तिनापुर में जितने सद्गुणी हैं उनकी लिस्ट बनाकर लाओ। दुर्योधन के जाते ही युधिष्ठिर को भी बुलाकर कहा कि जाओ हस्तिनापुर में रहने वाले दुर्गुणियों की लिस्ट बनाकर लाओ। दोनों को 7-7 दिन का समय दिया गया।

7 दिन बाद युधिष्ठिर और दुर्योधन दोनों साथ लौटे। कृष्ण, दुर्योधन से पूछते हैं कि हो गया काम? दुर्योधन कुछ बोलते नहीं और मुँह नीचे कर लेते हैं। उनका मन उदास था। उदास देखकर कृष्ण ने कहा, क्या काम नहीं हुआ? दूसरी बार पूछने पर दुर्योधन ने पैर पटकते हुए कहा कि मैं पूरा हस्तिनापुर घूम लिया, पर मुझे एक भी सद्गुणी पुरुष नहीं मिला।

अब कृष्ण, युधिष्ठिर की ओर देखते हैं। युधिष्ठिर नजर झुकाए हाथ जोड़कर कहते हैं, मुझे पूरे हस्तिनापुर में कोई भी दुर्गुणी नहीं मिला। यह वार्ता राजदरबार में हो रही थी। इसे सुनकर राजदरबार में उपस्थित लोग चौंके और एक-दूसरे की ओर इस भाव से देखने लगे कि ऐसा कैसे हो सकता है! दुर्योधन कहते हैं कि एक भी सद्गुणी नहीं मिला और युधिष्ठिर कहते हैं कि एक भी दुर्गुणी नहीं मिला।

हमें सोचना है कि क्या सच है। हमें सोचना है कि कौन सच कह रहा है। दुर्योधन सच बोल रहा है या युधिष्ठिर!

ज्ञानीवृंद कहते हैं कि दोनों ही सच है। **आप दुनिया को जैसी नजरों से देखते हैं, दुनिया आपको वैसी ही नजर आती है।** इसलिए दुनिया कैसी है, यह पूछने से पहले आप यह पूछो कि आप कैसे हैं। इस पर गुरु नानक के समय का एक दृष्टांत है।

गुरु नानक एक गाँव से गुजर रहे थे। थक जाने पर वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए। वहाँ कुछ बुजुर्ग बैठे थे। उन बुजुर्गों के पास कुछ लोग आए। आने वालों के माथे पर गठरी थी। उनके पैरों में चप्पल थी और कपड़े फटे हुए थे। वे बुजर्गों से पूछते हैं कि यह गाँव कैसा है, हम इसमें बसना चाहते हैं।

बुजुर्ग, आने वालों से पूछते हैं कि बताओ तुम जिस गाँव से आए हो वह गाँव कैसा था?

राहगीर कहने लगे कि पुराना गाँव तो बहुत गंदा था। वहाँ के लोग बहुत लड़ाकू थे। बात-बात पर झगड़ा करते थे।

तब एक बुजुर्ग ने कहा कि यह गाँव भी वैसा ही है। तुम यहाँ मत बसो, आगे जाओ।

थोड़ी देर में एक और जत्था बुजुर्गों के पास पहुँचता है और पूछता है कि यह गाँव कैसा है?

बुजुर्ग फिर पूछते हैं कि तुम्हारा पिछला गाँव कैसा था?

सूरत से सज्जन दिखने वाले लोग कहते हैं कि हमारा पिछला गाँव बहुत अच्छा था। वहाँ के लोग बहुत प्यारे थे। आपस में बहुत सहयोग करते थे। बड़े प्रेम से बात किया करते थे। ये कहते हुए उनकी आँखें भर गईं।

तब वे बुजुर्ग कहते हैं कि यह गाँव भी बहुत अच्छा है। यहाँ के लोग भी बड़े सज्जन हैं। तुम लोग यहाँ रहो, तुम्हें कोई समस्या नहीं होगी।

ये मंजर देखकर गुरु नानक बुजुर्ग से पूछते हैं कि परस्पर विरोधी जवाब आपने कैसे दिए?

बुजुर्ग ने कहा कि गाँव और शहर कभी अच्छा व बुरा नहीं होता। जब आप अच्छे होते हैं तो गाँव अच्छा हो जाता है और जब आप बुरे होते हैं तब वही गाँव बुरा हो जाता है। यह आप पर निर्भर है कि आप कैसे हैं। आपका वर्तन, व्यवहार और सलीका कैसा है। आप दूसरों से कैसे पेश आते हैं। जैसा आप दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं दूसरे भी आप के साथ वैसा ही व्यवहार करते हैं।

मुख्य बात यह है कि आपकी दृष्टि दूसरों में क्या खोजती है। आपकी दृष्टि गुणों को खोजती है तो आपको गुण नजर आएँगे। जैसे युधिष्ठिर को गुण नजर आए। श्री कृष्ण को सड़ी हुई कुतिया के सुंदर दाँत नजर आए। भगवान को गोशालक का भव्यत्व नजर आया। जमाली की निकट भविता (जल्दी मोक्ष जाने की योग्यता) नजर आई। उन्होंने चंडकौशिक के भी दुर्गुणों को नहीं देखा। अर्जुन माली को भी दीक्षा प्रदान की। उन्होंने इसलिए ऐसा किया क्योंकि उनकी **दृष्टि गुणपरक** थी। भगवान प्रत्येक प्राणी के गुणों को देखते हैं। उन गुणों की अनुमोदना करते हैं। उन गुणों का प्रकटीकरण करते हैं। उन गुणों के

प्रति अहोभाव पैदा करते हैं। एवंता कुमार ने दीक्षा के पश्चात् पानी में नाव तिराई, तब भगवान उनके चरमशरीरी गुण का प्रकटीकरण करते हैं। यह भगवान की अद्भुत गुणपरक दृष्टि थी।

गुणपरक दृष्टि क्या है?

एक आदमी के पास दिल्ली साउथ एक्सटेंशन में 10,000 गज की कोठी है। मुंबई के बालकेश्वर में 1,000 स्क्वायर फीट का फ्लैट है। गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और हिमाचल में फैक्ट्री है। अरबों का टर्नओवर है और करोड़ों की कमाई। हजारों कर्मचारी हैं। विदेशों में भी माल की सप्लाई होती है। घर-परिवार, गाड़ी-बंगला, बैंक बैलेंस सभी कुछ है। वह आदमी साउथ ब्लॉक में अपनी पैठ रखता है। रायसीना हिल्स तक भी उसकी पहुँच है। सी.एम., पी.एम., प्रेसिडेंट और फॉरेन एंबेसडर भी उसकी डॉयरेक्ट पहुँच में हैं। पद, प्रतिष्ठा, अधिकार सारी चीजें उसे प्राप्त हैं।

एक बार उसके यहाँ इ.डी. की रेड पड़ी। पूछताछ में पता चला कि 1975 में बांग्लादेश से भागकर भारत आया था और इसके पास आधार कार्ड नहीं है। बताइए, उस आदमी का क्या हश्र होगा?

क्या उसे पुलिस बचा पाएगी?

क्या गृह मंत्रालय उसकी पैरवी कर पाएगा?

क्या साउथ ब्लॉक उसकी गवाही दे पाएगा?

क्या रायसीना हिल्स उसके साथ खड़ी रह पाएगी?

उसकी सारी पहुँच, पैठ, पकड़, प्रभाव, जज्बा, जुनून, अधिकार, सभी कुछ उस पर होने वाली कार्यवाही से महफूज कर पाएँगे?

कौन देगा उसे पनाह?

कौन बनेगा उसकी शरणगाह?

कौन बचा पाएगा उसे?

कोई नहीं बचा पाएगा। इसलिए नहीं बचा पाएगा क्योंकि उसके पास आधार कार्ड नहीं है। दिल्ली के शाहीनबाग में दिया गया धरना आधार कार्ड के लिए ही तो था।

बांग्लादेश के रोहिंग्या आधार कार्ड के लिए ही तो लड़ाई लड़ रहे हैं। कश्मीर के शरणार्थी आधार कार्ड के लिए ही तो जद्दोजहद करते हैं। इस समय दुनियाभर में करीब 9 करोड़ लोग रिफ्यूजी हैं। इनका कोई ठिकाना नहीं है। इनके पास कहीं की भी नागरिकता नहीं है। आधार कार्ड होने पर एक चाय वाला भी भारत का पी.एम. बन सकता है। दलित महिला भी भारत की राष्ट्रपति बन सकती है। आधार कार्ड नहीं होने पर अरबपति को भी देश छोड़कर भागना पड़ सकता है।

इसी प्रकार नित्य 11 सामायिक करने वाला, रात्रि संवर करने वाला, 5000 गाथा का स्वाध्याय करने वाला, सैकड़ों थोकड़ों का जानकर, जैन तत्त्व विद्या में पारंगत, द्रव्यानुयोग का तलस्पर्शी ज्ञाता, लाखों-करोड़ों का दान देने वाला, अनेक सत् कार्यों में संपत्ति व्यय करने वाला, छोटी वय में चार खंद आदि अनेकानेक पच्चक्खाण लेने वाला, साधु-साध्वियों की भरपूर सेवा करने वाला श्रावक गुणपरक दृष्टि नहीं रखता तो बाकी के सारे गुण बेकार हैं।

एक चद्दर रखने वाला, रूखी-सूखी गोचरी करने वाला, एकांतर, बेले-बेले, तेले-तेले, अठाई और मासखमण की तपस्या से शरीर को सुखाने वाला, अनेकानेक आगमों को कंठस्थ करने वाला, जुबान पर थोकड़े बैठाने वाला, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, अपभ्रंश आदि अनेक भाषाओं का ज्ञाता, गुरु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त, प्रवचन शक्ति सबल, मेधा शक्ति प्रबल, तर्क शक्ति पैनी, मौनी, ध्यानी, उग्रविहारी, दृष्टि संयमी, वाणी संयमी, काय संयमी जैसे अनेकानेक सद्गुणों का धारक साधु या श्रमण यदि गुणपरक दृष्टि का स्वामी नहीं है तो इतने सारे गुण???

जैसे बिना आधार कार्ड वाले अरबपति को कोई नहीं बचा सकता, वैसे ही उपर्युक्त गुणों से संपन्न श्रावक और साधु को दुर्गति से कोई नहीं बचा सकता। आप

अपने सहवर्ती श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वी में क्या देख रहे हैं, यह महत्त्वपूर्ण है।

जैसे नींव के बिना महल की कल्पना नहीं की जा सकती, वैसे ही गुणपरक दृष्टि के बिना साधना की कल्पना नहीं की जा सकती।

जैसे पानी के बिना फसल की कल्पना नहीं की जा सकती, वैसे ही गुणपरक दृष्टि के बिना साधना की कल्पना नहीं की जा सकती।

जैसे मस्तक पर मुकुट का महत्त्व है, वैसे ही गुणों में गुणपरक दृष्टि का महत्त्व है।

जैसे रत्नों में वैडूर्य मणि श्रेष्ठ है, वैसे ही गुणपरक दृष्टि सर्वश्रेष्ठ है। चिंतन करें कि हम इस गुण को कितना विकसित कर पाए हैं। चिंतन करें कि क्या हम युधिष्ठिर के समान सद्गुणों को देख पाते हैं।

गुणपरक दृष्टि को तीन चरणों में बाँटा जा सकता है -

पहला, सामने वाले व्यक्ति के गुणों को देखना तथा दोषों की उपेक्षा करना।

दूसरा, गुणों की स्तुति करना एवं स्वयं के जीवन में उन गुणों को उतारने की कोशिश करना। साथ ही जो गुण विद्यमान हैं उन्हें मलिन न होने देना।

तीसरा, यदि दूसरा व्यक्ति हमारे दोषों को बताए तो उसे आनंदपूर्वक स्वीकार करना।

गुणपरक दृष्टि अर्थात् सुखपरक दृष्टि। गुणानुरागी मनुष्य अर्थात् सुखानुरागी मनुष्य। संक्षेप में गुणानुरागी मनुष्य अर्थात् सुखी मनुष्य। जो जितना गुणानुरागी होता है, वह उतना ही सुखी होता है। **गुणपरक दृष्टि से सकारात्मकता आती है।** जिंदगी जीने का तरीका समझ में आता है। गुणपरक दृष्टि से दूसरे लोगों के उत्साह में वृद्धि होती है। जब आप किसी के गुण के बारे में बात करते हैं तो उसका मन खिल जाता है। वह खुश होने लगता है। उसे लगता है कि मैं कुछ हूँ। उसके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। ये गुणपरक दृष्टि का प्रभाव है। संसार के सर्वश्रेष्ठ श्रुतज्ञानी गणधर भगवान होते हैं। उनके भीतर भी गुणपरक दृष्टि कूट-कूट कर भरी होती है।

कल्पना करें कि एक मनुष्य गणधर भगवान के पास आता है। भगवान उसे वात्सल्य भरी अमिय दृष्टि से देखते हैं और पूछते हैं कि क्या तुम्हें नवकार मंत्र आता है? नहीं आने पर कहते हैं, अच्छा कोई बात नहीं, तुम बहुत गुणवान हो। तुम नवकार सीखो। वह नवकार सीखता है। फिर गुरु-वंदन सिखाते हैं। वह भी सीखता है। फिर वे इच्छाकारेणं सिखाते हैं। वह भी सीखता है। इसी तरह क्रमशः लोगस्स, णमोत्थु णं, सामायिक, प्रतिक्रमण सीखता चला जाता है।

भगवान उसका उत्साहवर्धन करते हैं। उसे संयम के लिए प्रेरित करते हैं। वह संयम ग्रहण कर लेता है। भगवान नवदीक्षित का उत्साह बढ़ाते हुए अंगशास्त्र पढ़ाते हैं। पढ़ते-पढ़ते वह धीरे-धीरे 11 अंगशास्त्र का ज्ञाता हो जाता है। फिर वे उसके गुणों की सराहना करते हैं। उपबृंहण करते हैं। इससे वह अपने उत्साह को बढ़ाता चला जाता है और द्वादशांगी में पारंगत हो जाता है। गुणपरक दृष्टि से जिनशासन को एक ज्ञानी मुनि मिलते हैं।

सुकोमल शरीर का स्वामी, राजपरिवार से संबंध रखने वाला एक दीक्षित मुनि, जिसे नवकारसी करने का भी अभ्यास नहीं है, वह धीरे-धीरे नवकारसी तो करता ही है, पोरसी, एकासन, उपवास आदि तप के लिए भी प्रेरित होता है। गणधर भगवान उसके उत्साह को बढ़ाते चले जाते हैं। उसके गुणों का बखान करते चले जाते हैं। धीरे-धीरे वह मुनि तप प्रेमी बन जाता है। मास-मासखमण जैसी तपस्या से जुड़ जाता है। जिनशासन को एक तपस्वी मुनि की भेंट प्राप्त हो जाती है। यह गुणपरक दृष्टि का ही प्रभाव है।

- क्रमशः

साभार- आध्यात्मिक आरोग्यम्

ज्ञान सार

श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

15-16 अक्टूबर 2024 अंक से आगे...

संकलनकर्ता - कंचन कांकरिया, कोलकाता

प्रश्न 117 खेचर (नभचर) तिर्यंच पंचेंद्रिय कितने प्रकार के हैं?

उत्तर खेचर तिर्यंच पंचेंद्रिय 4 प्रकार के होते हैं। यथा -

(1) चर्म पक्षी - इनके पंख चमड़े के होते हैं।

(2) लोम (रोम) पक्षी - इनके पंख रोंएदार होते हैं।

(3) समुद्ग पक्षी - इनके पंख उड़ते समय भी समुद्ग (डिब्बे या पेटी) की तरह बंद ही रहते हैं।

(4) वितत पक्षी - इनके पंख बैठे हुए हो तो भी खुले (फैले) हुए ही रहते हैं।

नोट - 'ख' शब्द आकाश का पर्यायवाची है। चर यानी चलना। आकाश में विचरण करने वालों को खेचर कहते हैं।

प्रश्न 118 उपर्युक्त चारों प्रकार के खेचर कितने प्रकार के हैं?

उत्तर उपर्युक्त चारों प्रकार के खेचर सम्मूर्च्छिम और गर्भज दो प्रकार के होते हैं। सम्मूर्च्छिम नपुंसक वेद वाले होते हैं तथा गर्भज में तीनों वेद होते हैं। ये पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं एवं इनकी 12 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख हैं।

प्रश्न 119 चर्मपक्षी कितने प्रकार के हैं?

उत्तर चर्मपक्षी अनेक प्रकार के हैं। यथा - वल्गुली (चमगादड़), भारंड पक्षी, समुद्री कौए, जलौका, चकवा, पक्खिविराली (उड़ने वाली लोमड़ी) आदि।

प्रश्न 120 श्री उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन 4, गाथा 6 में भगवान महावीर ने भारंड पक्षी की उपमा से क्या बोध दिया है?

उत्तर भारंड पक्षी की शारीरिक रचना ऐसी होती है कि तनिक प्रमाद/असावधानी भी उसकी जीवनलीला समाप्त कर देती है। इसी प्रकार साधु जीवन में भी प्रमाद संयमी जीवन को नष्ट कर देता है। अतः अप्रमाद अवस्था को बताने के लिए भगवान ने इस उपमा का प्रयोग किया है।

प्रश्न 121 भारंड पक्षी की शारीरिक रचना कैसी होती है?

उत्तर भारंड पक्षी के पेट एक, मुख दो (ग्रीवा दो) तथा तीन पैर होते हैं। बीच का पैर दोनों के लिए सामान्य होता है और एक-एक पैर व्यक्तिगत। ये सतत जागृत रहकर एक दूसरे के प्रति बड़ी सावधानी बरतते हैं। इसलिए शास्त्र में भारंड पक्षी के लिए 'चरेऽपमत्ते' पद दिया गया है। (पद 15 के अनुसार एक जीव में 8 द्रव्येंद्रियाँ होती हैं।)

प्रश्न 122 रोम पक्षी कितने प्रकार के हैं?

उत्तर रोम पक्षी अनेक प्रकार के होते हैं। यथा – हंस, राजहंस, मोर, कौआ, बगुला, तोता, मैना, कोयल, बतख आदि। (हंस फैलाए हुए जाल को काटकर उड़ जाते हैं, उसी प्रकार चरमशरीरी जीव कर्मों के जाल को काटकर मुक्त हो जाते हैं।)

प्रश्न 123 समुद्ग पक्षी कितने प्रकार के हैं?

उत्तर समुद्ग पक्षी एक ही आकार-प्रकार के कहे गए हैं। वे मनुष्य क्षेत्र में नहीं होते हैं, बाहर के द्वीप-समुद्रों में होते हैं।

प्रश्न 124 वितत पक्षी कितने प्रकार के हैं?

उत्तर वितत पक्षी एक ही आकार-प्रकार के कहे गए हैं। वे मनुष्य क्षेत्र में नहीं होते हैं, बाहर के द्वीप-समुद्रों में होते हैं।

प्रश्न 125 पृथ्वीकायिक से खेचर तक कुल कितनी जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख हैं?

उत्तर (1) पृथ्वीकायिक की 12 लाख, (2) अप्कायिक की 7 लाख,
(3) तेजस्कायिक की 3 लाख, (4) वायुकायिक की 7 लाख,
(5) वनस्पतिकायिक की 28 लाख, (6) द्वींद्रिय की 7 लाख,
(7) त्रींद्रिय की 8 लाख, (8) चतुरिंद्रिय की 9 लाख,
(9) जलचर की 12.5 लाख, (10) चतुष्पद स्थलचर की 10 लाख,
(11) खेचर की 12 लाख। (12) उरपरिसर्प की 10 लाख तथा
(13) भुजपरिसर्प की 9 लाख

तिर्यंच में कुल 1 करोड़ 34.5 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख है।

ध्यातव्य बिंदु – इस शास्त्र में एकेंद्रिय की 57 लाख जाति-कुलकोटि-योनि प्रमुख की संख्या नहीं दी गई है। यह संख्या प्रवचन सारोद्धार भाग 2 द्वार 150 के अनुसार है। 5 स्थावर के वर्णन में सूक्ष्म जीव भी सम्मिलित हैं।

मनुष्य प्रज्ञापना – पद 1

प्रश्न 126 मनुष्य कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर मनुष्य दो प्रकार के होते हैं। यथा – सम्मूर्च्छिम और गर्भज।

आचरणीय बिंदु – भगवान महावीर और गौतम गणधर को अपने समक्ष साक्षात् वार्तालाप करते हुए की सुखद अनुभूति करते हुए एवं उनके जैसा समतावान मनुष्य बनने का चिंतन करते हुए भंते! गौतम! प्रश्नोत्तरों का अध्ययन करें।

प्रश्न 127 भंते! सम्मूर्च्छिम मनुष्य कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर गौतम! मनुष्य क्षेत्र के अंदर, 45 लाख योजन विस्तृत द्वीप-समुद्रों में, 15 कर्मभूमियों में, 30 अकर्मभूमियों एवं 56 अंतर्द्वीपों में गर्भज मनुष्यों के (1) उच्चार (मल), (2) मूत्र, (3) कफ, (4) नाक का मैल, (5) वमन, (6) पित्त, (7) मवाद, (8) रक्त, (9) शुक्र-वीर्य, (10) शुक्र पुद्गल परिशाट, (11) मृत शरीर में, (12) स्त्री-पुरुष के संयोग में, (13) ग्राम-नगर की मोरियों (नालियों) में और (14) गर्भज मनुष्यों की सभी अशुचि (अपवित्र) स्थानों में सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न होते हैं।

नोट – थूक अशुचि नहीं है, इसलिए इसमें सम्मूर्च्छिम मनुष्य उत्पन्न नहीं होते हैं। (आयुर्वेद में इसे अमृत कहा गया है)

साभार- श्रीमत् प्रज्ञापनासूत्र प्रश्नमाला

-क्रमशः

ज्ञान सार

श्रीमद् उत्तराध्ययनसूत्र

द्वादश अध्ययन : हरिएसिज्जं

15-16 अक्टूबर 2024 अंक से आगे....

संकलनकर्ता - सरिता बैंगानी, कोलकाता

पूर्व चित्रण

हरिकेशबल मुनि के पूर्वभव एवं वर्तमान जीवन का परिचय है। मुनि एक मास तप के पारने हेतु भिक्षार्थ गमन करते हुए रुद्रदेव पुरोहित द्वारा आयोजित यज्ञशाला में पहुँचे। वहाँ ब्राह्मणों ने मुनि के अत्यंत जीर्ण एवं मलिन उपधि एवं उपकरण देखकर उनका उपहास किया और उन्हें वहाँ से चले जाने को कहा। ***इसके आगे...***

तिंदुक यक्ष द्वारा मुनि के लिए भिक्षा याचना का कथन

जक्खे तहिं तिंदुय-रुक्खवासी, अणुकंपओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयणाइं उदाहरित्था॥8॥
समणो अहं संजओ बंभयारी, विरओ धण-पयण-परिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले, अण्णस्स अट्ठा इहमागओ मि॥9॥
वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य, अण्णं पभूयं भवयाण-मेयं।
जाणाहि मे जायणजीविणु ति, सेसावसेसं लहऊ तवस्सी॥10॥

भावार्थ - उस समय यज्ञ में बैठे हुए ब्राह्मणों ने मुनिराज का अपमान किया, तब हरिकेशबल मुनि पर अनुकंपा भाव रखने वाले तिंदुक वृक्ष में रहने वाले यक्ष ने स्वयं महामुनि के शरीर में प्रविष्ट होकर इस प्रकार कहा—

''मैं श्रमण हूँ। मैं संयमी सभी सावद्य व्यापार से निवृत्त हूँ। मैं ब्रह्मचारी हूँ। धन, भोजन पकाने और परिग्रह से निवृत्त हूँ। यह भिक्षा का काल है। मैं दूसरों (गृहस्थों) से आहार प्राप्त करने के लिए यहाँ आया हूँ।''

''क्योंकि आपके यहाँ बहुत-सा अन्न बाँटा जा रहा है, बहुत-सा खाया जा रहा है और भोगा जा रहा है। मैं याचना से प्राप्त भोजन से ही अपना जीवन निर्वाह करता हूँ, ऐसा आपको ज्ञात होगा। अतः बचे हुए शेष भोजन में से आप लोग कुछ मुझ तपस्वी को भी दें।''

तिंदुय-रुक्खवासी - तिंदुक वृक्षवासी।

अणुकंपओ - अनुकंपा - जब ब्राह्मणों ने मुनि का तिरस्कार किया, तब मुनि कुछ नहीं बोले, शांत रहे। तिंदुक

यक्ष मुनि की पवित्र धर्म क्रिया एवं तपस्या से प्रभावित होकर उनका सेवक बन गया था। मुनि जहाँ-जहाँ जाते, वह यक्ष अदृश्य रूप में उनके साथ रहता था। यहाँ यक्ष द्वारा मुनि के अनुकूल चेष्टा-प्रवृत्ति को अनुकंपा कहा है।

समणो – समण शब्द के तीन अर्थ हैं – **1. शमन –** कषायों को उपशांत करना।

2. समन – शत्रु-मित्र, लाभ-अलाभ एवं सुख-दुःख में सम रहना।

3. श्रमण – कर्मों को क्षय करने के लिए तप, ज्ञान आदि में श्रम करना।

धण-पयण-परिग्गहाओ – 1. यहाँ धन का अर्थ धन-धान्य, गाय आदि चतुष्पद पशुओं से है;

2. पयण का अर्थ भोजन पकाना, पकवाना, खरीदना, खरीदवाना, बेचना, बिकवाना या इस प्रकार करने वाले को भला जानना है।

3. परिग्रह का अर्थ द्रव्य आदि पर मूर्च्छा होना है।

अण्णं पभूयं – पर्याप्त आहार सामग्री है।

जायणजीविणु – भिक्षा जीवी हूँ अर्थात् याचना द्वारा जीवन यापन करने वाला।

सेसावसेसं – खा लेने के बाद बचा हुआ भोजन।

खज्जइ भुज्जई – खाद्य – खाजा आदि तले हुए पदार्थ, भोज्य – दाल-चावल आदि।

रूद्रदेव ब्राह्मण द्वारा भिक्षा देने का निषेध

अब मुनि के शरीर में प्रविष्ट यक्ष तथा यज्ञशाला के ब्राह्मण प्रमुख रूद्रदेव के साथ संवाद का वर्णन इस प्रकार है –

उवक्खडं भोयण माहणाणं, अत्तट्ठियं सिद्ध-मिहेगपक्खं।
न उ वयं एरिस-मण्णपाणं, दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि?॥11॥

भावार्थ – ''यहाँ जो भोजन बना हुआ है, वह केवल ब्राह्मणों के निमित्त से तैयार किया गया है। यह एकपक्षीय अर्थात् यज्ञ में निष्पन्न भोजन केवल ब्राह्मणों के अतिरिक्त किसी को नहीं दिया जा सकता। अतः अन्न-पान हम तुझे नहीं देंगे। व्यर्थ में तुम यहाँ पर क्यों खड़े हो?''

मिहेगपक्खं – एकपक्षीय – जो केवल एक वर्ण जाति के लिए अथवा ब्राह्मणों के लिए तैयार किया हुआ भोजन। यह दूसरों के उपभोग के लिए नहीं दिया जा सकता।

मण्णपाणं – अन्न-पानी – अन्न – भात-दाल आदि है; पान – द्राक्षा आदि फलों का रस या कोई पेय पदार्थ है।

इन दो गाथा का आशय है – रूद्रदेव ब्राह्मण ने मुनि को आहार देने से रोका क्योंकि मुनि चांडाल कुल से थे और ब्राह्मण जाति को शूद्र जाति में उत्पन्न मनुष्यों को बोध देने का, धर्म उपदेश देने का, व्रत ग्रहण करवाने का, यहाँ तक कि अपना झूठा भी देने का सर्वथा निषेध है।

तिंदुक यक्ष द्वारा मुनि रूपी पुण्य क्षेत्र को दान देने की प्रेरणा

इस प्रकार ब्राह्मणों द्वारा अपमानित वचनों को सुनकर यक्ष ने फिर से उनको एक बुद्धिमान कृषक के उदाहरण द्वारा लाभ-अलाभ को समझाने का प्रयास करते हुए कहा—

थलेसु बीयाइं ववंति कासगा, तहेव निन्नेसु य आससाए।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं, आराहए पुण्णमिणं खु खित्तं।।12।।

भावार्थ – ''जैसे कृषक अच्छे फल प्राप्ति की अभिलाषा से ऊँची भूमि में बीज बोते हैं, उसी प्रकार वे नीचे की भूमि में भी बीज बोते हैं। कृषक के समान श्रद्धा करके हे ब्राह्मण! तुम सब भी मुझे आहार आदि दान दो।''

आससाए – अभिलाषा से – फल प्राप्ति की आशा से कृषक बीजों की बुआई ऊँची एवं नीची दोनों भूमियों में करता है, क्योंकि

1. यदि अतिवृष्टि हुई तो नीचे के भूमि भाग में जल की मात्रा एकत्रित हो जाने से बीज सड़ जाते हैं। इससे कृषक को ऊँचे भूमि भाग में बोए हुए बीजों से लाभ प्राप्त होता है।
2. यदि अल्पवृष्टि हुई तो ऊँचे भूमि भाग में जल ठहरता नहीं, जल नीचे की ओर चला जाता है। इससे कृषक को नीचे की भूमि भाग में बोए हुए बीजों से लाभ प्राप्त होता है।

इस गाथा में यक्ष का आशय है – जैसे कृषक पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके इसी अभिप्राय से पुरुषार्थ करता है। यदि ब्राह्मण अपनी आत्मा को निम्न भूमि के समान मानते हो तो मुनि को ऊँची भूमि मानकर दान देना उचित है। क्योंकि मुनि का शरीर भी पुण्य रूप क्षेत्र है। यहाँ कोई भी दान खाली नहीं जाएगा। अतः तुम पूर्ण लाभ से वंचित मत रहो और ब्राह्मणों के साथ-साथ मुनि को भी श्रद्धा से आहार दान दो।

ब्रह्मदेव ब्राह्मण द्वारा प्रत्युत्तर

इसके पश्चात् मुनि के इस प्रकार वचन को सुनकर ब्राह्मणों ने मुनि को भिक्षा नहीं देने के अभिप्राय से कहा—

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए, जहिं पकिण्णा विरुहंति पुण्णा।
जे माहणा जाइ विज्जोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं।।13।।

भावार्थ – ''हे मुनि! इस लोक में बोए गए सारे के सारे बीज जहाँ उग जाते हैं, वे क्षेत्र अर्थात् दान के पात्र हमें ज्ञात हैं। जो जाति एवं विद्याओं से संपन्न ब्राह्मण होते हैं। वे क्षेत्र निश्चय ही उत्तम क्षेत्र अर्थात् पुण्य क्षेत्र है।''

जाइ विज्जोववेया – जाति और वेद विद्या से युक्त।

इस गाथा का आशय है – ब्राह्मणों द्वारा पुण्य उपार्जन की मान्यता को जाति की प्रधानता से व्यक्त किया है, जैसे–

1. जो ब्राह्मण जाति के नहीं हैं उनको दिया गया दान समफला वाला होता है।
2. जो जन्म से ब्राह्मण है, किंतु ब्राह्मण के लक्षणों से रहित है उसको दिया गया दान दोगुना फल वाला होता है।
3. जो जन्म से ब्राह्मण है और 14 प्रकार की वेद विधाओं में निपूर्ण है, ऐसे आचार्य या साधु को दिया गया दान अनंत गुणा फल वाला होता है – (i) भिक्षा, (ii) कल्प, (iii) व्याकरण, (iv) छंद, (v) ज्योतिष शास्त्र, (vi) निरुक्त, (vii) ऋग्वेद, (viii) सामवेद, (ix) यजुर्वेद, (x) अथर्ववेद, (xi) मीमांसा (गंभीर मनन), (xii) आन्वीक्षिकी, (xiii) धर्मशास्त्र, (xiv) पुराण।
4. चांडाल कुल वालों को दान देना सर्वथा निषिद्ध है।

– क्रमशः

जयपुर से अजमेर

संस्कार सौरभ

धर्ममूर्ति आनंद कुमारी

15-16 अक्टूबर 2024 अंक से आगे...

(आप सभी के समक्ष 'धर्ममूर्ति आनंद कुमारी' धारावाहिक के रूप में प्रकाशित हो रहा है जिसमें आचार्य श्री हुक्मीचंद जी म.सा. की प्रथम शिष्या महासती श्री रंगू जी म.सा. की पट्टधर महासती श्री आनंद कँवर जी म.सा. का प्रेरक जीवन-चारित्र प्रतिमाह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।)

जयपुर का चातुर्मास समाप्त होने के बाद साध्वीवर्याओं को पुनः अजमेर की ओर प्रस्थान करना पड़ा। अजमेर में आपश्री के संप्रदाय की वयोवृद्धा महासती श्री केशर कुमारी जी कमर दर्द के कारण कई महीनों से विराजित थीं। आपका जिस समय जयपुर चातुर्मास था उस समय यह खबर पहुँची कि महासतीजी के कमर में दर्द ज्यादा है, अतः सेवा में सतियों की जरूरत है।

साधु जीवन में सेवा का काम पहले है और दूसरे काम पीछे। सेवा की अगर कोई दूसरी व्यवस्था न हो तो साधु-साध्वी को चातुर्मास में ही विहार करके पहुँचना चाहिए, ऐसी शास्त्रीय आज्ञा है। अगर कोई तपस्या करता हो तो अपनी तपस्या छोड़कर भी सेवा का कार्य पहले सँभाले। भगवान महावीर की संघ व्यवस्था बालू की नींव पर नहीं खड़ी है। उसकी नींव मजबूत है। यही कारण है कि दूसरे धर्मों के संघों में जहाँ विकृतियाँ प्रविष्ट हो गई हैं वहाँ जैन धर्म की संघ व्यवस्था अब भी काफी सुदृढ़ है।

साथ में आपकी वयोवृद्धा बड़ी आनंद कुमारी जी म.सा. भी थे, फिर भी वे शीघ्रातिशीघ्र अजमेर की ओर अग्रसर हुईं। मार्ग की कठिनाइयों के बारे में क्या लिखूँ और क्या न लिखूँ! कभी आहार मिलता तो पानी नहीं मिलता, कभी पानी मिलता तो आहार नहीं मिलता और कभी-कभी दोनों ही नहीं मिलते। अज्ञात जनता, वह भी दरिद्रता के भार से पिसी हुई। गरीबी ने तो उनकी कमर ही तोड़ दी थी। गाँव की जनता में मानवता आती कहाँ से? खाने की फाका-कशी हो, वहाँ दान देने की भावना कहाँ से उठती? तो भी धैर्यशालिनी महासती श्री आनंद कुमारी जी म.सा. अपनी पूजनीया वयोवृद्धा महासतीजी की सेवा में सस्नेह जुटी रहतीं। उनके मन पर इन कठिनाइयों से कोई ग्लानि नहीं हुई। वे तो सेवा के पथ पर यात्रा कर रही थीं।

अब तो अजमेर दूर से दिखाई दे रहा था। पैर अब झटपट उठने लगे। अजमेर में प्रवेश करते समय स्वागतार्थ भक्त सामने आए। साध्वी श्री केशर कुमारी जी म.सा. का संयमी जीवन पूर्ण विशुद्ध था। उनका आचार-विचार भी प्रशस्त था। इसलिए सब लोगों ने आपको स्थिरवास

के लिए आग्रह करते हुए कहा कि महासतीजी आपका शरीर दिनो-दिन क्षीण होता जा रहा है। अधिक चलने में भी आप असमर्थ हैं। वृद्धावस्था ने आप पर पूर्ण अधिकार जमा लिया है। अतः हमारी प्रार्थना मानकर आप यहाँ पर ही स्थिरवास करना स्वीकार करें।

साध्वी श्री केशर कुमारी जी म.सा. शरीर से वृद्ध थीं, पर मन का उत्साह कम नहीं हुआ था। आप अपूर्व बुद्धिमती भी थीं। समयज्ञता की भी कमी नहीं थी। आपश्री ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखकर कहा—''ठीक है, आपकी विनती को ध्यान में रखा जाएगा, पर अभी स्थिरवास की स्वीकृति नहीं दे सकती। जब तक अशक्ति और अवसर है तब तक जितना ठहरा जाएगा, ठहरेंगी।'' अजमेर संघ के लिए इतना-सा वचन मिलना भी बहुत बड़ी सफलता थी।

विक्रम संवत् 1959 से 1961 तक के चातुर्मास का सौभाग्य अजमेर संघ को मिला। इतने लंबे काल में साध्वी श्री केशर कुमारी जी म.सा. की शारीरिक दुर्बलता भी घटने के बजाय बढ़ गई और दूसरी तरफ प्रेम की सबलता बढ़ गई। संघ के लोगों का प्रेमाग्रह कम नहीं था। साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. जैसी सेवाभाविनी और अध्ययनशीला साध्वीजी के सहयोग से संघ का मनमयूर नाच उठा। अधिक परिचय मनुष्य के व्यक्तित्व को नीरस बना देता है, पर आनंद कुमारी जी म.सा. का व्यक्तित्व अधिकाधिक सरस होता चला गया। लोगों का धर्म-प्रेम भी पराकाष्ठा पर पहुँच गया। संघ की प्रेरणा काफी थी इसलिए महासती श्री केशर कुमारी जी म.सा. की इच्छा एक बार तो ऐसी हो गई थी कि यहीं पर क्यों न निवास किया जाए! लोगों का आग्रह भी है और उपकार भी काफी होता है। हमें तो कहीं भी रहकर संयमी जीवन बिताना है, फिर यहाँ क्या बुरा है?

संवत् 1980 व 1981 के चातुर्मास तक महासतीजी म.सा. के दर्शनों का सौभाग्य अजमेर संघ को मिलता रहा। चातुर्मास काल में भिक्षाचरी आदि के लिए छोटी सतियाँ जातीं। वृद्ध सतियों की सेवा का सारा कार्य साध्वी आनंद कुमारी जी ने अपने हाथों में ले रखा था। सतियाँ भिक्षाचरी के लिए जिस मार्ग से होकर जाती, वहाँ बीच में मांस बेचने वालों की दुकानें पड़ती थीं। उन लोगों की दुकानों का दृश्य बड़ा वीभत्स होता है। कहीं मांस खुले बर्तन में पड़ा है तो किसी जानवर की टाँग आदि ऊँची लटकाई हुई है। एक अहिंसक का दयापूर्ण दिल कैसे इस वीभत्स दृश्य को अपनी आँखों देख सकता था? ऐसा दृश्य देखकर रोमांच खड़ा हो जाता था। मांसाहारी लोगों के इस घृणित कृत्य से साध्वी श्री आनंद कुमारी जी एवं अन्य साध्वियों को बड़ी नफरत होती। कभी-कभी आहार करने बैठतीं तो वह आहार भी अच्छा नहीं लगता। छोटी साध्वियाँ प्रतिदिन की इस घटना को देखकर हैरान रहने लगीं। भिक्षाचरी के लिए तो कदाचित् दूसरा कोई मार्ग ढूँढ़ा जा सकता था, पर शौच जाने के लिए तो इंद्रकोट की तरफ होकर ही जाना पड़ता था। वहाँ भी यही हाल था। यही निर्दयता के दृश्य थे। सभी छोटी सतियाँ व्यग्र हो उठी थीं। बड़ी साध्वीजी से कहने की किसी की हिम्मत नहीं होती। एक दिन सभी ने मिलकर विचार किया कि बड़ी महासतीजी से कह देना चाहिए। ऐसा कितने दिन तक चलेगा?

एक दिन साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. एवं अन्य साध्वीवर्याओं ने साध्वी श्री केशर कुमारी जी म.सा. से अर्ज की—''महाराज! अजमेर का क्षेत्र और तो सब तरह से ठीक है। यहाँ शौच जाने के लिए भी काफी जगह है। गोचरी के लिए घर भी काफी हैं। लोगों की भाव-भक्ति भी प्रचुर मात्रा में है और उनकी आपके लिए स्थिरवास विराजने की प्रार्थना भी है, परंतु यह सब होने पर भी यहाँ का बाह्य वातावरण बड़ा खराब है। प्रतिदिन शौच व गोचरी के लिए हमें मांस बेचने वाले लोगों की दुकानों के पास से गुजरना पड़ता है। हमसे उन दुकानों के दृश्य देखे नहीं जाते। आपकी सेवा में हम किसी प्रकार की कमी नहीं देखना चाहतीं और न ही आपके चित्त को दुखाना चाहतीं, किंतु उन दृश्यों के आगे तो हमारी भी बुद्धि काम नहीं करती। आप चाहें तो हम आपको जैसे-तैसे कहीं भी दूसरी जगह ले जा सकती हैं। आपको किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगी, पर हमारा दिल यहाँ रहने को तैयार नहीं है।''

महासती श्री केशर कुमारी जी म.सा. कुछ देर तक विचार में डूब गईं, फिर गंभीरता से कहा—''हाँ, तुम्हारी बात अवश्य ही विचारणीय है। मैं झटपट विचार करके किसी निर्णय पर आ जाऊँगी। तुम घबराओ मत। जैसी तुम्हारी रुचि होगी वैसा ही किया जाएगा।''

चातुर्मास समाप्त हो चुका था। महासतीजी ने बुद्धिमानी से सोचकर विहार करने का इरादा प्रकट किया। श्रावकजनों को जब यह बात मालूम पड़ी तो उन्होंने ठहरने के लिए अत्यंत आग्रह किया। संघ का आग्रह चरम सीमा पर था। इधर साध्वी श्री आनंद कुमारी जी एवं अन्य साध्वियों के चरित्र-बल का इतना महान प्रभाव पड़ चुका था कि कोई यह नहीं चाहता था कि महाराज यहाँ से विहार करें। क्या बुढ़ी, क्या बालिका, क्या युवतियाँ, सबके दिल चाहते थे कि अभी महासतीजी म.सा. यहीं विराजें, लेकिन बड़ी महासतीजी ने उनसे फरमाया—''मैं जानती हूँ कि आपका प्रेम काफी है। मेरे स्थिरवास के लिए आपका पूर्ण आग्रह भी है, पर मैं उक्त कारणों से यहाँ नहीं रह सकती। मैंने इन सतियों के मुँह से जब सुना मुझे तो उसी समय ग्लानि हो गई, लेकिन इन साध्वीवर्याओं को तो प्रतिदिन ही उक्त रास्ते से होकर निकलना पड़ता है। मैं तो वृद्धा हूँ, एक जगह पड़ी रह सकती हूँ, पर भोजन, पानी के लिए तो इन्हीं छोटी सतियों को चक्कर लगाना पड़ता है। आहार लाने पर भी छोटी आनंद कुमारी जी तो आहार भी बड़ी कठिनता से करतीं। यह एक दिन का काम तो नहीं है।''

भाइयों और बहनों ने फिर भी किसी तरह रहने का आग्रह चालू रखा। मगर साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने महासती श्री केशर कुमारी जी म.सा. को वहाँ से विहार करवा दिया। लोग मुरझाए दिलों से कहने लगे कि हमारा दुर्भाग्य है जो हमारे यहाँ आया हुआ धर्म जहाज वापिस जा रहा है। हम मंदभागी हैं।

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी म.सा. ने उनको आश्वासन देते हुए कहा—''नहीं, ऐसा विचार मत करो। हम जितने दिन यहाँ रही हैं, आप लोगों ने अच्छी सेवा की है। आपका धर्म-प्रेम प्रशंसनीय है। अभी अवसर ऐसा ही है। नहीं तो हमें यहाँ ठहरने में कोई दिक्कत नहीं थी।''

साध्वी श्री आनंद कुमारी जी का यह महान साहस भुलाया नहीं जा सकता। आपके बिना विहार का यह निर्णय होना कठिन था। आपका यह कदम बड़ा स्तुत्य था।

आपकी दूरदर्शिता का इस घटना से पता चलता है। आपने वृद्ध महासतीजी को बड़े साहस और स्फूर्ति के साथ अजमेर से ब्यावर की ओर विहार करवाया।

साभार- धर्ममूर्ति आनंदकुमारी

-क्रमशः

भक्ति रस

मोह

- ललित कटारिया, सुपल

मोह बड़ा ही मीठा लड्डू, मोह बड़ा मनमोहक।
समझ सही ना आने दे, मोह बड़ा ही रोचक।।
मोह से ही मस्त नजारे, मोह से ही सब रिश्ते प्यारे।
दिख रहा संसार जो भी, सब ही है मोह सहारे।।
माया सब मोह की जग में, मोह ही बसा है रग-रग में।
चतुर्गति घूमे जागकर भी, आसक्त है जीव मोह में।।
सुख-दुःख जो भी जीव को, कारण एक है मोह।
वही सब प्यारा लगता, चाहता नहीं विछोह।।
काल अनादि बीते मोह सागर में, कुछ ठौर पड़ी न भाया।
सद्गुरु किस्मत से पाएँ, भोले समझ मोह की माया।।
मोह से ही निज को भूले, जो था अपना खास।
पर मैं उलझे घूमे खूब, अब पर से ले अवकाश।।
सद्गुरु के चरणों में बैठे, समझे भेद जड़ चेतन।
आँख खुल गई भीतर की, निज में शुरू हुआ रमण।।
मोह हटा जैसे जीव का, दुनिया दिखती कुछ और।
संसार में अब रस कहाँ, हो गई सुनहरी भोर।।
मस्ती भरा जीवन हो गया, आनंद आने लगा भीतर।
एक मोह के जाने से, भव-भव गया सुधर।।
निज की प्राप्ति होते ही, जीव नहीं रुकता संसार।
निज आनंद में मगन हो, जाता भवसागर से पार।।

संस्कार सौरभ

पर-पीड़ा की हो अनुभूति

- गौतम पारख, राजनांदगाँव

अनंत पुण्यवानी के उदय से किसी धार्मिक कार्यक्रम अथवा समारोह में सम्मिलित होने का सौभाग्य मिलता है। प्रायः ये कार्यक्रम जीवन परिवर्तनकारी सिद्ध होते हैं। इसी क्रम में वैराग्यवती बहन करुणा जी गुलेच्छा के अभिनंदन समारोह में उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उच्च शिक्षा प्राप्त सी.ए. के अंतिम पड़ाव में पहुँचने वाली, एम.कॉम. की परीक्षा उत्तीर्ण कर यौवन की दहलीज पर उसके वैराग्य की विवेचना सुन मैं हतप्रभ रह गया। करुणा जीवन की संवेदनशीलता का पैमाना है। यह हृदय की कोमलता का पर्यायवाची भी है। करुणा भावना दूसरों के दुःख, पीड़ा, मजबूरी, अंतराय का बोध कराती है। प्रत्येक आत्मा में समाहित परमात्मा के बोध का दूसरा नाम ही करुणा है। करुणा से जब हृदय भर जाता है तो लोगों की करुण कहानी सुनकर, महसूस कर दिल रो उठता है। करुण कहानी सुनाने, सुनने का विषय नहीं है बल्कि व्यवधान, अंतराय, भाग्य के रूठने, परिस्थितिवश घुटने टेकने, चौखट पर आई सफलता के मुँह मोड़कर वापिस जाने के दौर की कठिनतम अनुभवजन्य कहानी होती है। दूसरी ओर प्राणिमात्र की वेदना का अप्रत्यक्ष अनुभव करना ही तो हमारी संवेदना है, करुणा है, दया है, हृदय की झंकार है। करुणा शब्द जब साँसों की धड़कन बन जाता है तो व्यक्ति सभी जीवों को अभयदान देने के पथ का स्थायी राही बन जाता है। इसे ही जैन परंपरा में दीक्षा कहते हैं।

करुणा शब्द का संधि विच्छेद किया तो भाव रूप परिणाम आया कि करू-णा अर्थात् करूँ नहीं। ऐसा कोई कार्य नहीं करूँ जिससे किसी भी प्राणी को मन, वचन, काया से पीड़ा पहुँचे। मन से दूसरों के प्रति अशुभ एवं आक्रोशित विचार के साथ छल-कपट करना भी तो हमारी संवेदनशीलता को समाप्त करता है। वचन से कर्कश, मर्मकारी, व्यंग्यात्मक, मायाजनित शब्दों का प्रयोग भी हमारी करुणा पर पर्दा डालते हैं। तन से किया गया प्रहार हमें परमात्मा से ही दूर कर देता है। यदि आत्मा में करुणा (अनुकम्पा) नहीं हो तो सम्यक्त्व में प्रवेश हो ही नहीं सकता। ऐसी स्थिति में धर्मों के प्रादुर्भाव की कल्पना करना केवल और केवल धोखा है।

महाराज श्रेणिक और महारानी धारिणी के पुत्र का नाम था मेघ कुमार। मेघ कुमार जब यौवन की दहलीज पर था तो महाराज श्रेणिक ने आठ श्रेष्ठ राजकन्याओं के साथ उसका विवाह करवा दिया। मेघ कुमार उन कन्याओं के साथ मनुष्योचित काम-भोग भोगने लगा। समय ने करवट बदली। ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए भगवान महावीर राजगृह नगरी पहुँचे। मेघकुमार ने भगवान महावीर का उपदेश सुना तो उसे संसार की असारता का बोध हो गया। वे सोचने लगे कि जिस तरह दर्पण में मुख दिखता है किन्तु दर्पण में मुख नहीं होता, वैसे ही संसार में सुख दिखता है लेकिन सुख होता नहीं। माता-पिता की आज्ञा लेकर वे भगवान महावीर के श्रीचरणों में वे प्रवृजित हो गए। दीक्षा पर्याय में छोटे होने

के कारण रात्रि में उनका शय्या आखिर में लगी। रात्रि में सन्त अनेक कारणों से आते-जाते रहे। मेघकुमार को संतों के पाँवों की ठोकरें लगती रही। रात्रि में यह क्रम चलता रहा। मेघकुमार सोचने लगे कि रात्रि में ठोकरें ही खानी हैं तो अच्छा है कि मैं संन्यास छोड़कर अपने राजसी वैभव में वापस लौट जाऊं। सुबह भगवान महावीर के दर्शनों के लिए मुनि मेघश्री चरणों में पहुँचे। भगवान महावीर तो केवलज्ञानी थे। वे मेघ कुमार के मन की बात जान गए। उन्होंने मेघ कुमार से कहा कि पैरों की थोड़ी-सी ठोकरों से तुमने मुनि जीवन के त्याग का मन बना लिया। पिछले जन्म हाथी के भव में तुमने जो करुणा का जीवन जीया है, उसके फलस्वरूप ही राजा श्रेणिक के आँगन में तुम्हारा जन्म हुआ है। भगवान महावीर ने फरमाया कि इस भव से पूर्व के तीसरे भव में तुम वैताढ्य पर्वत की तलहटी में हाथी थे। तुम्हारा नाम सुमेरूप्रभ था। वहाँ तुम हजार हाथियों के स्वामी थे। एक बार गर्मी के समय जंगल में आग लगी। तुम आकुल-व्याकुल होकर भागते हुए कीचड़ में जाकर फँस गए। वहाँ पर तुम्हारे एक दुश्मन हाथी ने तुमको मार डाला। फिर तुमने गंगा नदी के किनारे विंध्याचल के समीप पुनः हाथी के रूप में जन्म लिया। वहाँ पर तुम सात सौ हाथियों के परिवार के नायक थे। उन वनचरों ने तुम्हारा नाम मेरु रखा था। हे मेघ! तुम्हें उसी भव में वन के दावानल को देखकर जातिस्मरण ज्ञान हो गया और तुमने अपने पूर्वभव की स्थिति को जानकर दावानल से बचाने के लिए एक योजन (चार कोस) जितनी जगह से घास-फूस आदि को साफ करके मंडल बनवाया था। मेघ! उस समय फिर जंगल में आग लगी। मृग, पशु, पक्षी, भाग-भागकर उसी मंडल में आ रहे थे। मेघ! याद करो, उस समय तुम भी उसी मंडल में खड़े थे। सिंह, बाघ, खरगोश आदि अनेक पक्षियों से मंडल भर चुका था। अचानक तुम्हारे पैर में खुजलाहट होने पर तुमने खुजाने के लिए अपना एक पैर ऊपर उठाया और तभी एक शशक (खरगोश) उस खाली स्थान पर आकर बैठ गया। तुम जैसे ही पैर नीचे रखने हेतु तत्पर हुए तो तुम्हें अहसास हुआ कि पैर के नीचे कोई जीव है, जो तुम्हारे पैर नीचे रखने से दबकर मर जाएगा। तुम्हारे मन में अनुकंपा जाग उठी। तुम तीन पैरों पर ही खड़े रहे ताकि नीचे बैठा खरगोश मर न जाए। जब आग बुझ गई तो सभी प्राणी मंडप से बाहर आ गए और तुमने जैसे ही पैर नीचे रखा, तुम धड़ाम से नीचे गिरे और तुम्हारा प्राणांत हो गया। एक खरगोश की प्राण रक्षा के लिए तुमने ढाई दिनों तक एक पैर उठाए रखा। यही तो तुम्हारी करुणा की कहानी है। मुनिराजों के सामान्य पैरों की क्षणिक ठोकरों से विचलित होकर तुम में मुनि जीवन छोड़ने के भाव आ गए। मेघ कुमार अपने तीनों भवों का वर्णन सुन सचेत हो गए और भावों में परिवर्तन आ गया कि मेरी करुणा क्यों निष्प्राण हो रही थी? धन्य हैं ऐसे महापुरुष जिन्होंने प्रभु के एक उद्बोधन से मुक्ति पा ली।

प्रभु से प्रार्थना है कि हमें निष्ठुर, निर्दयी बनने से सदा बचाते रहना। पर-पीड़ा की अनुभूति ही हमारे जीवन की पहचान बने, ऐसी सोच व समझ की शक्ति देना। अनुकंपा ही अहिंसा के पंख हैं। करुणा ही हमारी पहचान है। यही सद्ज्ञान हमें सदा देते रहना प्रभु।

साधु बनने के बाद भी जरूरी नहीं कि विचारों में उतार-चढ़ाव न आएँ। एक भवतारी तो क्या, चरम शरीरी के मन में भी उतार-चढ़ाव आ जाते हैं। रथनेमि भी राजमती से कहते हैं कि मनुष्य जन्म दुर्लभ है। योगी भी मनुष्य जन्म को दुर्लभ कहता है और भोगी भी। रथनेमि ने कहा- भुक्तभोगी बनकर फिर संयम ले लेंगे। वह चरम शरीरी आत्मा उसी भव में मोक्ष जाने वाली थी, पर उतार-चढ़ाव आ गया।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

महत्तम-समीक्षण भाव

- पदमचंद गांधी, जयपुर

हर जीवित प्राणी भावों से युक्त होता है, जिससे वह आत्मरक्षा कर सके। मनुष्य की तरह पशुओं में भी भाव होते हैं। उनमें भी क्रोध, भय, प्रेम पाया जाता है, लेकिन मनुष्य पर तीन प्रकार के शरीर का आवरण है। स्थूल शरीर अस्थि, चर्म, मज्जा से बना है। दूसरा सूक्ष्म शरीर जो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार से बना है तथा भावनात्मक शरीर जो संवेदनाओं से युक्त है। शरीर में जब मन, बुद्धि, अहंकार का समन्वय होता है तब भाव उत्पन्न होते हैं। ये भाव संवेदनाएँ बनते हैं, विचार बनते हैं, क्रिया बनते हैं। व्यक्ति के शरीर में बहुत से भाव एक साथ होते हैं और सभी एक-दूसरे के विपरीत स्थिति में होते हैं क्योंकि घृणा के साथ प्रेम भी है, साहस के साथ कायरता भी है, शोक के साथ हास्य भी है, क्रोध के साथ समता एवं शान्ति भी है। इस स्थिति में शुभ एवं अशुभ भाव, शुद्ध या अशुद्ध भाव या स्वभाव-परभाव कौनसे हैं? इनमें अन्तर करना जरूरी है। यही समीक्षण भाव है। इसके लिए जरूरी है हेय अथवा उपादेय की समीक्षा या अनुप्रेक्षा करना।

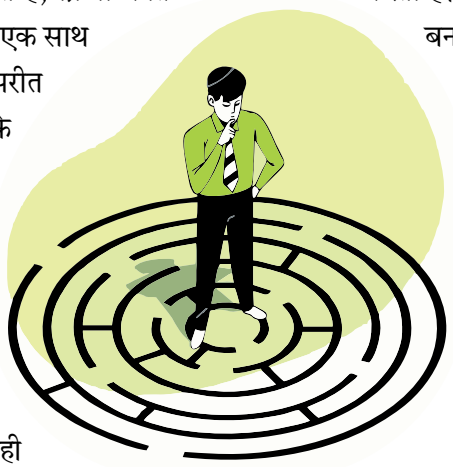

मनुष्य में स्व-कल्याण की अनंत संभावनाएँ छिपी हुई हैं। उसके महत्तम भाव को उजागर करने के लिए आचारांग सूत्र भावों का विज्ञान बताते हुए क्रांतिकारी घोषणा करता है - **'जो बंधनों के स्थान हैं वे मुक्ति के स्थान बन सकते हैं, जो मुक्ति के स्थान हैं वे बंधनों के स्थान बन सकते हैं।'**

मनुष्य अपने शुभभावों से कर्मबन्ध के स्थान को कर्मनिर्जरा का स्थान बना लेता है तथा अशुभ भावों से निर्जरा के स्थान को बन्ध का स्थान बना लेता है। अतः जीवन में भावों का बहुत महत्व है। दान, शील, तप, भाव मोक्ष के मार्ग हैं। इनमें से भाव को सबसे सरल एवं उत्कृष्ट माना गया है। भावों से ही बन्ध और भावों से ही मुक्ति संभव है। सूत्रकार कहते हैं, शुभ भावों से भरा चित्त साधना के लिए वह काम करता है जो काम दूध में चीनी करती है। साधना शक्तिप्रद है, पर उसे रसप्रद बनाने का काम शुभ भाव ही करते हैं क्योंकि भाव बिना भगवान नहीं मिलते। यदि अंतःकरण में अहोभाव नहीं है, आदरभाव नहीं है, उपकार का भाव नहीं है तो परिणाम विकारयुक्त ही होंगे। यदि शुभ भाव हैं, कृतज्ञता के भाव हैं, श्रेयकारी मंगलमैत्री के भाव हैं तो परिणाम भी शुभ आएँगे।

आचार्य श्री देवसेन ने स्पष्ट किया कि जीव अपने भावों से परिपूर्ण है। ये भाव ही उसके परिणाम हैं। शुभ और अशुभ भाव जीव के अपने अधीन है। जीव किसी को मारने रूप अशुभ तथा उसकी रक्षा हेतु शुभ भाव कर सकता है। दोनों भाव उसके अधीन हैं। आत्मा का कल्याण जीवों की रक्षा करने में है। स्वयंभूरमण सागर में वास करने वाला तंदुलमत्स हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इन पाँचों पापों में से कोई पाप नहीं करता, लेकिन जीवों की हिंसा करने का भाव

रखता है, जिससे वह सातवीं नारकी का बन्ध कर लेता है। अतः संसारी जीवों को नरक के दुःखों से बचने के लिए पाप रूपी अशुभ भावों का त्याग ही आत्मकल्याणकारी है।

मोक्ष की साधना शुभ भावों से ही बन्धी हुई है क्योंकि समय, स्थान, संयोग, निमित्त, अच्छे या बुरे, शुभ या अशुभ हो सकते हैं। ये अपने आप में पूर्ण नहीं हैं, लेकिन यदि शुभभावों के पावर हाऊस से यदि जुड़े हुए हैं तो कर्मों की निर्जरा होती है। भावों में परिवर्तन तभी होता है जब दृष्टि दूसरों से हटकर स्वयं पर थमती है, दृष्टि से हटकर द्रष्टा की ओर जाती है, पर से स्वभाव में आती है। नमिराज दाह पीड़ा भोग रहे थे। हाथ में चूडियाँ पहने रानियाँ चन्दन घिस रही थी। उन चूड़ियों की खनखनाहट से राजा की दाह पीड़ा और तेज हो गई। खनखनाहट को रोकने के लिए सभी रानियों ने एक-एक चूड़ी पहने चन्दन घिसना जारी रखा। राजा को बोध मिल गया और उनका द्रष्टा भाव जाग्रत हुआ। जहाँ अनेक हैं वहाँ संघर्ष है। जहाँ एक है वहाँ शान्ति है। इस प्रकार राजा ने एकत्व भाव की साधना कर अपना कल्याण किया।

जो भाव भीतर से निकलते हैं, जिनको आप बाहर से नहीं खींचते वे शुद्ध हैं, शुभ हैं और वे भाव जो आप में बाहरी तूफानी लहरों की तरह पैदा होते हैं, वे अशुभ भाव हैं। आत्मभाव में रमण करने के लिए भाव शुद्धि जरूरी है। शुभ भावों का स्वरूप सकारात्मक तथा अशुभ भावों का स्वरूप नकारात्मक होता है। शुभ भावों से साधक अपना परिणाम बिगड़ने नहीं देता। भावों की समीक्षण स्थिति से उन्हें समभाव में रखकर गंतव्य तक पहुँच जाता है। समता भाव देखिए गजसुकुमाल का। सोमिल द्वारा उनके सिर पर तपते अंगारे रख दिए। गजसुकुमाल को असह्य वेदना हुई, फिर भी उफ तक नहीं किया। अपने भावों के परिणामों को बिगड़ने नहीं दिया और सोमिल को भी सहयोगी माना। सुबह रागी, दोपहर वैरागी और शाम को वीतरागी बनकर मोक्ष को प्राप्त कर लिया। अतः स्पष्ट है कि शुभभाव चित्त की अवस्था है और अशुभ भाव चित्त की विकृति है, विकार है। जैसे किसी ने आपको गाली दी, उससे आपको क्रोध आ गया। यह अशुभ भाव है क्योंकि यह स्वजनित नहीं, परजनित है। अगर कोई आपका आदर करता है तो आप खिल जाते हैं, प्रसन्न होते हैं। यह भाव भी अशुभ ही है क्योंकि यह भाव भी आप में किसी दूसरे ने उत्पन्न किये हैं। लेकिन जो गाली दे या प्रशंसा करे उससे आपकी अवस्था में स्थिरता रहती है, वह शुभभाव है, स्वभाव है। बाहर से आई हुई ऊर्जा अशुभ है, अशुद्ध है, राग-द्वेषमय है क्योंकि वह प्रतिक्रिया है अर्थात् उस भाव पर आपका नियन्त्रण नहीं है।

शुभभाव आपके विचार, आचार एवं व्यवहार को शुद्ध एवं पवित्र रखता है। सत्संग, स्वाध्याय, जिनवाणी श्रवण, गुणीजनों की संगत, आध्यात्मिक साधना, सुगुरु शरण, आत्मसात तथा आत्म-समीक्षण आदि के निमित्त से मन के उपद्रवों को, विकारों को, प्रतिकूलताओं को शान्त किया जा सकता है, अनुकूलता में बदला जा सकता है, उन पर नियन्त्रण किया जा सकता है। यही समीक्षण भाव की साधना है। प्रभु महावीर की नेश्राय में प्रसन्नचन्द्र राजर्षि जब ध्यान में थे तब राजा श्रेणिक ने प्रश्न किया—प्रभो! यदि ये योगी अभी काल करे तो कहाँ जाएँगे? प्रभु ने कहा—सातवीं नारकी में। श्रेणिक को आश्चर्य हुआ। इतनी साधना और सातवीं नरक। थोड़ी देर बाद फिर पूछा—यदि अब ये काल करें तो कहाँ जाएँगे? प्रभु बोले—देवलोक में। अंतर्मुहूर्त्त बाद ही आकाश में देवदुन्दुभि बजी, अहो ज्ञानम्, अहो ज्ञानम् का उद्घोष हुआ। उन्हें केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त हो गया। श्रेणिक ने पूछा—यह परिवर्तन कैसे हो गया? तब प्रभु ने कहा—इस परिवर्तन के लिए बाहरी परिवर्तन जरूरी नहीं है। यह परिवर्तन समीक्षण दृष्टिपूर्वक अंतरंग के ज्ञान से जाना जा सकता है। इसका कारण बताते हुए प्रभु ने स्पष्ट किया कि सुमुख ने योगी की प्रशंसा की तथा दुर्मुख ने उन्हें कायर कहा। क्योंकि इन्होंने अपने अबोध पुत्र को 500 मंत्रियों के भरोसे छोड़कर दीक्षा ले ली और

उन मंत्रियों ने षड्यंत्र रचकर बच्चे को मारने की योजना बनाकर राज्य हड़पना चाहा। अतः ये कायर है। ऐसे भावों के प्रभाव से मुनि के मन में क्रिया-प्रतिक्रिया हुई। स्वयं को भूल गए कि **'खंतो दंतो निरारंभो पव्वइओ अणगारियं'** मैं शांत, दांत, निरारंभी अणगार प्रव्रर्जित हो चुका हूँ। वे मूल स्मृति से विस्मृत हो गए। मन में 500 मंत्रियों को मारने का षड्यंत्र रच गया और घमासान मचा। तीरों से 499 को मार दिया। एक मंत्री शेष बचा। तीर खत्म हो गए तब सोचा कि मुकुट से मार दूंगा। ये भाव सातवीं नरक में ले जाने के थे। लेकिन जैसे ही हाथ मुण्डे हुए सिर पर गया तो भान हुआ कि मैं तो संयमी साधु हूँ, अणगार हूँ। मेरा कैसा पुत्र, कैसा राज्य! यह शरीर ही मेरा नहीं। अपने कृत्य पर भारी पश्चात्ताप किया कि मैंने मानसिक हिंसा कर डाली। मैं ऐसे पाप से अपनी आत्मा की निन्दामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि – निंदा करता हूँ, गर्हा करता हूँ और ऐसे दुष्कृत्य को वोसिराता हूँ। ऐसे भाव अशुभ से हटकर शुभ की ओर मुड़ने लगे और विचारों की तीव्रता के साथ समीक्षण होने लगा। समीक्षणता में अशुभ विचार हटकर शुभ विचारों की उत्पत्ति होने लगी। ऐसी स्थिति में कर्मबन्ध हो उच्च देवलोक की स्थिति बनी। उनकी भावना शुभ, शुभतर, शुभतम होती चली। वे गुणस्थानों पर आरोहण करने लगे और सातवें गुणस्थान से बारहवां गुणस्थान पार करते हुए घनघाती कर्मों को क्षयकर केवलज्ञान-केवलदर्शन प्राप्त कर तेरहवें गुणस्थान में पहुँच गए। इस प्रकार स्पष्ट है कि अंतरंग के समीक्षण द्वारा काषायिक क्रिया-प्रतिक्रिया को विनिष्ट कर आत्मा का सही रूप से संशोधन किया अर्थात् घनघाती कर्मों को विलग कर अन्त में मुक्ति को प्राप्त कर लिया।

भावों का विज्ञान ही मन का मनोविज्ञान है। मन जीवन का एक शक्तिशाली तत्व है। वह आत्मा के अनुशासन को मानता है। जब मन, बुद्धि, अहं संतुलित अवस्था में होकर समभाव अर्थात् द्रष्टा-ज्ञाता भाव में आते हैं तब शुभभाव का उद्भव होता है। शुभभाव ही धारण करने योग्य है। उसमें 15 प्रमादों से रहित, सकल चारित्रयुक्त सातवें अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती लाभान्वित होते हैं। अतः स्पष्ट है शुभ एवं समीक्षण भाव ही उपादेय हैं क्योंकि उनसे कर्मबंध तोड़कर जीव मोक्ष की प्राप्ति करता है। समीक्षण भाव से बढ़कर कोई सम्पदा नहीं है। भाव विचारों का एक प्रवाह है, जो बदलता रहता है। इस प्रवाह को ही गुणस्थान कहते हैं। निमित्त पाकर भावों को शुभ बनाया जा सकता है। आगम गवाह है कि संयति राजा ने शिकार द्वारा कई मृगों को घायल कर दिया, लेकिन गर्दभिल्ल मुनि के दर्शन व प्रतिबोध ने उनको अभयदाता बना दिया। जिनका हृदय हिंसा में रचा-पचा रहता था वे संयति मुनि बन गए। सुधर्मास्वामी का एक प्रवचन सुना जम्बूकुमार ने, वैराग्य जगा, संयम के भाव जगे और इकलौती सन्तान, तीन दिन बाद जिसकी शादी होने वाली थी, आठ रमणियों का वृत्तांत, संयम भावों की दृढ़ता ने समीक्षण भावों से 500 चोरों, आठ रमणियों व स्वयं के माता-पिता सहित 527 व्यक्तियों ने संयम अंगीकार कर लिया। ऐसे ही भाव श्री जयमल जी म.सा. के बने। मेड़ता शहर में मात्र एक प्रवचन से वैराग्य प्रकट हो गया। तीन घंटे में प्रतिक्रमण याद कर मुनि बन गए।

अतः स्पष्ट है कि आपके भाव ही हैं जो आपको वहाँ पहुँचा देते हैं जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। चाहे वह संगम ग्वाले द्वारा मुनि को खीर बहराकर शालिभद्र के रूप में 32-32 रत्न पेटियाँ स्वर्ग से प्राप्त करने वाला बना हो या फिर चन्दनबाला हो, जिसने अहोभाव से मात्र उड़द के बाकुलों का सुपात्रदान प्रभु महावीर को देकर अपना जीवन धन्य बनाया। शुभभाव ही जीव को उच्चगति में ले जाने वाले हैं, कर्मों की निर्जरा करने वाले हैं।

अतः अपने भावों को उत्कृष्ट बनाते हुए समीक्षण भाव द्वारा सकारात्मक भावों से आत्मशुद्धि एवं आत्मोत्थान करते हुए जीवन के महत्तम उद्देश्य को प्राप्त करें।

समता दर्शन के पर्याय गुरु नानेश

- बनेचंद बोथरा 'बन्नू', शहादा

कार्तिक बदी 3 आचार्य प्रवर श्री नानालाल जी म.सा. का महाप्रयाण दिवस है। छह दशक का संयमी जीवन, चार दशक का आचार्यत्व और दो पीढ़ियों को नई रोशनी देने वाले ऐसे युगपुरुष के देवलोकगमन को, अपने साधनामय जीवन को पूर्णता प्रदान कर आत्मा से परमात्मा की यात्रा के मंगल पथ पर कदम बढ़ाए भले ही आज पच्चीस वर्ष हो गए हों, लेकिन उनके कई दशकों के अनगिनत उपकारों को हम हजारों वर्षों तक भी भुला नहीं पाएँगे।

हमारे हृदय सम्राट स्व. आचार्य श्री नानेश अलौकिक शक्ति सम्पन्न, तेजस्वी और उत्कृष्ट साधु जीवन के अनुपम मिसाल थे। समता दर्शन आज के समाज को आपकी अनुपम देन है, जिसे मैंने प्रत्यक्ष में देखा और कानों से सुना है। सन् 1980 के राणावास (मारवाड़) के चातुर्मासिक प्रवचन में जैन समाज के सभी सम्प्रदायों में संवत्सरी एक ही तिथि को मनाने के परिप्रेक्ष्य में स्व. आचार्य श्री नानेश ने बड़े ही खुले और सहज मन से कहा था कि अगर जैन समाज के सभी संप्रदाय मिलकर कोई एक तिथि निश्चित कर लेते हैं तो मेरी तरफ से स्वीकृति है। किसी तिथि के लिए जिद नहीं है। आप चाहें तो कोरे कागज पर मेरे दस्तखत ले सकते हैं। इससे बड़ी समता और उदारता क्या हो सकती है? स्व. आचार्य श्री नानेश की अनेकानेक उपलब्धियों को शब्दों में बांधना बहुत कठिन है।

पूनम के उजाले को लौटे सिर्फ दो दिन ही हुए थे और अमावस की रात आने में अभी बारह दिन बाकी थे, लेकिन इससे पहले ही ये कैसी अमावस की रात आ गई, जिसने कार्तिक बदी 3 को रात्रि 10 बजकर 41 मिनट में घोर अंधकार फैलाकर एक युगपुरुष को अपनी आगोश में ले लिया।

जिसने भी यह खबर सुनी वह स्तब्ध रह गया। सबके दिलों में एक ही तमन्ना थी कि गुरुदेव के अंतिम दर्शन करें। शहादा से हम तुरंत एक घंटे के अंदर 3-4 गाड़ियों में रवाना होकर दूसरे दिन दोपहर दो बजे के आसपास जब उदयपुर पहुँचे तो देखा एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ था। इतने बड़े उदयपुर का पूरा बाजार बंद। शहर एकदम खामोश। बस कुछ सुनाई दे रहा था तो जनमानस के कदमों की हल्की-सी पदचाप।

पौषधशाला से निकली इस महानायक महात्मा की अंतिम यात्रा जब किसी चौराहे से गुजरती और अन्य तीनों राहों के लोग जब उसमें सम्मिलित होते तो ऐसा लगता मानो बड़ी-बड़ी नदियाँ उस समता के महानायक के सागर में समाहित हो रही हों।

वैसे महापुरुष के महाप्रयाण को अध्यात्म जगत् में महोत्सव का ही रूप देते हैं। उसी के अंतर्गत गुलाल भी उड़ाई जा रही थी। फिर भी उस अंतिम यात्रा के जनसैलाब में भावात्मकता का नजारा देखने को मिल रहा था। जब किसी से नजर मिलती तो आँसुओं की

धारा रोके नहीं रुक रही थी। विश्व की जिस विरल विचक्षण विभूति ने अपनी 60 वर्षों की संयम साधना, 38 वर्षों का आचार्यकाल और 365 से अधिक दीक्षाएँ प्रदान की हों, जिन्होंने कितनी ही पीढ़ियों के जीवन को अपनी अमृतवाणी से सजाया-संवारा, ऐसी दिव्यमूर्ति जब सबकी धड़कनों में रचबस गई हो तो वे अपने आँसुओं को किस तरह रोक पाते।

अपार जनमेदिनी की साक्षी में पावन संयमित देह श्री गणेश जैन छात्रावास प्रांगण पहुँची, जो गुरु गणेशाचार्य की स्मृति स्थली के रूप में जानी जाती है। आचार्यदेव के संसारपक्षीय भतीजों द्वारा जन-जन के हृदय को स्पर्श करने वाली काया को जब अग्नि को समर्पित किया गया तो लाखों आँखे आर्त्तध्यान में लीन हो गई। जो सौरभ करीब साठ वर्षों से इस धरती पर सबके जीवन को महका रही थी, वही सौरभ अग्नि से धुआँ बनकर आकाश को महकाने के लिए अनंत में विलीन हो गई। उस वक्त मेरे पास भी चुपचाप निहारने के अलावा कोई चारा नहीं था। श्री गणेश छात्रावास गणेश भवन के आगे अग्नि जल रही थी। मन में चिंतन चल रहा था कि यह भी कैसा अद्भुत संयोग है कि जिस गुरु गणेश की गोद में आचार्य नानेश का संयमी जीवन पला, आज उन्हीं की गोद में जीवन का समर्पण हो गया।

इस प्रकार उदयपुर से ही उदित सूरज उदयपुर में ही अस्त हो गया और जाते-जाते संघ को कोहिनूर हीरे से भी ज्यादा मूल्यवान संयम का सितारा आचार्य श्री रामेश के रूप में दे गए, जो आज अपनी संयम साधना की अद्भुत शक्ति से हम सबके जीवन को जगमगा रहे हैं। गुरु नानेश के देवलोकगमन को भले ही पच्चीस साल हो गए, पर आज भी हम सबकी आँखों में आपकी मोहिनी मूरत घूम रही है। आपकी सरलता, सहजता और बच्चों के प्रति असीम प्यार सब कुछ यादें बनकर पलकों पर अश्रु बनकर तैर रहे हैं।

भक्ति रस

महत्तम आनंद रस पाओगे

- बी. शांतिलाल पोकरणा, विजियानगरम्

यदि अविचल पद पाना चाहो, जीवन स्वर्णिम बनाना चाहो।
तप संयम की नौका से, भवसागर पार कर पाओगे।।
राग-द्वेष पर विजय से, मोहनीय कर्म जीत जाओगे।
तभी जीवन की बगिया में, महत्तम आनंद के फूल खिलाओगे।।

यदि जीवन की दिशा बदलनी चाहो, परमानंद पद पाना चाहो।
शुभ भावों के चिंतन से ही, आत्मज्ञान का नवनीत पाओगे।।
देव, गुरु, धर्म की श्रद्धा से ही, अक्षय पद पा जाओगे।
तभी सुंदर जीवन का, महत्तम आनंद का लुत्फ उठा पाओगे।।

आत्म दर्शन करना चाहो, समकित का सूरज उगाना चाहो।
ज्ञान, दर्शन, चारित्र के पथ से ही, महत्तम शिखर चढ़ पाओगे।।
अहोभाग्य ऐसे संत शिरोमणि गुरु मिले, हृदय में बस जाओगे।
तभी अंतर् में बहते निर्मल झरने से, महत्तम आनंद रस पाओगे।।

भक्ति रस

मुझे सुंदर बनना है

- डॉ. स्मिता कोटड़िया, शहादा

सुंदर बनने का स्त्री सुलभ भाव,
मैंने पूज्य म.सा. श्री के चरणों में
अर्पित किया –
भगवन्! आप ही मेरे जीवन के
सुनार बन जाओ
और मेरे लिए कुछ ऐसे गहने बनाओ कि
मैं सुंदर बन जाऊँ।

पूज्य म.सा. श्री ने जगाया और कहा –
जागो श्रमणोपासिका जागो!
तन की सुंदरता को त्यागो
और आत्मा की सुंदरता में लागो।।

माथे को अपने सम्यक् ज्ञान के तिलक से सजाना।
माया हटाकर सरलता का टीका सदा लगाना।।

समता के भावों से नासिका को सजाना।
क्रोध ना कभी आँखों में लाना।।

चेहरे पर हो हँसी का गहना।
प्रतिकूलता में कुछ भी न कहना।।

संयम अपने शब्दों पर रखना।
जैसे गहना हो मौन का पहना।।

कानों में झुमके ऐसे पहनना।
अपनी निंदा को कभी न अंदर लेना।।

गले में हार ऐसा पहनना।
नम्रता से गर्दन झुकाए रखना।।

हाथों में कंगन दानत्व के पहनना।
साधु-संतों को प्रासुक आहार बहराना।।

कंदोरा और छल्ला क्षमा का पहनना।
अहं भाव छोड़ विनय अपनाना।।

पैरों में पायल निर्मोह की पहनना।
साध्वी बन महावीर मार्ग पर चलना।।

मोहनीय कर्म तोड़, पंच महाव्रत धारना।
सज-धज कर फिर रामरथ में बैठना।।

और ये ना हो सके तो...
सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र तप को अपनाना।
जीवन से मुक्ति पाने का ये अनमोल गहना।।
तपस्या से अपनी आत्मा को चमकाना।
कषायों को अपने हर पल घटाना।।
जीवन बन जाएगा ऐसा सुहाना।।

भीलवाड़ा चातुर्मास समाचार

व्यक्ति पुरुषार्थ से महान बनता है
– आचार्य भगवन्

आत्मार्थी भाव को आगे बढ़ाएँ
– उपाध्याय प्रवर

भीलवाड़ा के कण-कण में जैन धर्म के मूल सिद्धांत रच-बस गए, जैन-जैनेतर सभी जीवन निर्माणकारी प्रवचनों से आप्लावित हो धर्म की राह से हो रहे पावन

अरिहंत भवन, आर.के. कॉलोनी एव प्रवचन पंडाल, प्राथमिक विद्यालय, धांधोलाई, भीलवाड़ा।

जिनके प्रवचनों में हर पल रहती नयी बहार है, ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, मानवता के मसीहा, ज्ञान और क्रिया के बेजोड़ संगम, उत्क्रांति प्रदाता, जन-जन के भाग्यविधाता, नानेश पट्टधर आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-24 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि ठाणा-48 के शिखर महोत्सव चातुर्मास में अध्यात्म की पावन गंगा निरंतर प्रवाहमान हो रही है। महापुरुषों के पावन दर्शन, पावन वाणी एवं धर्म के मर्म को जीवन में उतार कर जनता आत्मविभोर है। मोक्ष आराधना शिविर, सोऽहम् शिविर, तत्त्वज्ञान शिविर आदि के माध्यम से ज्ञान-ध्यान का सुंदर वातावरण बना हुआ है। श्री इभ्य मुनि जी म.सा. इस चातुर्मास में आठवीं अठाई की ओर अग्रसर हैं। अन्य अनेक चारित्रात्माओं व श्रावक-श्राविकाओं में तपस्याएँ जारी हैं। लोच में क्या सोच कार्यक्रम के अंतर्गत अब तक 292 लोच संपन्न हो चुके हैं। आगामी दीक्षा प्रसंग, महत्तम महोत्सव, चातुर्मास, होली चातुर्मासिक पर्व आदि के लिए अजमेर, बेगूँ, बीकानेर, गंगाशहर-भीनासर, जयपुर, देशनोक, ब्यावर, नोखागाँव, पिपलियाकलां, विजयनगर, गंगापुर, आदि कई संघों व क्षेत्रों के प्रतिनिधियों द्वारा निरंतर विनतियाँ श्रीचरणों में अर्पित हो रही हैं। श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने अठाई तप का पारणा सम्पन्न किया। 9 नवकार, 9 मिनिट में 9 आइटम के साथ एकासना में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

कषाय को शांत करें

16 अक्टूबर 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में **'मेरे प्यारे देव गुरुवर श्री जिनधर्म महान'** की मधुर स्वरलहरी से प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अपने जीवन को ऊँचाइयों पर ले जाना है तो अपने भीतर पड़े कषायों को शांत करना होगा। कषाय शांत होंगे तभी हम कुछ करने में समर्थ होंगे। हमारा लक्ष्य जितना बड़ा होगा सफलता उतनी ही बड़ी मिलेगी। हमें कषाय रूपी शत्रुओं को

दूर करना होगा। जितने हम कषायों से दूर होंगे उतने ही सुखी बनेंगे। **'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से'** में संयति राजा चारित्र भाग का सुंदर विवेचन आपश्रीजी ने फरमाया।

श्री नमन मुनि जी म.सा. ने श्रीमद् आचारांग सूत्र का आधार लेकर फरमाया कि कंठस्थ ज्ञान उसे कहा जाता है जो कंठ में स्थिर हो जाए। भगवान महावीर के समय एवं उनके निर्वाण के लगभग 1000 वर्ष पश्चात् तक लेखन की परंपरा नहीं थी। गुरु अपने मुखारविंद से जो ज्ञान फरमाते वह शिष्यों द्वारा सुनकर ही कंठस्थ कर लिया जाता था। हम भी मात्र पढ़ें नहीं अपितु उस पढ़े हुए को कंठस्थ भी करें।

महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत सभा में उपस्थित कई भाई-बहनों ने प्रतिदिन 9 नवकार, 9 लोगस्स एवं 9 णमोत्थु णं के साथ 9 बार गुरुवंदना करने का नियम लिया। पूर्व शिक्षा आयुक्त प्रदीप जी बोरड़, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी आदि ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, जयपुर ने चारित्रात्माओं के चातुर्मास हेतु विनती गुरुचरणों में अर्पित की। मोक्षार्थी शिविर में प्रतिभागी भाई-बहन ज्ञान-ध्यान में लीन रहे। पटाखा फोड़ने का त्याग कई छोटे बच्चों व बड़ों ने ग्रहण किया।

पद व प्रतिष्ठा में आनंद नहीं

17 अक्टूबर 2024। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जब इंद्रियों के विषय नहीं मिलते तो हम बेचैन हो जाते हैं। इंद्रियों का निग्रह एवं कषायों का दमन करो। सच्चा शिष्य वो है जो अपने गुरु के चित्त में प्रसन्नता लाता है। क्रोध से क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोध से क्रोध पलेगा। यदि क्रोध पर विजय प्राप्त करनी है तो उपशम भाव का आश्रय लेना होगा। जितने-जितने कषाय प्रवर्द्धमान और अनुग्रहित रहते हैं, उतनी-उतनी भव परंपरा बढ़ती है। हमने अपने पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान को आनंद मान रखा है और जब ये चीजें नहीं मिलती हैं तो हम दु:खी हो जाते हैं। भव परंपरा दु:ख के जाल को फैलाती है।

संघ मंत्री ने त्याग-प्रत्याख्यान की प्रेरणा देते हुए 20 अक्टूबर को आचार्य श्री नानेश के पुण्यस्मरण दिवस व आचार्य श्री रामेश के आचार्य पदारोहण दिवस पर अधिकाधिक आयंबिल करने का आह्वान किया। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

कषाय से जन्म-मरण का पोषण

18 अक्टूबर 2024। मंगलमय प्रार्थना से धर्ममय दिन की शुरुआत करने के पश्चात् आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि क्रोध और मान जब अनुग्रहित दशा में रहते हैं, माया और लोभ जब प्रवर्द्धमान रहते हैं, बढ़ते रहते हैं तभी ये चारों कषाय संपूर्ण रूप से जन्म-मरण की परंपरा की जड़ का सिंचन करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के लिए घात करना भी पाप कर्मों को बढ़ाने वाला है। यदि हम दूसरों को सुख देंगे तो हमें भी सुख मिलेगा, किंतु हम दूसरों को दु:ख देकर सुखी बनना चाहते हैं। यह सोचना गलत है कि दूसरे लोग हमें सुख देंगे। ये चार कषाय छोड़ने योग्य हैं। त्यागी महापुरुषों के त्याग और वैराग्य को आज भी याद किया जाता है। सच्चा साधु संतान, धन, मंत्र, तंत्र, यंत्र व किसी को बस में करने की बात नहीं करता। वह कषाय कम करने की प्रेरणा देता है।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि विनय मोक्ष जाने की सीढ़ी है। विनय धर्म की आराधना करें।

महिला मंडल ने ***'जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है'*** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। घर में दस मिनट नवकार महामंत्र जाप का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। दोपहर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में

मोक्षार्थी शिविर में भाग लेने वाले बालक-बालिकाओं एवं भाई-बहनों ने अपने भाव श्रीचरणों में अर्पित किए।

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि "**25 दिसंबर से 1 जनवरी तक मोक्षार्थी शिविर लगाने की भावना है। हमारी भावनाएँ क्रियात्मक रूप लें। हम अपने भीतर की शक्ति को जगाएँ। भावनाओं को जीवन में उतारें।**" *'संयम के भाव आज जगे, मेरे नाम के आगे राम लगे'* गीत से सभा गूँज उठी।

आत्मा का वैभव श्रद्धा वैभव है

19 अक्टूबर 2024। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर को राजघराना छोड़ने की क्या जरूरत थी? उनका चिंतन था कि बाहर के सुख बटोरने से आत्मा कितनी मैली हो गई है। वे साधना करके सब कुछ देखने वाले और सब कुछ जानने वाले बन गए। आत्मा के वैभव को पाने के लिए उन्होंने घर छोड़ा। उन्होंने अपने आपको कष्टों की अग्नि में तपाया, फिर कुंदन जैसे चमके। भगवान ने एक बार भी प्रमाद का सेवन नहीं किया। वे धैर्यवान थे। उन्होंने पीछे हटना नहीं सीखा और कष्ट सहन किये। वे अभय थे। जो अपने आपको अकिंचन मानता है वह अभय है। जो अपने आपको सब कुछ समझता है उसको डर रहता है। हमें सोचना है कि हमारे जीवन की दिशा किधर जा रही है। **'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से'** चारित्र भाग का सुंदर वर्णन आपश्री जी ने फरमाया।

श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि शिष्य को इस प्रकार कार्य करना चाहिए कि गुरु की प्रसन्नता बनी रहे। कोई भी काम करने से पहले सोचना कि यह पाप कार्य है या धर्म कार्य? इससे मेरी समाधि बढ़ेगी या घटेगी?

साध्वी श्री उपासना श्री जी म.सा. ने फरमाया कि चाहे समाज हो, शासन हो या प्रशासन हो, हमारी पूरी लाईफ एडजस्टमेंट में निकल जाती है। एडजस्टमेंट 3 प्रकार का है - 1. समझौता, 2. ताल-मेल, 3. समन्वय। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवृंद सभा में शोभायमान थे। वल्लभनगर संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती प्रस्तुत की।

नानेश कहो रामेश कहो दोनों ही मंगलकारी हैं

समता विभूति आचार्य श्री नानेश के 25वाँ पुण्यस्मरण दिवस एवं आचार्य श्री रामेश के आचार्य पदारोहण दिवस पर श्रद्धा का सैलाब

नाना गुरु समता, ममता, क्षमता के धनी थे - आचार्य प्रवर

20 अक्टूबर 2024। आज का पावन दिवस विशेषताओं एवं उपलब्धियों से भरा हुआ रहा। प्रात:काल से ही श्रद्धालुओं का जनसैलाब प्रवचन स्थल की ओर उमड़ रहा था। आज रविवार होने से हर कोई इस अवकाश के दिन का लाभ लेने हेतु आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त विशेष आयाम **'रविवारीय समता शाखा'** की आराधना हेतु आतुर नजर आ रहा था। अपार जनमेदिनी ने एक साथ समता शाखा की आराधना कर जीवन धन्य बनाया।

आज का एक और पावन प्रसंग आचार्य श्री नानेश का 25वाँ पुण्यस्मरण दिवस एवं उन्हीं के पट्टधर आचार्य श्री रामेश का 25वाँ आचार्य पदारोहण दिवस श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा, भक्ति एवं समर्पणा के साथ मनाया।

आज के दिवस की विशिष्ट धर्मसभा को संबोधित करते हुए जन-जन की आस्था के केन्द्र, परमागम रहस्यज्ञाता, नानेश पट्टधर परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि

''कोई महान व्यक्ति जन्म से महानता लेकर आ सकता है किंतु उसका पुरुषार्थ उसे महान बनाता है। समता, ममता और क्षमता ये त्रिवेणी संगम जीवन का अंग है। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के जीवन में समता थी, ममता थी और क्षमता भी थी। बिना सामर्थ्य के समता और ममता सार्थक नहीं हो सकती। माँ की ममता सामर्थ्य के अनुसार आती है। माँ में सहन करने का सामर्थ्य नहीं है तो उसकी ममता काम नहीं कर पाएगी। आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. को जब युवाचार्य पद प्रदान किया गया उस समय संघ में 15-16 साधु और महासतियाँ जी को मिलाकर 60-70 साधु-साध्वी रहे होंगे। उनमें से भी बहुत सारे वृद्ध थे। उस स्थिति में गुरुदेव ने खूब पुरुषार्थ किया। एक-एक संत-सती को वात्सल्य से सींचा। शरीर सदा विद्यमान नहीं रहता। शरीर से बढ़कर विचार लंबे समय तक चलने वाले होते हैं। आवश्यकता है उन विचारों को अमली रूप देने की। गुरुदेव के जीवन में बहुत सारे प्रसंग आए, कठिनाइयाँ आई किंतु उन्होंने एक ध्येय बनाए रखा - सहना, सहना, सहना। सारी जिम्मेदारियाँ उन पर थी। नई-नई दीक्षाएँ होती गई। श्रावक संघ और साधु संघ को भी विकास यात्रा पर आगे बढ़ाना आदि अनेकानेक जिम्मेदारियों का उन्होंने समता, ममता और क्षमता से निर्वहन किया।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु एक शक्ति हैं जो अपनी आत्मा को भावित करते हैं। किसी व्यक्ति की महानता इस कारण से नहीं है कि लोग उसे कितना महान समझते हैं और उसकी कितनी जय-जयकार करते हैं। उसकी पूजा-प्रतिष्ठा कितनी होती है, उसका समुदाय कितना बड़ा है ये सब महानता मापने का पैमाना नहीं हैं। स्मृतिशेष आचार्यदेव श्री नानालाल जी म.सा. एवं वर्तमान आचार्य भगवन् ने आत्मार्थी भाव को साधा है और वह आत्मार्थी भाव ही उनके जीवन की सर्वोच्चता है या उनका सामर्थ्य समता का परिचायक है। अपने भीतर ऊहापोह पैदा नहीं होने देना। समुद्र के समान गंभीरता हमें नाना गुरु में परिलक्षित होगी। इसलिए समता, ममता और क्षमता की त्रिपुटी व्यक्ति को महान बना देती है। जीवन के अंतिम पड़ाव तक उन्होंने इसे लक्ष्य में रखा। इसलिए समता उनकी पर्यायवाची बन गई। लोग जितना साधुमार्गी जैन संघ से नहीं जानते उससे ज्यादा समता संघ से जानते हैं। समता संघ पूज्य आचार्यश्री का है। उन्होंने बहुत सारी परिस्थितियों को समभाव से सहा है। बहुत सारी बातें, बहुत सारे विषय और बहुत सारे कथन कहे जा सकते हैं। ऐसे महापुरुष के जीवन का स्मरण करते हुए समता, ममता और क्षमता की दिशा में आगे बढ़ेंगे तो हम धन्य-धन्य हो जाएँगे।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गुरु गुणों के सागर होते हैं। गुरु प्रसन्न हो गए तो गुण प्रकट हो जाएँगे। हमें गुरु की आराधना करनी है। आराध्यदेव की आराधना करें। जिनवाणी की आराधना करें। नाना गुरु गुणों के सागर थे और वर्तमान गुरुदेव गुणों के भण्डार हैं। हम भी अपने जीवन में गुणों को प्रतिस्थापित करें।

'आज तुम्हारी गहरी यादें गुरुवर नाना आती है' भाव गीत श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री गौरव मुनि जी म.सा., श्री मयंक मुनि जी म.सा., श्री यत्नेश मुनि जी म.सा. आदि संतरत्नों ने प्रस्तुत किया। संपूर्ण सभा भावविभोर हो गई। साध्वी श्री वीतराग श्री जी म.सा. व साध्वी दिव्यप्रभा जी म.सा. ने अपने भावसुमन समर्पित किए।

साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. ने ***'याद करे यहाँ सारा जहाँ'*** गीतिका के साथ फरमाया कि नाना गुरु अनेक गुणों से सम्पन्न थे। इसलिए उनके सागर समान गुणों को शब्दों में पिरो पाना मुश्किल है। वर्तमान शासननायक के महान गुणों से हम प्रेरणा लेकर अपने जीवन को धन्य बनाएँ। ***'नानेश कहो रामेश कहो, दोनों ही मंगलकारी हैं'*** भाव गीतिका से पूरी सभा गुंजायमान हो उठी। संघ मंत्री व महेश नाहटा ने आचार्य श्री नानेश-रामेश के संदेशों को जन-जन तक पहुँचाने की अपील की। 15 मिनट स्वाध्याय करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

परम गुरुभक्त गणेशमल जी दुगड़, मनेंद्रगढ़/गंगाशहर एवं दर्शना जी जैन, संगरिया मंडी के निधन पर परिजनों ने गुरुचरणों में आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। 225 आयंबिल के साथ ही अनेक तप-त्याग, प्रत्याख्यान हुए। आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश चालीसा का पाठ भी किया गया। नानेश-रामेश खुला प्रश्नमंच कार्यक्रम हुआ।

क्रोध करने से होता है प्रीति का नाश

21 अक्टूबर 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना **'मेवाड़ी सांवरियो नाना गुरु प्यारो लागे'** श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. द्वारा करवाई गई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'लाखों को पार लगाया भगवान तुम्हारी वाणी ने'** गीत प्रस्तुत करते हुए आगे फरमाया कि चार कषाय क्रोध, मान, माया, लोभ हमारे जीवन में तहलका मचाने वाले होते हैं। ये कषाय हमें ऐसी गर्त में ले जाते हैं कि हमारे आत्मभाव, हमारी प्रसन्नता, हमारा उल्लास चकनाचूर हो जाते हैं। क्रोध से प्रीति का नाश होता है, स्नेह और प्रेम का नाश होता है। क्रोध से संबंध खराब होते हैं। जब हम स्वभाव की परिभाषा को भूल जाते हैं तो हमें गुस्सा करना स्वभाव लगता है, किंतु गुस्सा स्वभाव नहीं, विभाव है। जब हमारे मन के विपरीत बात होगी तो हमें गुस्सा आएगा। कोई दूसरा गुस्सा करता है तो हमें लगता है कि क्रोध स्वाभाविक है। क्रोध में बनाया गया आहार भी दुष्प्रभावित से ग्रस्त होता है। संयति राजा चारित्र भाग का सुंदर विवेचन किया।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने **'तेरी साधना को झुकती मेरी आत्मा'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य को प्राप्त कर हम भी साधना, संयम व स्वाध्याय की दिशा में आगे बढ़ें। महिला मंडल ने **'जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है'** गीत प्रस्तुत किया। प्रतिदिन एक घंटा मौन रहने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया।

आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में आगम वाचनी, धर्मचर्चा, ज्ञानचर्चा आदि कार्यक्रम हुए। परम गुरुभक्त इंदरचंद जी पारख (नोखा मंडी) के संथारापूर्वक देवलोकगमन पर परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया। आप श्री किशोर मुनि जी म.सा. के सांसारिक मामाजी थे।

समय का प्रमाद मत करो

22 अक्टूबर 2024। प्रात: मंगलमय प्रार्थना **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने करवाई। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'सब में देखूँ श्री भगवान, ऐसी दृष्टि दो भगवान'** गीत के साथ फरमाया कि हमारी आत्मा निरंतर भ्रमण कर रही है। हमें जो करना है वह अभी व आज करना है। हमें यह समझना है कि यह जीवन आखिरी नहीं है। हमारे में ऐसा विश्वास होना चाहिए कि हम परम मंजिल के किनारे पहुँच गए हैं। समुद्र को पार कर किनारे पर खड़े हैं। किनारे पर आकर रुको मत, ढीले-ढीले मत रहो, बैठे-बैठे देखो मत। जागो, उठो और संधान करो, प्रेरणा करो। हम अभी भरत क्षेत्र में हैं, देवलोक में जाएँगे, फिर महाविदेह में जाएँगे, फिर विश्वास होगा कि हम एकाभवावतारी होंगे, ऐसा विश्वास लेकर चलना होगा और किनारे पर रुकना नहीं है। इसके बाद अंत आने वाला है। उस अंत के लिए भाता तैयार करना है। समय का प्रमाद मत करो, समय बीत रहा है। समय का सदुपयोग करेंगे तो हमारा जीवन मंगलमय बनेगा। हमें धर्म-ध्यान, तप-त्याग का भाता तैयार करना है। छोटी-छोटी बातों में उलझना नहीं है। साधु बनें तो सबसे श्रेष्ठ, नहीं तो बारह व्रतधारी श्रावक अवश्य बनें। आज जैसा जीवन जीएंगे, वैसा भविष्य मिलेगा।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आदिनाथ भगवान को धन्ना सार्थवाह के भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। भगवान महावीर को नयसार के भव में सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई। यदि हमारे भीतर सहनशीलता बढ़ेगी तो करुणा का स्तर बढ़ेगा। जो किसी से नहीं डरता वह वीर है, जिससे कोई नहीं डरता वह महावीर है।

हर पक्खी को प्रतिक्रमण करने का कई भाई-बहनों ने प्रत्याख्यान लिया।

हमें बुराई नहीं, अच्छाई देखनी है

23 अक्टूबर 2024। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'लाखों को पार लगाया है भगवान तुम्हारी वाणी ने'** गीत के साथ फरमाया कि कषाय हमारे जीवन को बहुत ज्यादा परेशान करने वाले हैं। हमारी बहुत सारी कमियों में से सबसे बड़ी कमी है कि हम दूसरों के अच्छे गुण नहीं देखकर उनके दुर्गुण देखते हैं। जो दुर्गुणी होता है, वह अच्छी चीज को छोड़कर बुरी चीजों पर ज्यादा ध्यान देता है। ऐसी कोई वस्तु व व्यक्ति नहीं है जिसमें कोई गुण नहीं होता। हमें गुणग्राही बनना चाहिए। हमें लोगों की बुराई नहीं, अच्छाई को देखना है। सभी के गुणों को देखें और अच्छा लगे तो ग्रहण करें।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि करुणा रौद्र इनसान को भी ठंडा कर देती है। अगर जीवन बनाना है तो साधनों से नहीं, साधना से बनाओ। हम करुणा को विकसित करेंगे तो हमारा मोक्ष मार्ग प्रशस्त बनेगा। अगर परमात्मा से कुछ माँगना है तो करुणा माँगिए। करुणा आएगी तो अपने साथ अनेक गुण लेकर आएगी।

आगम के बोध को जीवन में उतारें

24 अक्टूबर 2024। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'आया कहाँ से, कहाँ है जाना'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि यदि हमें सुखी रहना है तो हमें बोध करना होगा कि मैं अकेला हूँ। मेरा कोई नहीं है मैं किसी का नहीं हूँ, जब यह बोध हमारे भीतर में उतरेगा तो हम जंगल में होंगे तो वहाँ पर भी मंगल हो जाएगा। आगम के बोध को हम हमारे जीवन में उतारेंगे तो हमारा जीवन धन्य बनेगा। हम चिंतन करें कि हे चेतन तू विभिन्न गति में भ्रमण करके यहाँ आया है, तू निज को पहचान, तू खुद को देख। धन, दौलत, परिवार, मकान, जमीन, जायदाद, लेनदारी, देनदारी, बैंक खाता, यहाँ तक कि शरीर भी तेरा नहीं। शरीर नाशवान है, तू अजर अमर है, बाहरी चीज को प्राथमिकता मत दे। एकमात्र आत्मा की ओर देख, जो जैसा करेगा वो वैसा भरेगा। तू आत्मा की ओर देख। आचार्य श्री नानेश व आचार्य श्री रामेश के जीवन को सभी के लिए प्रेरणास्रोत बताया। **'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना है ज्ञानालोक से'** के माध्यम से चारित्र भाग का सुंदर वर्णन किया।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रकृति में इतनी ताकत है कि सबका जीवन चल सकता है, लेकिन सबकी इच्छाएँ पूरी नहीं कर सकती।

अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए। सांवलियाजी (मंडफिया) सकल जैन समाज ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती की। दोपहर में आचार्य भगवन् के सान्निध्य में प्रश्नोत्तरी, ज्ञानचर्चा, आगम वाचनी हुई।

धर्म हमारे जीवन में लाता है बदलाव

25 अक्टूबर 2024। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जीवन अनेक परिस्थितियों से घिरा हुआ है। जीवन में सुख-दु:ख आँख मिचौली की तरह आते-जाते रहते हैं। जीवन में धर्म आने से

हमें क्या फर्क पड़ता है? इससे जीवन में बदलाव आता है। जब हमारे जीवन में धर्म का प्रवेश हो जाता है तो हम एक ऐसी दशा को प्राप्त करते हैं जो हमें सुख-दु:ख के सच्चे स्वरूप का दर्शन करवाती है। घर का माहौल, घर के संस्कार धर्म का माहौल बनाते हैं। बदलने के लिए लंबे वर्षों की जरूरत नहीं, एक छोटे से निमित्त की जरूरत है। धर्म आने पर अपने आप परिवर्तन दिखने लग जाता है। धर्म हमारे जीवन में बदलाव लाता है और जब हमारे जीवन में धर्म आता है तब हमें सुख और दु:ख की सच्ची समझ मालूम पड़ती है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रारंभ में ही हम बच्चों को जो संस्कार देते हैं, वे स्थायी होते हैं। गर्भ से ही संस्कार दिये जाने चाहिए। हम उन्हें जैसा भी बनाना चाहते हैं, पहले हमें वैसा बनना पड़ेगा। हमारी भावना यह होनी चाहिए। बच्चे संसार को बढ़ाने वाले न बनें, जिनशासन की सेवा करने वाले बनें। आज टी.वी., मोबाइल, फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम से संस्कारों की धज्जियाँ उड़ रही है। सुसंस्कारों का पतन हो रहा है।

आत्मा सुख का ठौर है

26 अक्टूबर 2024। धर्मसभा को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने **'आया कहाँ से, कहाँ है जाना'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि भटके हुए जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है। जो जीव अपनी दिशा को भूल जाता है वह गंतव्य को प्राप्त नहीं कर पाता। चाहे कितने ही भटक लें किंतु सही ठौर, सही दिशा एक ही है और वह है आत्मा। आत्मा सुख का ठौर है और हमारा मन बाहर की चीजों से इतना भारी हो चुका है कि हम सही दिशा में आ ही नहीं पाते हैं। हमारा मन अनावश्यक चीजों व बाहर की ओर ज्यादा भागता है। यदि हम शुभ भाव रखेंगे तो हमारी आत्मा हलकी होगी और हमारी आत्मा मोक्ष की ओर आगे बढ़ेगी। **'वैराग्य ज्योत को प्रकटित करना ज्ञानालोक से'** चारित्र भाग का सुंदर विवेचन किया।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि तीर्थंकर भगवान अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन के धारक होते हैं। उपाध्याय प्रवर का शरीर दुबला है, किंतु तपस्या में भी गोचरी के लिए पधारते हैं। तीर्थंकर के पैर के अंगूठे से मेरु पर्वत कंपायमान हो जाता है। इतनी शक्ति तीर्थंकर प्रभु के भीतर विद्यमान है। शरीर सीमित शक्ति वाला है, परन्तु आत्मा अनंत शक्ति सम्पन्न है।

महत्तम दैनिक उपासना के अंतर्गत 9 नवकार, 9 लोगस्स एवं 9 णमोत्थु णं सहित 9 बार गुरुवंदना 9 फरवरी 2025 तक करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। आचार्य भगवन् के आगामी वर्ष 2025 के चातुर्मास हेतु श्री साधुमार्गी जैन संघ, नोखागाँव की ओर से सरपंच पुरखाराम जी, पूर्व सरपंच मेघसिंह जी सहित ब्राह्मण, जाट, राजपूत, सुथार, सोनी, नाई, कुम्हार, मेघवाल आदि अनेक समाज के लोगों ने पुरजोर विनती की। कई ग्रामीणों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिए। परम गुरुभक्त उमंग जी जैन, इंग्लैंड ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

सोऽहम् शिविर (ध्यान शिविर) में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने विशेष मार्गदर्शन देते हुए फरमाया कि **"हमारे जीवन की असफलताओं के तीन मुख्य कारण हैं – 1. सावधानी की कमी, 2. सीखने की इच्छाशक्ति कम एवं असफलताओं की शृंखला से आत्मशक्ति का ह्रास। इसलिए हमेशा सीखने की इच्छा रखना, कभी हार नहीं मानना और अपने आपको बेकार नहीं समझना चाहिए। इससे आत्मबल बढ़ता है और सफलता की संभावनाओं में अभिवृद्धि होती है।"** 350 लोगों ने शिविर में भाग लेकर ज्ञान-ध्यान अर्जित किया।

भीतर उतरे बिना सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती

27 अक्टूबर 2024। प्रात:काल समता आराधना में जन-जन श्रद्धाभिषिक्त हो रहा था। आचार्य भगवन् ने मंगलपाठ प्रदान किया। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें सुख पाना है तो अपने भीतर उतरना होगा। भीतर उतरे बिना सच्चे सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती। हम जो देखते हैं उसे जानते हैं और जिसे हम जानते हैं उसमें हम अपने संबंध को देखने लगते हैं। जो अंतर की दृष्टि होती है वह आंतरिक जगत् को देखती हैं और बाहर की दृष्टि बाहर के जगत् को देखती है। हमारा मन पहले बिगड़ता है। मन बिगड़ता है तो आँखें बिगड़ती है और आँखें बिगड़ती है तो हमारा जीवन बिगड़ता है। अपने मन अपनी आँखों को शुद्ध करने के लिए प्रभु के जीवन से प्रेरणा लें।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि चातुर्मास के बहुत सारे दिन चले गए। अब बहुत कम दिन बचे हैं। जो समय गया वो तो गया, लेकिन जो समय बचा है उसका सदुपयोग करके कुछ विशेष करके बताना है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हमें यह जिनशासन, भगवान महावीर का शासन मिला है। उनकी वाणी हमें तिराने वाली, हमारा कल्याण करने वाली है। गुरु के दर्शन इतने भव्य होते हैं, जो हमें तिराने वाले बन जाते हैं। महिला मंडल ने **'जिनशासन के वीरों को वंदन है, अभिनंदन है'** गीत प्रस्तुत किया। ए-9 के अंतर्गत 9 नवकार से शुरुआत करके 9 मिनट में 9 आइटम के साथ एकासना कार्यक्रम में 130 लोगों ने भाग लेकर गुरुभक्ति का परिचय दिया। उपवास, बेला, तेला, अठाई के प्रत्याख्यान हुए। देशनोक संघ ने आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनती प्रस्तुत की। विशेष रूप से बच्चों ने अहोभाव व्यक्त किए। मेवाड़ क्षेत्रीय मोक्षाराधना शिविर का आगाज हुआ।

महापुरुषों के सान्निध्य में आयोजित सोऽहम् शिविर (ध्यान शिविर) में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''सुख मेरे वर्तमान में है, अतीत में नहीं। वही लोग भाग्य की चर्चा करते हैं जो असफल होते हैं। इसलिए अपने अंदर अच्छी बातें जागृत करते हुए 1. सराहना की आदत विकसित करें। 2. जीवनभर के लिए सहायता देने का संकल्प करें और 3. प्राथमिकता की भावना विकसित करें। इनसे परिपूर्ण जीवन विकास की राह पर अग्रसर रहता है।''**

अच्छी सोच वाले समाज में नहीं होता क्लेश

28 अक्टूबर 2024। जीवन का असली आनंद जितना भक्ति में है उतना अन्य कहीं नहीं है। भक्ति के अनेक मार्ग हैं और उन्हीं मार्ग में से एक हैं प्रार्थना। इसलिए प्रात:कालीन शुभ बेला में प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति कर जीवन को भक्ति के मार्ग पर अग्रसर किया गया। प्रार्थना पश्चात् आयोजित धर्मसभा में धर्म की अद्भुत व्याख्या करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि साधुओं का जीवन नियमों से जुड़ा हुआ है। ऐसे वातावरण के कारण श्रावकों के मन में साधुओं के प्रति भक्तिभाव बना रहता है। जो दूसरों को साता पहुँचाते हैं उनको साता मिलती है। जिस समाज में अच्छी भावना होगी, अच्छे विचार और अच्छी सोच होगी उस समाज में कभी भी क्लेश नहीं होगा। हमारे भीतर जब उदारता का भाव रहता है तो वह उदारता पूरे माहौल में फैल जाती है। हम क्या आहार ग्रहण करते हैं यह महत्व नहीं रखता। महत्व इस बात का है कि वह किस रूप

में परिणित हुआ है। आपश्रीजी ने **'वैराग्य ज्योत प्रकटित करनी है ज्ञानालोक से'** चारित्र भाग का सुंदर वर्णन भी फरमाया।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आध्यात्मिक गुण का सबसे पहला गुण परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिसके भीतर परोपकार की भावना नहीं है वह कभी भी सफल नहीं हो सकता। जो व्यक्ति दूसरों की मदद करने के लिए हमेशा तैयार रहता है वह किसी भी क्षेत्र में सफल हो जाता है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि इस जीवन में शरीर पर कष्ट आएँगे, किंतु चाहे कितने ही कष्ट आ जाएँ, हमें हर स्थिति में समभाव रखना चाहिए। हमारे भीतर अनंत शक्ति का गुण विकसित होना चाहिए। अनासक्ति कम होने का मतलब है कि करुणा बढ़ रही है।

शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याएँ सभा में शोभायमान थीं। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। मोक्ष आराधना शिविर अपूर्व ज्ञान-ध्यान, अनुशासन के साथ गतिमान है।

जहाँ चाह, वहाँ राह

29 अक्टूबर 2024। भोर की पावन बेला में मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित धर्मप्रेमी जनों को संबोधित करते हुए श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों की पतित पावनी वाणी हमारे भीतर रही हुई है। जो अक्षमता को दूर करके क्षमता के बोध को प्रकट करने वाली है। जिनवाणी कहती है कि तुम यह मत सोचो कि मैं क्या कर सकता हूँ। तुम यह सोचो कि मैं क्या नहीं कर सकता? जैसी हमारी चाहत होगी उसी प्रकार का फल हमें मिलेगा। जहाँ चाह है वहाँ राह है।

श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि जो खुद तिरना जानता है, संसार सागर से तिरने के लिए जो प्रभावशील है वही दूसरों को तिरा सकता है। अगर खुद को तिरना नहीं आता और सोच ले कि दूसरों को तिराऊँ तो खुद तो डूबेगा ही, दूसरों को भी साथ में डुबाएगा। जो व्यक्ति खुद अपने मन को साध ले वह जो बोलता है वैसा होता है।

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम जिस रूप में दूसरों को कष्ट देंगे उसी रूप में हमें परिणाम मिलेगा। वैर की गाँठ जन्म-जन्मांतर तक रुलाने वाली होती है। जब तक संसार में हैं तब तक जिनके साथ हमारा संबंध है, उनके प्रति करुणा के भाव रखेंगे तो वह सम्यक् भाव बढ़ाने वाला, मुक्ति के समीप ले जाने वाला होगा।

दुनिया में सबसे आसान काम है किसी की गलती निकालना

30 अक्टूबर 2024। **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** गीत की मंगल ध्वनि से प्रार्थना पश्चात् प्रवचन स्थल पर विशाल धर्मसभा का आयोजन हुआ। इस धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **"गुणों की खान सद्गुरु का परिचय करें। निर्लेपी गुरु, निःस्पृह गुरु के उपदेश को आत्मसात करेंगे तो हमारा जीवन धन्य-धन्यता को प्राप्त करेगा। देव, गुरु, धर्म, इन तीनों के निर्णय की प्रज्ञा हमारे भीतर होनी चाहिए। सच्चे बंध के परिणामस्वरूप मिथ्या दर्शन दूर होता है। उनके भीतर सम्यक् दर्शन प्रकट होता है। व्यक्ति अपने अनुसार धर्म को मोड़ना चाहता है, किंतु धर्म के अनुसार अपने आपको मोड़ना नहीं चाहता। दुनिया के अनेक कार्यों में सबसे आसान काम है किसी की गलती निकालना। हमें दूसरों की ओर नहीं अपने आपको देखना**

है। तप इस लोक और परलोक में सुख देने वाला, कर्मों की निर्जरा कराने वाला है। जितनी ताकत खाने से नहीं मिलती उतनी तपस्या से मिलती है।''

श्री मयंक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अगर हम सच में अपने आपको जिनशासन का सेवक मानते हैं, गुरुभक्त मानते हैं, जिनशासन के लिए कुछ करना चाहते हैं तो हमारी तरफ से जिनशासन की वृद्धि हो, यह बहुत अच्छी बात है। नहीं तो कम से कम जिनशासन को हानि तो नहीं पहुँचाएँ। हम अपने आपको देखें कि हम किसके साथ हैं। हमारे सामने जिनशासन रहता है या स्वार्थ? हम जो भी कर्म कर रहे हैं, संभलकर करें क्योंकि कर्म कभी किसी को छोड़ता नहीं है। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। उपवास, बेला, तेला, अठाई आदि के प्रत्याख्यान हुए। मोक्ष आराधना शिविर ज्ञान-ध्यान के साथ गतिमान रहा। लगभग 201 तेले गुरुचरणों में समर्पित कर अध्यात्म ज्योति पर्व को सफल बनाया गया।

भगवान महावीर जैसी वीरता जगे

31 अक्टूबर 2024। भगवान के दर्शनों की चाह भक्त को बरबस ही उन तक पहुँचा देती है। इसी चाह के वशीभूत सैकड़ों की जनमेदिनी प्रात:कालीन प्रार्थना पश्चात् प्रवचन स्थल पर उपस्थित थी। हर कोई आचार्य भगवन् की एक झलक देखकर आत्मतृप्त होना चाह रहा था। प्रवचन सभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति के मध्य आचार्य भगवन् का आगमन भक्ति से आप्लावित भक्तों को अपार सुकून प्रदान कर रहा था। उच्च पाट पर आपश्री विराजने के पश्चात् पाट के एक तरफ संतों एवं दूसरी तरफ साध्वीवर्याओं की उपस्थिति अपूर्व नयनाभिराम दृश्य परिलक्षित कर रही थी।

विश्ववंदनीय, विरल विभूति परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में जन-जन के मन को धर्म की ओर उन्मुख करते हुए मधुर वाणी में फरमाया कि **''क्या माँगने से वीरता मिलेगी? माँगने से भिक्षा भी नहीं मिलती। पुरुषार्थ की महिमा अपने आप में अनोखी है। वीरता नमने से आती है, अहंकार और घमंड से नहीं। मेरे भीतर भी भगवान महावीर जैसी वीरता जगे। जिसने स्वयं को जीत लिया वो वीर है। धन का कोहरा जहाँ छा जाता है वहाँ धर्म नहीं दिखता। साधु जीवन स्वीकार करें तो बहुत अच्छी बात है। यदि स्वीकार नहीं कर सकें तो श्रावक व्रतों की आराधना तो अवश्य करें। कमजोर मन जीवन को कमजोर बनाने वाला होता है। सच्चा श्रावक कल्याणमित्र होता है। सबका कल्याण चाहने वाला होता है।''**

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''गुरु तत्त्व देव और धर्म का प्रतिनिधित्व करता है। दुनिया के सर्वोच्च धर्म को छोड़कर लोग इधर-उधर नजर डाल रहे हैं। हमें सोचना है कि हम अपने धर्म एवं तीर्थंकर देवों के वचनों पर कितने स्थिर हैं? क्या बात माननी, किसकी बात माननी, कब माननी, यह ज्ञान उत्पन्न करें। उद्देश्य का बोध, मार्ग की जानकारी, लक्ष्य की जानकारी रखें।''

श्री गौरव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान का अंतिम चातुर्मास पावापुरी में हुआ। अनेक लोग भगवान की देशना सुनने के लिए उपस्थित हुए। वर्तमान समय में लोग अपने स्वार्थ में लगे रहते हैं। शासन दीपिका साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। प्रतिदिन दोपहर में महापुरुषों के सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी, जिज्ञासा-समाधान आदि कार्यक्रम हुए। भीलवाड़ा शिखर महोत्सव चातुर्मास धर्म, तप, आराधना के साथ अपनी मंजिल की ओर गतिमान है।

तपस्या सूची

परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.	6 उपवास
बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.	5 उपवास
श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा.	7 उपवास
श्री इभ्य मुनि जी म.सा.	अठाई (इस चातुर्मास में आठवीं अठाई)
श्री यत्नेश मुनि जी म.सा.	अठाई
साध्वी श्री रामचर्या श्री जी म.सा.	6 उपवास

दीपावली पर पूज्य संत-महासतीवर्याओं के 36 तेले

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	पुखराज जी मुकीम-जयपुर, मांगीलाल जी दक-भीम, चांदमल जी धाकड़-वल्लभनगर, सुंदरलाल जी दुगड़-मनेंद्रगढ़, झंवरलाल जी पारख-नोखा, विजय सिंह जी चंदू देवी बैद-जयपुर, माणकचंद जी चंदा देवी बैद-जयपुर, माणकचंद जी पुष्पा देवी सेठिया-कोलकाता, इंद्रा जी देशलहरा, तेजमल जी सुराणा-कंवलियास, सुनील जी कुसुम जी गुलगुलिया-बीकानेर, **नोखागाँव से-** भवानी सिंह जी भाटी, शैतान सिंह जी राठौड़, सत्यनारायण जी शर्मा, भंवरलाल जी सुथार, पुरखाराम जी मेघवाल
गाथा का स्वाध्याय	**डेढ़ लाख -** नथमल जी सुराणा-फारबिसगंज
पक्की नवकारसी	**365 -** सुनील जी जैन-गोलूवाला
	100 - सीमा जैन-जयपुर, सरोज मेहता-जयपुर, सुशीला जी सुराणा-अहमदाबाद, इंदिरा जी सुराणा, राजेंद्र जी रांका-चेन्नई
पक्की पोरसी	**100 -** सुशीला जी बुच्चा-बीकानेर
वर्षीतप	**चौथा -** रेखा जी गांधी-ब्यादरा
उपवास	**31 -** मोनिका जी सेठिया-भीलवाड़ा
	मासखमण - सुनीता जी भड़कतिया-कांकरोली
	15 - शीतल जी भूरा
	9 - अरुणा जी मेहता, सुमित्रा जी लालानी, सुषमा जी नाहर, लक्ष्मी जी पितलिया-गंगापुर, दिलीप जी बागमार, लक्ष्मी जी पितलिया-गंगापुर
	अठाई - संदीप जी संकलेचा, वर्धमान जी कटारिया, किरण जी सेठिया, सुरेश जी सेठिया-सूरत, मोतीलाल जी गोलछा, ऊषा जी पोसवालिया, संजय जी सकलेचा, विमला देवी भूरा, शांता देवी सकलेचा, अंजना जी पोखरना-बेगूँ

दीपावली पर श्रावक-श्राविकाओं में 201 से अधिक तेले

अन्य कई गुप्त तपस्याएँ जारी...

-महेश नाहटा

मुमुक्षु सुश्री हर्षाली जी कोठारी

संक्षिप्त परिचय

जन्म स्थान	:	केकड़ी (राज.)
मूल निवासी	:	ब्यावर (राज.)
जन्म दिनांक	:	26 दिसंबर 1995
व्यावहारिक शिक्षा	:	बी.टेक. (कम्प्यूटर साइंस)
धार्मिक अध्ययन	:	आरुग्गबोहिलाभं
धार्मिक शिक्षा	:	पुच्छिंसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र एवं श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के कुछ अध्ययन, कर्म प्रज्ञप्ति आदि
तपाराधना	:	तेला
संभावित दीक्षा तिथि	:	3 दिसंबर 2024

पारिवारिक परिचय

पड़दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री किस्तूरचंद जी-स्व. श्रीमती सुगनी बाई कोठारी स्व. श्री बस्तीमल जी-स्व. श्रीमती संतोष बाई कोठारी
बड़े दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री रूपचंद जी-स्व. श्रीमती सायर बाई कोठारी
दादाजी-दादीजी	:	स्व. श्री हीरालाल जी-स्व. श्रीमती प्रकाश बाई कोठारी
छोटे दादाजी-दादीजी	:	पन्नालाल जी-मैना बाई कोठारी
माताजी-पिताजी	:	ऊषा जी-अशोक जी कोठारी
चाचाजी-चाचीजी	:	जिनेंद्र जी-शालू जी कोठारी
भाई	:	आयुष जी, विहान जी कोठारी
भुआजी-फूफाजी	:	किरण जी-प्रमोद जी ढाबरिया
नानाजी-नानीजी	:	स्व. श्री मांगीलाल जी-स्व. श्रीमती कंचन देवी सोनी
मामाजी-मामीजी	:	रिखब जी-तारा बाई सोनी
मौसीजी-मौसाजी	:	भंवरी बाई-स्व. श्री उत्सवराज जी चौधरी, शांति बाई-स्व. श्री नौरतमल जी चौरड़िया, नीता जी-स्व. श्री प्रेमचंद जी कांठेड़, अंजू जी-पुखराज जी बाबेल, रेखा जी-सुरेंद्र जी बाफना
परिवार से दीक्षित	:	आचार्य श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. (अन्य संप्रदाय) स्मृतिशेष श्री दिव्यदर्शन जी म.सा. (अन्य संप्रदाय) साध्वी श्री विदेहप्रज्ञा जी म.सा. (अन्य संप्रदाय)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

संघ समर्पणा महोत्सव एवं 62वाँ संयुक्त वार्षिक अधिवेशन

भीलवाड़ा, 3-4 अक्टूबर 2024। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का 62वाँ संयुक्त वार्षिक अधिवेशन हर्षोल्लासपूर्वक अनेकानेक संघ उत्थान के निर्णयों एवं सेवा के क्षेत्र को बढ़ाने के संकल्पों के साथ संपन्न हुआ। दोनों दिवसों को आयोजित कार्यक्रम में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति व श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के केंद्रीय पदाधिकारियों के साथ-साथ मुख्य अतिथि, गौरवशाली वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय प्रवृत्ति संयोजक एवं सह-संयोजकगण, संयोजन मंडल, कार्यसमिति सदस्य, गणमान्य शिखर सदस्य, महाप्रभावक सदस्य, आजीवन एवं साधारण सदस्यों सहित श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा के सदस्यों व देशभर से पधारे हुए स्थानीय संघ अध्यक्ष-मंत्रीगण आदि शोभायमान थे।

प्रथम दिवस

श्री साधुमार्गी जैन महिला मंडल, भीलवाड़ा द्वारा सामूहिक मंगलाचरण के साथ दोपहर 11:45 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलाचरण पश्चात् राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा कार्यक्रम में पधारे हुए सभी पदाधिकारियों, मुख्य अतिथि राजेश जी रांका, भीलवाड़ा एवं सभी सभागतों का स्वागत किया गया। बालिका मंडल ने उपस्थित पदाधिकारियों एवं अतिथियों का तिलक लगाकर **'अतिथि देवो भवः'** की परिकल्पना को साकार किया।

राष्ट्रीय महामंत्री प्रगति प्रतिवेदन व उद्बोधन :

राष्ट्रीय महामंत्री ने अपनी भावाभिव्यक्ति में संघ समर्पणा दिवस एवं संयुक्त वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर पधारे हुए महानुभावों का स्वागत-अभिनंदन करते हुए सत्र 2023-24 एक वर्षीय कार्यकाल के प्रगति प्रतिवेदन में बताया कि गत एक वर्षीय कार्यकाल में 1 अंतरराष्ट्रीय संघ का गठन (यूरोप में), 112 संघों में प्रवास, 23 संघों की संघ आबद्धता, 4 शिखर सदस्य, 26 महाप्रभावक सदस्य, 3 प्रभावक सदस्य, 10 विहार सेवा संयोजन सदस्य बने हैं। इसी के साथ 348 महानुभावों ने इदं न मम सदस्यता हेतु स्वीकृति प्रदान की है। 950 से अधिक नए प्रोफेशनल्स का साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम से जुड़ाव, इसी प्रवृत्ति के अंतर्गत **'Brain Storming'** सेशन का बेंगलुरु में आयोजन, 291 पाठशालाओं में 6341 बच्चों व 571 अध्यापकों, धार्मिक परीक्षा बोर्ड की 43 श्रेणियों में 11 परीक्षाएँ एवं 28 केंद्रों पर 88 परीक्षाओं में सहभागिता, 321 परीक्षा केंद्रों पर 4126 व 3886 ऑनलाइन व 4000 से अधिक एक्टिविटी में श्रावक-श्राविकाओं आदि की सहभागिता रही। समता प्रचार संघ द्वारा इस वर्ष 2024 में फाल्गुनी पर्व पर 103 व पर्युषण पर्व पर 318 स्थानों पर सेवा प्रदान की गई। साहित्य के क्षेत्र में 23 नवीन साहित्यों का विमोचन किया गया एवं विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली सहित चातुर्मास स्थल पर स्टॉल आदि के माध्यम से साहित्य का प्रचार-प्रसार हुआ। आचार्य श्री नानेश समता मनीषी

अलंकरण वीरमाता शशिकला जी सेठिया (कोलकाता) को प्रदान किया गया। चातुर्मासिक स्थापना दिवस पर वैश्विक सामायिक दिवस की पूर्णता, महत्तम महोत्सव प्रकल्प के अंतर्गत समता समग्र आरोग्यम्, अपना घर आश्रम, बीकानेर में कार्यशाला का आयोजन, मोक्षार्थी शिविर, चित्तौड़गढ़ में अभिमोक्षम् शिविर, अभिरामम् पुस्तक का विमोचन, आदेश्वर डेंटल केयर, बीकानेर, राजस्थान हॉस्पिटल, जयपुर व सी.के. बिड़ला हॉस्पिटल, कोलकाता में ग्लोबल कार्ड धारकों को इलाज करवाने पर चिकित्सा व्यय में विशेष छूट, श्रीसंघ के अंतर्गत 7 समता भवन (3 पूर्ण, 3 प्रस्तावित एवं 1 निर्माणाधीन) आदि अनेकानेक उपलब्धियाँ विद्यमान हुई हैं।

राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन : राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने उपस्थित सदन के स्वागत, अभिनंदन पश्चात् कहा कि धन्य है ये धरा और धन्य हैं हम सभी, जिन्हें इस पंचम आरे में आचार्य भगवन् व उपाध्याय प्रवर का सान्निध्य मिला है। संसार की सबसे बड़ी यूनिवर्सिटी संतों का सान्निध्य है, जो हमें प्राप्त है। संतों का सान्निध्य हमें सरल, अनुशासित, मर्यादा, साहित्य, प्रभावना, जिनशासन के प्रति चेतना हेतु प्रेरित करता है और हमें जीना सिखाता है। आज हमारा संघ विशाल वटवृक्ष के रूप में लहलहा रहा है तो इसके पीछे सभी पूर्वाचार्यों, वर्तमान आचार्य प्रवर का आशीर्वाद, संस्थापकों, पूर्वाध्यक्षों एवं पूर्व पदाधिकारियों के कर्मरूपी सिंचन का मधुर फल है। आज के इस कार्यक्रम में हमारे मध्य मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित राजेश जी रांका का स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ।

मेरा सभी से अनुरोध है कि संघ सेवा अनुपम अवसर है, स्वविकास का मार्ग है। इससे अवश्य जुड़ें। मेरे अब तक के एक वर्षीय कार्यकाल में विशेष रूप से महामंत्रीजी, कोषाध्यक्षजी, सह-कोषाध्यक्षजी एवं कार्यकारिणी सदस्यों व महत्तम महोत्सव सहित सभी प्रवृत्तियों के संयोजकगणों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है। हमारी रुचि, ऊर्जा व क्षमता अनुसार हमसे जो कुछ भी बन सका, हमने इस संघ रूपी विशाल वटवृक्ष में आहुति के रूप में अर्पण किया है। हम अपने आपको धन्य मानते हैं कि हमें जिनशासन के गौरव को आगे बढ़ाने का स्वर्णिम अवसर और आप सभी का आशीर्वाद मिला। इस 1 वर्ष की संघ संगठन एवं समृद्धि यात्रा का विस्तृत विवेचन महामंत्रीजी ने आपके समक्ष प्रस्तुत किया। संघ की दो भुजाओं के रूप में समता युवा संघ व महिला समिति आचार्य भगवन् के प्रत्येक आयाम एवं संघ की प्रत्येक प्रवृत्ति को जन-जन तक पहुँचाने में संघ के साथ कदम से कदम मिलाकर पूर्ण मनोयोग से लगे हुए हैं। उन्हें भी साधुवाद ज्ञापित करते हैं। संघ समर्पणा महोत्सव में पधारे धर्मप्रेमी बंधुओं का श्री अ.भा.सा. जैन संघ की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूँ।

मुख्य अतिथि सम्मान एवं उद्बोधन : मुख्य अतिथि राजेश जी रांका (अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मॉडर्न वुलंस, भीलवाड़ा) के उद्बोधन से पूर्व **'अतिथि देवो भवः'** के ध्येय वाक्य को परिकल्पित करते हुए आपका शॉल, माला, मोमेंटो प्रदान कर संघ प्रमुखों द्वारा शानदार अभिनंदन किया गया। आपने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा संघ स्थापना दिवस कार्यक्रम में आमंत्रित कर संघ ने मुझे जो सम्मान दिया है, उससे मन हर्षित, प्रफुल्लित एवं अभिभूत है। युवा कार्यकर्ताओं को मेरा विशेष सुझाव है कि हम काफी बार यह सुनते हैं या पढ़ते हैं कि फलां व्यक्ति ने इतने कम समय में उच्च मुकाम प्राप्त किया है, लेकिन हजारों में वह एक ही उदाहरण होता है। आप सभी भी यही आशा रखते हैं कि आप भी वहाँ पहुँचें, लेकिन वह संभव तभी हो सकता है जब निरंतर पुरुषार्थ, ईमानदारी से अपना शत-प्रतिशत प्रयास हो। तभी आशा अनुरूप परिणाम आज नहीं तो कल अवश्य प्राप्त हो सकते हैं। आप सभी ने इस प्रांगण में मुझे जो सम्मान प्रदान किया है उसके लिए आपको हार्दिक साधुवाद एवं आभार ज्ञापित करता हूँ। संघ सेवा के किसी भी अवसर के लिए मैं किसी भी

प्रकार के सहयोग हेतु सदैव उपस्थित हूँ।

महाप्रभावक सदस्यों का सम्मान : संघ सदस्यता के क्रमविन्यास में महाप्रभावक सदस्यता का विशिष्ट व सम्मानपूर्ण स्थान है। महाप्रभावक सदस्यता ग्रहण करना अपने आप में संघ के प्रति असीम निष्ठा एवं समर्पणा का प्रतीक है। सदस्यता प्राप्ति हेतु स्वेच्छा से स्वीकृति देकर दानवीर महानुभावों ने मुक्तहस्तता व उदारता का भी परिचय दिया है। उपरोक्त सदस्यता हेतु 11 लाख रुपए की राशि एकमुश्त अथवा पाँच वर्ष की अवधि में प्रदान की जाती है। विगत 30 सितंबर 2023 से 15 सितंबर 2024 तक महाप्रभावक सदस्यता का गौरव प्राप्त करने वाले राजमल जी पंवार (कानवन), कमला देवी कोठारी (बेंगलुरु), कुसुम देवी टंच (बदनावर) का एवं कमल जी बैद (मुंबई), संतोष देवी मोदी (भिलाई), विजय कुमार जी गोलछा (बीकानेर), मनोरमा देवी बैद (रायपुर) की अनुपस्थिति में उनके परिजनों एवं संबधित संघ प्रमुखों का शानदार अभिनंदन मुख्य अतिथि राजेश जी रांका, शिखर सदस्य, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष/मंत्री, समता युवा संघ एवं महिला समिति के राष्ट्रीय अध्यक्षगण, महामंत्रीगण द्वारा अभिनंदन पत्र, बैज, शॉल व माला द्वारा किया गया।

संघ द्वारा प्रदत्त विभिन्न पुरस्कार : राष्ट्रीय महामंत्री ने सदन को बताया कि विगत वर्ष में संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर संघ द्वारा सदैव की भाँति श्रेष्ठ प्रतिभाओं को सम्मानित करने के क्रम में निम्न पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं -

1. **श्रेष्ठ प्रवृत्ति सम्मान** - धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति
2. **श्रेष्ठ तप अलंकरण सम्मान** - विजय कुमार जी सांड, देशनोक
3. **श्रेष्ठ दानपेटी सम्मान** -
   - प्रथम - श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु
   - द्वितीय - श्री साधुमार्गी जैन संघ, रायपुर
   - तृतीय - श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत
   - श्रेष्ठ दानपेटी अंचल सम्मान - छत्तीसगढ़-ओड़िसा अंचल
4. **श्रेष्ठ संगठनात्मक कार्यकौशल सम्मान** - दानपेटी प्रवृत्ति
5. **श्रेष्ठ विद्यार्थी सम्मान** - आगम रांका, समता संस्कार पाठशाला, खिरकिया
6. **श्रेष्ठ अध्यापक सम्मान** - विटू जी गुरलिया, समता संस्कार पाठशाला, बेंगलुरु
7. **श्रेष्ठ पाठशाला सम्मान** - समता संस्कार पाठशाला, नोखा
8. **श्रेष्ठ आयोजन पुरस्कार** - श्री साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़ (अभिमोक्षम्)
9. **श्रेष्ठ गुणवत्ता शिविर** - श्री साधुमार्गी जैन संघ, हैदराबाद (उन्नयन)
10. **बाल प्रतिभा सम्मान** - टीआ नागौरी, बड़ौदा
11. **बाल तपस्वी सम्मान** - पुलकित टांटिया, अर्जुनी
12. **उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता सम्मान** - अतुल जी पगारिया, जावरा
13. **श्रेष्ठ जैन संस्कार पाठ्यक्रम कार्यकर्ता सम्मान**-
    - प्रेमलता जी जैन - बेंगलुरु
    - मिनाक्षी जी जैन, रायपुर
    - जेठमल जी सांखला, रायपुर
14. **श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान** - श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा

आभार अभिव्यक्ति : कार्यक्रम के अंत में श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा के अध्यक्ष द्वारा कार्यक्रम में पधारे हुए सभी महानुभावों का आभार ज्ञापित किया गया।

द्वितीय दिवस

भीलवाड़ा, 4 अक्टूबर 2024। संघ समर्पणा महोत्सव एवं 62वें संयुक्त राष्ट्रीय अधिवेशन का द्वितीय सत्र दोपहर 11:45 बजे आयोजित किया गया।

सामूहिक संगान के साथ मंगलाचरण हुआ। राष्ट्रीय महामंत्री ने मंच संचालन करते हुए कार्यक्रम में देश-विदेश से पधारे हुए सभी भाई-बहिनों का श्रीसंघ की ओर से स्वागत अभिनंदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्बोधन : राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने इस विशेष कार्यक्रम में पधारे विशिष्ट महानुभावों, गणमान्य संघ सदस्यों सहित सभी का भावाभिनंदन करते हुए कहा कि आज के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजेश जी रांका एवं विशिष्ट अतिथि महावीर जी चौधरी का संघ की ओर से विशेष स्वागत-अभिनंदन करता हूँ। सन् 1962 में आचार्य श्री गणेशलाल जी म.सा. ने उदयपुर में आचार्य श्री नानेश को युवाचार्य पद प्रदान किया था। तब इस श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ का उद्भव हुआ था। उस स्थापना काल में जो भी सदस्य उपस्थित थे वे धन्य हैं। उन सभी विशिष्टजनों ने इस संघ को तन-मन-धन से सींचा है, जिसकी शीतल छाँव में हम सभी आज आनंद मना रहे हैं। 62 वर्ष पूर्व संघ प्रथम अध्यक्ष श्री छगनलाल जी बैद के अभिभाषण के कुछ बिंदु आप सभी के समक्ष रखे। उन्होंने जो स्वप्न देखा, उनका जो चिंतन था वह आज हम सभी के समक्ष विशाल संघ के रूप में प्रस्तुत है। सभी संस्थापकों, पूर्व पदाधिकारियों व सदस्यों को नमन और अभिनंदन, जिन्होंने इस संघ को गौरवान्वित किया है।

विशिष्ट अतिथि सम्मान एवं उद्बोधन : कार्यक्रम के अगले क्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में पधारे महावीर जी चौधरी (निदेशक JATF) का संघ के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, वर्तमान अध्यक्ष एवं शिखर सदस्य सहित पदाधिकारियों द्वारा शॉल, माला व मोमेंटो प्रदान कर अभिनंदन किया गया। अभिनंदन पश्चात् विशिष्ट अतिथि महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि जब मुझे सम्माननीय राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने संघ समर्पणा दिवस के बारे में जानकारी दी, तब मन हर्षित एवं भावविभोर हो गया। आप सभी एवं संघ का हृदय से आभार, जिन्होंने मुझे दिल से अपनाया है। उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा से जीतो की पूरे भारतवर्ष की संपूर्ण शाखाओं में वर्ष में एक दिन सामूहिक नवकार मंत्र का जाप करने की घोषणा करता हूँ। यह सब हम श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के नेतृत्व में करना चाहते हैं। इस दिन सभी कार्यों में संगठन के सहयोग की आवश्यकता रहेगी। मैं संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी एवं उनकी टीम को साधुवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने इस संघ की गति को पंख दिए हैं और आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस विकास यात्रा को आप सभी अविरल बनाए रखेंगे। पुनः आप द्वारा प्रदत्त स्नेह व सम्मान के लिए आभार, अभिनंदन।

महिला समिति राष्ट्रीय अध्यक्षा उद्बोधन : श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति की राष्ट्रीय अध्यक्षाजी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संगठन के अंतर्गत 21 नए मंडलों का गठन, 94 प्रतिनिधि क्षेत्रों का गठन, केसरिया कार्यशाला, युवती शक्ति, खुशियों का पिटारा, वुमन्स मोटिवेशनल फोरम, परिवारांजलि सहित अनेक प्रवृत्तियाँ का महिला समिति संचालन कर रही है। आपने **'सज्झायम्मि रओ सया'** की विस्तृत जानकारी सभा में दी।

महिला समिति द्वारा प्रदत्त पुरस्कारों की शृंखला : महिला समिति की राष्ट्रीय महामंत्री ने वीडियो क्लिप के माध्यम से महिला समिति के अंतर्गत संचालित प्रवृत्तियों एवं विगत 1 वर्ष का प्रगति प्रतिवेदन सदन के समक्ष रखा। आपने बताया कि विगत वर्ष में महिला समिति ने विभिन्न प्रवृत्तियों की प्रभावना एवं क्रियान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का प्रयास किया है। इस प्रयास में कई श्राविकाओं ने अपना श्रेष्ठतम योगदान दिया है। राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को आज के इस पावन अवसर पर सम्मानित किया जा रहा है -

1. **श्रेष्ठ महिला रत्ना** – संगीता जी पितलिया, हैदराबाद
2. **विशिष्ट शासन प्रभाविका** – सुमन जी छाजेड़, हावड़ा

3. **श्रेष्ठ तपस्वी** – लीला कँवर जी कोठारी, ब्यावर
4. **श्रेष्ठ शासन सेविका** – शांति बाई पारख, रायपुर
5. **विशिष्ट तपस्वी** – ज्ञानी देवी भूरा, करीमगंज
6. **श्रेष्ठ महिला स्वाध्यायी** – कीर्ति जी डागा, खरियार रोड, सुश्री स्नेहा जी मुणत, रतलाम
7. **श्रेष्ठ समता महिला मंडल** – सेलंबा (उभरता सितारा), सवाई माधोपुर (गागर में सागर), जगदलपुर (कौशल संपन्न), बिलासीपाड़ा (वीर भूमि), संगरिया मंडी (संस्कार क्रांति), भीलवाड़ा (आध्यात्मिक धरा)

समता युवा संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष उद्‌बोधन : समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि इस संघ समर्पणा महोत्सव पर हम सभी उपस्थित हैं, जिससे मन हर्षित एवं आनंद विभोर हो रहा है। हम सभी की उपस्थिति के पीछे कहीं न कहीं हमारा संघ से जुड़ाव, संघ के प्रति समर्पण एवं अहोभाव कारक तत्त्व हैं। समता युवा संघ आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों और संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना में अपना भरपूर सहयोग प्रदान कर नित नई ऊँचाइयाँ छू रहा है। उत्क्रांति, समता शाखा, धार्मिक प्रतियोगिताओं, व्यसनमुक्ति कार्यक्रम, राष्ट्रीय व आंचलिक शिविर सहित यथावसर अन्य अनेकानेक क्रियाकलापों के माध्यम से संघ सेवा का लक्ष्य रहता है। सौभाग्य से यह अवसर प्राप्त हो रहा है। मैं सभी को सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

समता युवा संघ द्वारा प्रदत्त पुरस्कार : समता युवा संघ के राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा वीडियो क्लिप के माध्यम से वर्ष 2023-24 में समता युवा संघ द्वारा संपादित विविध कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया। समता युवा संघ द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निम्न पुरस्कार प्रदान किए गए -

1. **शासन गौरव सम्मान** – मुकेश जी पिपाड़ा, अहमदाबाद
2. **समता युवारत्न** – विशाल जी बाँठिया, भीनासर
3. **श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद्)** – समता युवा संघ, सूरत
4. **श्रेष्ठ समता युवा संघ (लघु)** – समता युवा संघ, मंडिया
5. **श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान** – समता युवा संघ, भीलवाड़ा
6. **श्रेष्ठ संगठन सम्मान** – समता युवा संघ, बालोद
7. **श्रेष्ठ स्वाध्यायी पुरस्कार** – सौरभ जी संघवी, इंदौर, प्रतीक जी लोढ़ा, खेतिया

पुरस्कार शृंखला के पश्चात् साधुमार्गी प्रोफेशनल फोरम के संयोजन मंडल सदस्य एवं नो एंड ग्रो प्रवृत्ति के संयोजक ने प्रवृत्ति संदर्भित विवेचन सभा के समक्ष प्रस्तुत किया।

आभार अभिव्यक्ति एवं समापन : संघ के राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष द्वारा अधिवेशन को सफल बनाने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी महानुभावों, देशभर से पधारे हुए आगंतुकों का आभार ज्ञापित किया गया। तदुपरांत संघ समर्पणा गीत के सामूहिक गान के साथ संघ समर्पणा महोत्सव का समापन हुआ।

– राष्ट्रीय महामंत्री

जिन्होंने जिनवर भगवान के चरणों में उपासना की, उन्होंने षट्दर्शनों की आराधना की यानी जिसने किसी भी तीर्थंकर के चरणों की आराधना की उसने षट्दर्शन की आराधना कर ली। दुनिया में जितने मत-मतांतर और जितनी भाषाएँ प्रचलित हैं, वे अपनी दृष्टि से एकांत दृष्टि में आती हैं, उनसे मिथ्यात्व की दृष्टि में पहुँच सकते हैं। परंतु जैन धर्म ही ऐसा धर्म है जो ग्रहण करने की दृष्टि से, सापेक्ष दृष्टि से सम्यक्त्व के रूप में ग्रहण करता है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

कार्यसमिति बैठक व आमसभा संपन्न

भीलवाड़ा, 3-4 अक्टूबर 2024। श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति एवं श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ की कार्यसमिति बैठकें तथा विशेष आमसभा का आयोजन भीलवाड़ा की पावन धरा पर सम्पन्न हुई।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की सत्र 2023-25 की चतुर्थ कार्यसमिति बैठक रात्रि 7:30 बजे से होटल ओरिका रिसॉर्ट में संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सामूहिक मंगलाचरण पश्चात् संघ के राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा विगत कार्यसमिति बैठक का कार्यवृत्त सभा के पटल पर अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया गया, जिसे सम्पूर्ण सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। इसी के साथ विभिन्न सदस्यताओं पर स्वीकृति एवं विगत दो माह में हुई संघ प्रवृत्तियों, आयामों का प्रगति प्रतिवेदन एवं केन्द्रीय पदाधिकारियों के प्रवास की विभिन्न उपलब्धियों का विवरण भी प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश, एवं जयपुर-ब्यावर अंचल के उपाध्यक्ष/मंत्री द्वारा प्रेषित प्रतिवेदन भी सभा में प्रस्तुत किया गया। महत्तम महोत्सव के राष्ट्रीय संयोजक द्वारा अभिरामम् पुस्तक को घर-घर पहुँचाने हेतु अधिकाधिक प्रभावना करने का निवेदन किया गया। दानपेटी, धर्मपाल प्रवृत्ति के संयोजकों द्वारा प्रेषित रिपोर्ट से सदन को अवगत कराया गया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी ने वित्तीय वर्ष 2023-24 का अंकेक्षित तुलन पत्र (Audited Balance Sheet) अनुमोदन हेतु सभा में रखी, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया। सह-कोषाध्यक्षजी द्वारा donor.sadhumargi.com पोर्टल लॉन्च कर समस्या व सुझाव भेजने हेतु हेल्पलाइन व्हॉट्सऐप नंबर **853 58 58 853** की जानकारी दी गई।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में संघ सशक्तिकरण एवं संगठन सुदृढ़ता पर विशेष बल देते हुए महत्तम महोत्सव, अभिरामम् व अन्य प्रवृत्तियों में सभी की सक्रिय भागीदारी हेतु निवेदन किया।

सभा के अंत में समस्त सदन द्वारा विगत समय में देवलोकगमन हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष द्वारा आभार अभिव्यक्ति पश्चात् संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के साथ सभा का समापन हुआ।

वार्षिक आमसभा :

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में 4 अक्टूबर 2024 को भीलवाड़ा में दोपहर 2:30 बजे से आयोजित वार्षिक आमसभा मंगलाचरण व संकल्प सूत्र वाचन के साथ प्रारंभ हुई। सभा में केन्द्रीय पदाधिकारियों के साथ शिखर सदस्य, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष, अनेक पूर्व व वर्तमान पदाधिकारियों सहित सदस्यों की गरिमामय उपस्थित रही।

राष्ट्रीय महामंत्री द्वारा स्वागत उद्बोधन पश्चात् विगत आमसभा (16 अक्टूबर 2023 को नीमच में सम्पन्न) का कार्यवृत्त सदन में प्रस्तुत कर अनुमोदना प्राप्त

की गई। इसी कड़ी में गत वर्ष की प्रगति रिपोर्ट को पीपीटी के माध्यम से सदन में प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष जी ने वित्तीय वर्ष 2023-24 का अंकेक्षित तुलन पत्र (Audited Balance Sheet) सदन में रखा, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया। कार्यसमिति बैठकों में पारित/अनुमोदित प्रस्ताव भी पुष्टि हेतु सदन के पटल पर रखे गए, जिन पर भी अनुमोदना प्राप्त हुई।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि हम गौरवान्वित हैं कि हम साधुमार्गी जैन संघ के सदस्य हैं। इस भौतिक युग में भी संघ संस्कार निर्माण की ओर प्रतिबद्ध है। संघ द्वारा महत्तम महोत्सव, समता संस्कार पाठशालाओं, शिविरों, जैन संस्कार पाठ्यक्रम के माध्यम से संस्कार निर्माण के महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं। आप सभी इस प्रकार की सभी प्रवृत्तियों से जुड़ें और औरों को भी प्रेरित करें। इस समर्पणा महोत्सव से प्रण लें कि हम सभी संघ की किसी न किसी प्रवृत्ति, आयाम से जुड़ने का, संघ समर्पणा से सहयोग प्रदान करने का लक्ष्य रखेंगे।

कार्यक्रम के अंत में विगत वर्ष में देवलोकगमन हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान किया गया। आभार अभिव्यक्ति व संघ समर्पणा गीत की पंक्तियों के सामूहिक गान सहित आमसभा का समापन हुआ।

- राष्ट्रीय महामंत्री

संघ विकास - सर्वांगीण विकास

संयुक्त बैठक एवं महत्तम शिखर सम्मेलन में आगामी रूपरेखा पर विचार मंथन

भीलवाड़ा, 2 अक्टूबर 2024। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के सभी अंचलों के स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्रियों एवं क्षेत्रीय प्रतिनिधियों की संयुक्त बैठक **'संघ विकास - सर्वांगीण विकास'** का आयोजन दोपहर 11:45 बजे एवं सायं 7:30 बजे महत्तम शिखर सम्मेलन का आयोजन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में ओरिका रिसोर्ट में किया गया।

'संघ विकास - सर्वांगीण विकास' संयुक्त बैठक का शुभारंभ सामूहिक मंगलाचरण से हुआ। बैठक में देशभर से पधारे स्थानीय संघ अध्यक्ष/मंत्रीगणों की समस्याओं व नवीन विचारों पर सार्थक चर्चा की गई। महत्तम महोत्सव पर प्रस्तुत की गई अनेक जिज्ञासाओं का समाधान महत्तम महोत्सव संयोजकजी ने प्रदान किया। सभा के अंत में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने अपने सम्बोधन के माध्यम से मार्गदर्शन दिया।

सायं 7:30 बजे आयोजित महत्तम शिखर सम्मेलन में महत्तम महोत्सव संयोजकजी द्वारा कार्यों की समीक्षा एवं प्रगति रिपोर्ट पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत की गई। आपने **'अभिरामम्'** पुस्तक की जानकारी देते हुए बताया कि इस पुस्तक को सभी अंचलों में भिजवाने का कार्य गतिमान है। आप सभी अपने-अपने संघों सहित अन्य स्थानों पर भी अभिरामम् की अधिकाधिक प्रभावना करें ताकि महत्तम शिखर महापुरुष के व्यक्तित्व से जन-जन लाभान्वित हो सकें।

- राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

सत्र 2023–25 की चतुर्थ राष्ट्रीय कार्यसमिति बैठक संपन्न

भीलवाड़ा, 3 अक्टूबर 2024। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष की अध्यक्षता में महिला समिति की चतुर्थ कार्यसमिति बैठक सोना रिसोर्ट में आयोजित की गई। परमागम रहस्यज्ञाता परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचानाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन के साथ मंगलाचरण पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्षाजी ने संकल्प सूत्र का वाचन करवाया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यकारिणी मीटिंग की रिपोर्ट सदन में प्रस्तुत कर स्वीकृति प्राप्त की।

संगठन अंचल संयोजिका ने रिपोर्ट प्रस्तुत कर **'जिया कब तक उलझेगा'** गतिविधि, संघ सुस्वागतम् के अंतर्गत हुए पंजीकरण एवं एक वर्ष में महिला मंडल एवं रिप्रेजेंटेटिव आदि के जुड़ने की जानकारी सभा में दी एवं स्थानीय स्तर पर मंडल लगाने का आग्रह किया। वुमन्स मोटिवेशनल फोरम के अंतर्गत जुलाई, अगस्त, सितंबर माह में हुए कुल रजिस्ट्रेशन एवं Sustainable living, Alert today Bright Tomorrow, Goal Setting गतिविधि के बारे में बताया।

युवती शक्ति सह-संयोजिका, केसरिया कार्यशाला संयोजिका, परिवारांजलि संयोजिका, समता छात्रवृत्ति योजना संयोजिका, अंतरराष्ट्रीय संयोजिका, प्रतिक्रमण सह-संयोजिका, रिपोर्टिंग संयोजिका आदि ने भी अपनी-अपनी प्रवृत्तियों का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सभा को प्रवृत्ति की अभिवृद्धि से अवगत कराया।

सभी उपाध्यक्ष-मंत्री द्वारा अपने अंचल में चल रही विभिन्न गतिविधियों की जानकारी त्रैमासिक रिपोर्ट में प्रस्तुत की। इसमें मेवाड़ अंचल में स्वर्ण कुंभ शिविर सहित अंचल में 50 शिविर लगने, बीकानेर मारवाड़ अंचल में 5 नए मंडल एवं 5 क्षेत्र गठन, जयपुर-ब्यावर अंचल में प्रवास एवं स्वर्ण कुंभ शिविर आदि की जानकारी दी। मध्य प्रदेश अंचल, छत्तीसगढ़ अंचल, कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल, मुंबई-गुजरात अंचल, महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल, बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल की रिपोर्ट में प्रवृत्तियों के उन्नयन एवं जैन सिद्धांत बत्तीसी कंठस्थ करने, विभिन्न तपस्याओं एवं अभिमोक्षम्-2 आदि की जानकारी सभा में प्रस्तुत की।

वार्षिक आमसभा

भीलवाड़ा, 3 अक्टूबर 2024। परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं सभी चारित्रात्माओं के चरणों में वंदन पश्चात् राष्ट्रीय अध्यक्षाजी द्वारा साधुमार्गी संकल्प सूत्र का वाचन करवाया गया। तत्पश्चात् राष्ट्रीय

महामंत्री ने पधारी हुई सभी सदस्याओं का भावाभिनंदन करते हुए विगत आमसभा की रिपोर्ट स्वीकृति हेतु सदन के पटल पर रखी, जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा द्वारा 1 अप्रैल 2023 से 31 मार्च 2024 तक का आय-व्यय विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसे संपूर्ण सदन ने सर्वानुमति से पारित किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षाजी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य भगवन् ने 4 सितंबर के प्रवचन में फरमाया कि संपूर्ण संघ में 26 आगम स्वाध्याय प्रतिदिन हो। इसका शुभारंभ कार्तिक शुक्ल पंचमी (6 नवंबर) को **'सज्झायम्मि रओ सया'** अर्थात् **'स्वाध्याय में सदा रत रहें'** नाम से किया जाएगा। इसे चार जोन में विभाजित किया गया है (इसकी विस्तृत जानकारी 29-30 अक्टूबर के श्रमणोपासक अंक के पेज नं. 6 पर प्रकाशित है)। इसमें सकल जैन समाज को जोड़कर संपूर्ण देश में धर्म का परचम लहराया जाएगा। इसी तरह 20 अक्टूबर को आचार्य भगवन् के 25वें पदारोहण दिवस पर आयोजित आयंबिल दिवस पर 5000 आयंबिल करवाने का लक्ष्य रखा गया है एवं भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर 2100 तेले का आह्वान किया गया। इसी के साथ आगामी शिविरों में अधिकाधिक बच्चों के रजिस्ट्रेशन करवाने एवं फरवरी 2025 तक अपने सभी पारिवारिवाक कार्यक्रम स्थगित रखकर महत्तम शिखर वर्ष को सफल बनाने में सहयोग करने की अपील की।

पूर्व अध्यक्षाओं ने मार्गदर्शन देते हुए कहा कि जब भी गुरु भगवन् एवं चारित्रात्माओं के समक्ष उपस्थित हों तो अपने सिर पर पल्लू अवश्य रखें। यह चारित्रात्माओं का सम्मान है। राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, मंत्री ने अनुरोध किया कि आचार्य श्री श्रीलाल उच्च शिक्षा ब्याजमुक्त ऋण योजना प्रत्येक साधुमार्गी परिवार के लिए है। इसकी अधिकाधिक प्रभावना करें।

निवर्तमान महामंत्री ने महिलाओं की गरिमामय भूमिका के बारे में विवेचन करते हुए कहा कि भगवान ऋषभदेव के काल में ब्राह्मी लिपि का प्रादुर्भाव हुआ, जो महिला थी एवं 16 सतियाँ भी महिलाओं की विशिष्टता का प्रत्यक्ष उदाहरण है। गुरुकृपा से हमें मिसाल बनकर 9 फरवरी तक आने वाले सभी दिनों को स्वर्णिम बनाना है। आप सभी जुट जाएँ।

वर्तमान में एक शिकायत प्रायः हर क्षेत्र में सुनने में आती है। वह शिकायत यह है कि आज व्यक्ति धर्म से अलग होता जा रहा है। धर्म के प्रति उसका लगाव कम पड़ता जा रहा है, पर इसका कारण शायद ही कोई ढूँढ़ पाया है कि व्यक्ति धर्म से दूर क्यों हटा है? कारण अनेक हैं, एक नहीं और हर व्यक्ति एक ही प्रकार के कारण से धर्म से दूर नहीं होता। अलग-अलग व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न कारण हो सकते हैं। मुख्य कारण यह है कि जो धार्मिक हैं, उन्होंने धर्म को समझा ही नहीं। बड़े-बड़े धुरंधरों से पूछ लो तो वे कहेंगे धर्म पँगू है। उसे धक्का देने वाला, चलाने वाला चाहिए। धर्म को चलाना पड़ता है या वह स्वयं चलता है? आप सोचेंगे क्या जवाब दें! यदि आपका जवाब यह है कि धर्म को चलाना पड़ता है, धर्म पँगू है तो युवा विचार करेंगे कि जो स्वयं पँगू है, दूसरों के सहारे चलता है उसका सहारा क्यों लिया जाए? पँगू के सहारे से क्या प्राप्त होगा? वस्तुतः हमने धर्म को समझा ही नहीं। धर्म की जो तेजस्विता है, उसे हम ग्रहण नहीं कर पा रहे। केवल ऊपरी तौर पर धर्म का लिबास ओढ़े हुए हैं। हम धर्म की चादर ओढ़ते जरूर हैं, पर धर्म की तेजस्विता को स्वीकार नहीं कर पाते। जिन्होंने धर्म की तेजस्विता का अनुभव कर लिया, वे चाहते हैं कि उसमें कहीं भंग नहीं पड़ना चाहिए। संबंध ऐसा जुड़ जाए कि बीच में व्यवधान न रहे।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

क्र.	पुरस्कार	पुरस्कार प्राप्तकर्ता	शहर	प्रवृत्ति	अंचल
1.	**श्रेष्ठ प्रोत्साहन**	अंजना जी पोखरना	बेगूँ		मेवाड़
		आशा जी सेठिया	मुंबई		मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
2.	**श्रेष्ठ रिपोर्टर**	प्रियंका जी कोठारी	उदयपुर		मेवाड़
		डिंपल जी देशलहरा	गुंडरदेही		छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		जया जी भूरा	मुंबई		मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
3.	**श्रेष्ठ वक्ता (Speaker)**	चेतन शिखर जी जैन	पुणे		महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश
4.	**श्रेष्ठ युवी**	महिमा जी सुराणा	बेरला		छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		वंशिका जी गुणधर	दल्लीराजहरा		छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		हर्षा जी कांकरिया	बेंगलुरु	युवती शक्ति	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश
5.	**स्वर्ण कुंभ प्रभाविका**	ज्योति जी नलवाया	बंबोरा	संगठन	मेवाड़
6.	**अंचल संयोजिका**	ममता जी छाजेड़	गीदम	संगठन	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		आशा जी मूलावत	भीलवाड़ा	संगठन	मेवाड़
		वीणा जी सुराणा	नागपुर	संगठन	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
		माया जी पारख	दुर्ग	परिवारांजलि	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		सपना जी जैन	लूणकरणसर	परिवारांजलि	बीकानेर-मारवाड़
		साधना जी जैन	जयपुर	केसरिया कार्यशाला	जयपुर-ब्यावर
		आरती जी जारोली	लसड़ावन	केसरिया कार्यशाला	मेवाड़
		प्रीति जी जैन	नोखा	केसरिया कार्यशाला	बीकानेर-मारवाड़
		अंजलि जी ओस्तवाल	राजनांदगाँव	केसरिया कार्यशाला	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		निधि जी जैन	हैदराबाद	सा. वुमन्स मोटिवेशनल फोरम	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश
		रीना जी नाहटा	सूरत	सा. वुमन्स मोटिवेशनल फोरम	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
		अमृता जी मालू	चेन्नई	सा. वुमन्स मोटिवेशनल फोरम	तमिलनाडु
		रोज़ी जी सेठिया	कोलकाता	सा. वुमन्स मोटिवेशनल फोरम	बिहार-बंगाल-नेपाल-भूटान
7.	**अंतरराष्ट्रीय संयोजिका**	स्वाति जी जैन	दुबई		अंतरराष्ट्रीय

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

सत्र 2022–24 की अष्टम कार्यसमिति बैठक संपन्न

भीलवाड़ा, 3 अक्टूबर 2024। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में सत्र 2022-24 की अष्टम कार्यसमिति सभा का आयोजन सोना रिसोर्ट में किया गया। मेवाड़ अंचल उपाध्यक्ष द्वारा मंगलाचरण पश्चात् विगत समय में देवलोक हुई चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का ध्यान संपूर्ण सदन द्वारा किया गया। समता युवा संघ, भीलवाड़ा के अध्यक्ष ने पधारे हुए सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों का भावाभिनंदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने सभी का आत्मीय स्वागत करते हुए अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि इस सत्र की यह आखिरी बैठक है। लगभग 2 वर्ष का यह कार्यभार मुझे एवं आप सभी को सौंपा गया था। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की महत्ती कृपा, आप सभी के अप्रतिम सहयोग, समर्पणा व गुरुभक्ति से हमने अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। हम सभी एक ताजा दृष्टिकोण के साथ संघ को प्रगति पथ पर ले जाने के लिए उच्च विचारों के साथ आगे बढ़े और निश्चित रूप से सफलता प्राप्त की। जैसा कि श्री हर्षित मुनि जी म.सा. फरमाते हैं कि हमें खुद को हर उपलब्धि के लिए प्रोत्साहित करते रहना चाहिए। साथियो! हमारा यह संघ हमें गुरु भाई देता है। हमें अपने पारिवारिकजन के अलावा एक परिवार प्रदान करता है। हुक्मसंघ के नवम पट्टधर का अतिशय न केवल इस समाज में अपितु जैन-जैनेतर सहित सकल समाज के हृदय में चमक रहा है। श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने आह्वान किया था कि हमारे जीवन में एक न एक संत-सतीजी होने चाहिए, जो यह कहें कि मेरी दीक्षा में ये सहयोगी बने। हम **संयम शतम** में जितना पुरुषार्थ दें उतना कम हैं। आपके ओजस्वी विचारों से सभा में एक नया जोश भर गया।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत कार्यकारिणी सभा का विवरण सदन के समक्ष प्रस्तुत किया, जिसे संपूर्ण सदन ने सर्वानुमति से पारित किया। युवा संघ का त्रैमासिक प्रगति प्रतिवेदन पी.पी.टी. के माध्यम से प्रस्तुत किया।

वित्तीय वर्ष 2023-24 के आय-व्यय का लेखा प्रस्तुतिकरण राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष ने किया। सभा ने इस विवरण को एक स्वर में अनुमोदित किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं सह-कोषाध्यक्ष द्वारा वर्ष 2024 के वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा की गई।

आगामी विभिन्न कार्ययोजनाओं पर विचार-विमर्श एवं समता युवा संघ, भीलवाड़ा के मंत्री द्वारा आभार ज्ञापित करने के पश्चात् **'तेरे पावन चरणों में'** गीत की मधुर स्वरलहरी व जयकारों के साथ सभा संपन्न हुई।

46वाँ वार्षिक अधिवेशन एवं वार्षिक आमसभा

भीलवाड़ा, 3 अक्टूबर 2024। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ का 46वाँ वार्षिक अधिवेशन एवं वार्षिक आमसभा गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्षजी की अध्यक्षता में होटल सोना रिसोर्ट में संपन्न हुई। सभा के प्रारंभ में पदाधिकारियों को मंचासीन करने के पश्चात् मेवाड़ अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष द्वारा मंगलाचरण एवं विगत समय में दिवंगत चारित्रात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप 4-4 लोगस्स का सामूहिक ध्यान किया गया। समता युवा संघ, भीलवाड़ा के अध्यक्ष ने सभी का भावाभिनंदन किया।

राष्ट्रीय अध्यक्षजी ने परम पूज्य आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के प्रति अहोभाव प्रकट करते हुए अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि हम सबके रोम-रोम में बसने वाले, जैन धर्म के अद्वितीय रहस्यों का बोध कराने वाले परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् की महिमा का बखान अशक्य है। आज इस मंच पर आप सबके साथ गौरवानुभूति व सफलता का अनुभव हो रहा है। परम उपकारी गौरवशाली संघ की मजबूत इकाई समता युवा संघ की सेवा का अवसर मुझ जैसे जमीनी कार्यकर्ता को प्रदान किया गया और हम सभी ने 'No Name - No Blame' के सिद्धांत पर निःस्वार्थ सेवा भाव के साथ कीर्तिमान स्थापित किए। यह हमारा सौभाग्य है कि हमें यह अपूर्व अवसर मिला। इसी प्रकार संघ उत्थान में सदैव संलग्न रहें। इस कार्यकाल की शुरुआत में महत्तम महोत्सव को समक्ष रखकर हमने जो संकल्प लिया था, वह संकल्प पूर्णता का अवसर आ गया। आचार्य भगवन् के उत्कृष्ट संयमी जीवन के 50 वर्षों को अब महत्तम महोत्सव के शेष बचे 50 दिनों में हमारी भक्ति, शक्ति, समर्पणा को उस रूप में पिरोना है। समता युवा संघ की **6 प्रवृत्तियों** - समता आराधना, उत्क्रांति, धार्मिक गतिविधियों, ज्ञान-ध्यान बढ़ाने वाली प्रतियोगिताओं, सामाजिक सेवा प्रकल्प, व्यसनमुक्ति प्रचार एवं तरुण शक्ति हेतु नए रूप में नए सिरे से ऊर्जा के साथ कार्य करना है, जिससे सभी का जीवन महक जाए। अपने उद्‌बोधन के अंत में आपने नवमनोनीत राष्ट्रीय महामंत्री, कोषाध्यक्ष, उपाध्यक्षगण, मंत्रीगण, संयोजकगण एवं प्रभारीगण आदि पदाधिकारियों की घोषणा की। संपूर्ण सभा आचार्य प्रवर के जय-जयकारों से गूँज उठी।

राष्ट्रीय महामंत्री ने गत वार्षिक आमसभा का कार्यविवरण सभा के पटल पर रखकर सर्वानुमति से अनुमोदना प्राप्त की। वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन की प्रति सभासदों को उपलब्ध करवाते हुए इसे पी.पी.टी. के माध्यम से सदन के पटल पर रखा।

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष ने वित्तीय वर्ष 2023-24 के आय-व्यय का लेखा-जोखा सदन में प्रस्तुत किया, जिसे सभा ने सर्वानुमति से अनुमोदित किया। तत्पश्चात् बीकानेर-मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय मंत्री ने अभिरामम् : आनंदम् प्रतियोगिता पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं सह-कोषाध्यक्ष ने कार्यकारिणी सभा में घोषित पुरस्कारों के वितरण हेतु विजेताओं को मंच पर आमंत्रित किया एवं संघ अध्यक्ष, महामंत्री सहित अनेक पदाधिकारियों व गणमान्यजनों द्वारा इन विजेताओं को सम्मानित किया गया।

उपस्थित सभासदों ने अपनी जिज्ञासाएँ एवं संघ विकास हेतु बहुमूल्य सुझाव सदन में रखें। समता युवा संघ, भीलवाड़ा के मंत्री ने आभार ज्ञापित किया। अंत में **'तेरे पावन चरणों में'** गीत की पंक्तियों के सामूहिक संगान एवं राम गुरु की जय-जयकार के साथ आमसभा संपन्न हुई।

प्रदत्त वार्षिक पुरस्कारों की सूची

क्र.	पुरस्कार	नाम	शहर	अंचल
1.	युवा तपस्वी	विशांत जी कोटड़िया	शहादा	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश
		पुलकित जी गुलगुलिया	पुणे	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
		जिनेश जी ओस्तवाल	शहादा	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश
		दुर्गेश जी नाहटा	रायपुर	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		अंकित जी गुणधर	दल्लीराजहरा	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		आयुष जी लोढ़ा	बेरला	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		पुलकित जी टाटिया	अर्जुनी	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		पवन जी नलवाया	बड़ीसादड़ी	मेवाड़
		रजत जी मूथा	जयपुर	जयपुर-ब्यावर
		हर्ष जी पारख	धमतरी	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		राकेश जी कंठालिया	बड़ीसादड़ी	मेवाड़
		निकेश जी कोटड़िया	धमतरी	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		दिलीप जी नंदावत	मैसूर	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश
		प्रणय जी बोहरा	देवकर	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		मयंक जी सोनावत	गंगाशहर	बीकानेर-मारवाड़
		विरल जी बाघमार	अहमदाबाद	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
		अभिषेक जी कांठेड़	नीमच	मध्य प्रदेश
		आदर्श जी बाँठिया	भीनासर	बीकानेर-मारवाड़
		दिव्यांश जी नाहटा	रायपुर	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		अभिलेश जी कटारिया	रायपुर	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		दीपक जी मोगरा	उदयपुर	मेवाड़
		अंकित जी रांका	मुंबई	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
		आनंद जी चौरड़िया	उदयपुर	मेवाड़
		करण जी देसरला	मैसूर	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश
		संभव जी पगारिया	जावरा	मध्य प्रदेश
		अविरल जी नाहटा	बालोद	छत्तीसगढ़-ओड़िशा
		हेमंत जी जैन	जयपुर	जयपुर-ब्यावर
		अभिकरण जी दक	प्रतापगढ़	मेवाड़

क्र.	पुरस्कार	नाम	शहर	अंचल
		दिलखुश जी डूंगरवाल	मैसूर	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश
		मनीष जी बोथरा	खेतिया	मालवा
2.	श्रेष्ठ आयोजन : व्यसनमुक्ति	समता युवा संघ	हैदराबाद	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश
3.	श्रेष्ठ आयोजन : सामाजिक	समता युवा संघ	इंदौर	मध्य प्रदेश
4.	श्रेष्ठ आयोजन : उत्क्रांति	समता युवा संघ	देशनोक	बीकानेर-मारवाड़
5.	श्रेष्ठ आयोजन : धार्मिक	समता युवा संघ	उदयपुर	मेवाड़
6.	श्रेष्ठ आयोजन : समता शाखा	समता युवा संघ	मंगलवाड़ चौराहा	मेवाड़
7.	श्रेष्ठ आयोजन : समता शाखा (उभरता क्षेत्र)	समता युवा संघ	चिखली	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.
8.	श्रेष्ठ अंचल : कैटेगरी-ए	मेवाड़ अंचल		
	श्रेष्ठ अंचल : कैटेगरी-बी	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई. अंचल		

हम चाहते तो हैं कि हमारा स्वरूप भी सिद्ध भगवान के जैसा हो, परंतु विडंबना यह है कि हमारे कदम उस दिशा में बढ़ते नहीं। हम सूर्य का प्रकाश तो चाहते हैं, पर उस प्रकाश को पाने के लिए सूर्य की दिशा में प्रयाण नहीं करते। हम किसी दूसरी ही दिशा में गति कर रहे हैं। आज का भौतिकवादी व्यक्ति धन और तन को तो महत्त्व देता रहा है, लेकिन पवित्र मन के निर्माण को महत्त्व नहीं देता। होना तो यह चाहिए कि तन और धन चला जाए तो कोई परवाह नहीं, पर मन की पवित्रता बनी रहनी चाहिए। इसके विपरीत जो लोग तन और धन को महत्त्व दे रहे हैं, उनके लिए मन को दूषित कर रहे हैं। क्या वे संस्कृति और संस्कारों की रक्षा कर पाएँगे? हम संस्कृति एवं संस्कारों को महत्त्व नहीं दे रहे। आज की औलादें जो जैन कुल में जन्मी हैं, उनसे पूछें कि संस्कृति क्या है? चौबीस तीर्थंकरों के नाम क्या हैं? तो वह उत्तर नहीं दे पाएँगी। यहाँ तक कि उसे तो नवकार मंत्र भी शुद्ध रूप में याद नहीं है। बहुत से प्रतिष्ठित घरानों के व्यक्तियों को कहते हुए सुनते हैं – णमोरिताणं। 'अ' कहीं चला गया और 'हं' का कहीं पता ही नहीं। चौबीस तीर्थंकरों के नाम नहीं जानते। भगवान महावीर का नाम तो फिर भी बता देंगे, बाकी का उन्हें कोई ज्ञान नहीं। इसका भी ज्ञान नहीं कि साधु जीवन क्या है? साधु-श्रावक जीवन से वे बेखबर हैं तो फिर वे कैसे सिद्धत्व की दिशा में बढ़ेंगे? कदाचित् साधु जीवन एवं श्रावक जीवन को नहीं भी जान पाएँ, कम से कम जिन धर्म को तो जानें कि जिन धर्म क्या है? कैसे होता है जैनत्व प्रकट? व्यक्ति राग-द्वेष के कीचड़ से बाहर आए। राग-द्वेष, मोह, अज्ञान से ऊपर उठे। ये राग-द्वेष आत्मा से हटेंगे तो जीवन में जैनत्व प्रकट हो जाएगा। आज हम इसलिए जैन कहलाते हैं, क्योंकि हमने जैन कुल में जन्म लिया है, पर हम जैनत्व को नहीं जानते। जैनत्व के संस्कारों को हम कितना समझकर चल रहे हैं, यह चिंतन का विषय है।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

संयुक्त वार्षिक अधिवेशन 2024 की झलकियाँ

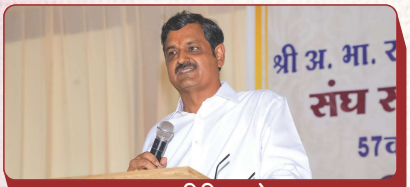

मुख्य अतिथि उद्बोधन

मुख्य अतिथि राजेश जी रांका, भीलवाड़ा का आत्मीय अभिनंदन करते हुए पदाधिकारीगण

संघ महाप्रभावक सदस्य राजमल जी पंवार, कानवन का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य कमल जी बैद, मुंबई का सम्मान प्राप्त करते हुए मुंबई-गुजरात अंचल के उपाध्यक्ष व मंत्री एवं गणमान्यजन

संघ महाप्रभावक सदस्या संतोष देवी मोदी, भिलाई का सम्मान प्राप्त करते हुए छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के पदाधिकारी एवं गणमान्यजन

संघ महाप्रभावक सदस्या कमला देवी कोठारी, बेंगलुरु का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्या मनोरमा देवी बैद, रायपुर का सम्मान प्राप्त करते हुए छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के पदाधिकारी एवं गणमान्यजन

संघ महाप्रभावक सदस्या कुसुम देवी टंच, बदनावर का सम्मान

संघ महाप्रभावक सदस्य विजय कुमार जी गोलछा, बीकानेर का सम्मान प्राप्त करते बीकानेर–मारवाड़ अंचल के उपाध्यक्ष एवं गणमान्यजन

श्रेष्ठ प्रवृत्ति धर्मपाल संस्कार एवं बौद्धिक विकास समिति का सम्मान प्राप्त करते हुए प्रवृत्ति के राष्ट्रीय संयोजक

श्री साधुमार्गी जैन संघ, भीलवाड़ा के पदाधिकारीगण श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान प्राप्त करते हुए

श्रेष्ठ तप अलंकरण सम्मान विजय कुमार जी सांड, देशनोक (32 मासखमण) की अनुपस्थिति में ग्रहण करते हुए बीकानेर–मारवाड़ अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग में प्रथम श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु का आत्मीय सम्मान

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग में द्वितीय श्री साधुमार्गी जैन संघ, बेंगलुरु का आत्मीय सम्मान

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग में तृतीय श्री साधुमार्गी जैन संघ, सूरत का आत्मीय सम्मान

श्रेष्ठ दानपेटी सहयोग (अंचल) सम्मान ग्रहण करते हुए छत्तीसगढ़–ओड़िशा अंचल के गणमान्यजन

श्रेष्ठ संगठनात्मक कार्य कौशल सम्मान दानपेटी योजना टीम हेतु ग्रहण करते हुए प्रवृत्ति के राष्ट्रीय संयोजक एवं टीम

उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता सम्मान अतुल जी पगारिया, जावरा को प्रदान करते हुए संघ राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारीगण

श्रेष्ठ आयोजन (अभिमोक्षम्) सम्मान श्री साधुमार्गी जैन संघ, चित्तौड़गढ़ को प्रदान करते हुए संघ पदाधिकारी एवं प्रमुखजन

गुणवत्ता शिविर (उन्नयन) सम्मान श्री साधुमार्गी जैन संघ, हैदराबाद के लिए ग्रहण करते हुए कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

बाल तपस्वी सम्मान – पुलकित टांटिया, अर्जुनी (मासखमण)

बाल प्रतिभा सम्मान – टीआ नागोरी, बड़ौदा (6 वर्ष)

श्रेष्ठ समता संस्कार पाठशाला सम्मान नोखामंडी पाठशाला को प्रदान करते हुए संघ प्रमुखगण

श्रेष्ठ अध्यापक सम्मान विदू जी गुरलिया, बेंगलुरु को प्रदत्त

श्रेष्ठ विद्यार्थी सम्मान आगम रांका, खिरकिया को प्रदत्त

समता संस्कार पाठशाला के अंतर्गत संपन्न RRR Fiesta प्रतियोगिता में विजेता राम कृपा टीम का सम्मान

श्रेष्ठ जैन संस्कार पाठ्यक्रम कार्यकर्ता मीनाक्षी जी जैन, रायपुर का सम्मान प्राप्त करती हुई छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल की कार्यकारिणी सदस्याएँ

जैन संस्कार पाठ्यक्रम श्रेष्ठ कार्यकर्ता सम्मान प्रेमलता जी जैन, बेंगलुरु की अनुपस्थिति में ग्रहण करते हुए संघ के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

संयुक्त संघ अधिवेशन के द्वितीय सत्र की झलकियाँ

विशिष्ट अतिथि महावीर जी चौधरी, निदेशक, JATF
का आत्मीय अभिनंदन करते हुए पदाधिकारीगण

विशिष्ट अतिथि का उद्बोधन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति के 57वें वार्षिक अधिवेशन की कतिपय झलकियाँ

श्रेष्ठ महिला रत्ना संगीता जी पितलिया, हैदराबाद
की अनुपस्थिति में सम्मान ग्रहण करते हुए उनके परिवारजन

विशिष्ट शासन प्रभाविका सम्मान सुमन जी छाजेड़, हावड़ा को प्रदत्त

श्रेष्ठ शासन सेविका शांति बाई पारख, रायपुर
की अनुपस्थिति में सम्मान ग्रहण करते हुए उनके परिवारजन

विशिष्ट तपस्वी ज्ञानी देवी भूरा, करीमगंज
की अनुपस्थिति में सम्मान ग्रहण करते हुए उनके परिवारजन

श्रेष्ठ तपस्वी लीला कँवर जी कोठारी, ब्यावर
की अनुपस्थिति में सम्मान ग्रहण करते हुए उनके परिवारजन

दीर्घ अनुभवी एवं युवा नारीशक्ति की
कार्यकारिणी सभा में विशिष्ट उपस्थिति

श्रेष्ठ स्वाध्यायी सम्मान कीर्ति जी डागा, खरियार रोड

श्रेष्ठ स्वाध्यायी कु. स्नेहा जी मुणत, रतलाम
की अनुपस्थिति में सम्मान ग्रहण करते हुए परिवारजन

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के 46वें वार्षिक अधिवेशन की कतिपय झलकियाँ

श्रेष्ठ शासन सेवा सम्मान समता युवा संघ, भीलवाड़ा
को प्रदान करते हुए संघ पदाधिकारीगण

श्रेष्ठ समता युवा संघ (वृहद्) समता युवा संघ, सूरत
का सम्मान ग्रहण करते हुए संघ अध्यक्ष एवं टीम

श्रेष्ठ समता युवा संघ (लघु) समता युवा संघ, मंड्या
का सम्मान ग्रहण करते हुए कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल के प्रमुखगण

शासन गौरव सम्मान ग्रहण करते हुए
मुकेश जी पिपाड़ा, अहमदाबाद एवं उनके परिवारजन

समता युवारत्न विशाल जी बाँठिया, भीनासर
का सम्मान ग्रहण करते हुए गंगाशहर-भीनासर संघ के प्रमुखगण

अधिवेशन के विशेष अवसर पर उपस्थित संगठित युवाशक्ति

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

शासन गौरव अलंकरण से सम्मानित व्यक्तित्व

सुश्रावक मुकेश जी पिपाड़ा, अहमदाबाद

आप अहमदाबाद निवासी ब्यावर प्रवासी सुश्रावक शोभालाल जी-सुश्राविका कांता जी पिपाड़ा के सुपुत्र हैं। आपको धर्म के संस्कार विरासत में प्राप्त हुए हैं। पूरा पिपाड़ा परिवार शासन के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान है। आपके मुख पर सदैव मधुर मुस्कान रहती है। नम्रता, विनय, संघ सेवा, धार्मिक अध्ययन आदि गुण आपके व्यक्तित्व की पहचान हैं। संघ व चारित्रात्माओं के प्रति अपने कर्तव्य पालन एवं त्याग-तप, व्रत-नियम में आप सदैव तत्पर रहते हैं। आपने प्रतिक्रमण, पुच्छिंसु णं, श्रीमद् दशवैकालिक सूत्र के 4 अध्ययन, जैन सिद्धांत बत्तीसी, गति-आगति, लघुदंडक, जीवधड़ा, लोक-अलोक, लवण समुद्र का थोकड़ा, गुणस्थान स्वरूप आदि कंठस्थ किए हुए हैं। आप कर्मतत्त्वज्ञ की परीक्षा दे रहे हैं तथा कर्म क्विज़ के ग्रैंड फिनाले में पहुँच गए हैं। आपने मात्र 33 वर्ष की आयु में जमीकंद, रात्रिभोजन का आजीवन त्याग ग्रहण कर आदर्श उपस्थित किया है। आपका जीवन अन्यों के लिए अनुकरणीय है।

युवारत्न अलंकरण से सम्मानित व्यक्तित्व

सुश्रावक विशाल जी बाँठिया, भीनासर

आप भीनासर निवासी सुश्रावक देवेंद्र जी-सुश्राविका मंजू जी बाँठिया के सुपुत्र हैं। धार्मिकता से सुसज्जित विशाल जी पेशे से व्यवसायी हैं। आपने बी.कॉम. की डिग्री हासिल की है। समता युवा संघ, गंगाशहर-भीनासर के अनेक कार्यक्रमों में आपने अतुलनीय सेवाएँ देते हुए अनेक पदों को विभूषित किया है। वर्तमान में आप सह-कोषाध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दे रहे हैं। इसी के साथ अन्य संस्थाओं मुरली मनोहर गौशाला में ट्रस्टी एवं ओसवाल पंचायती, भीनासर में कोषाध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। आप इसी प्रकार आध्यात्मिक गतिविधियों एवं संघ सेवा के कार्यों में अग्रणी रहते हुए उन्नति के पथ पर आरूढ़ रहें, यही मंगलकामना करते हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

पुनः मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष

सुश्रावक सुमित जी बम्ब

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सत्र 2024-26 हेतु देवली (टोंक) निवासी जयपुर प्रवासी **सुमित जी बम्ब** को पुनः राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत किया गया। आप देवली (टोंक) निवासी जयपुर प्रवासी सुश्रावक सुशील कुमार जी-सुश्राविका विमला देवी बम्ब के सुपुत्र हैं। आपका पूरा परिवार शासन एवं गुरु के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान है। व्यवसाय से प्रोजेक्ट टेक्निकल (कंप्यूटर) प्रोफेशनल श्री सुमित जी श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, समता युवा संघ, जयपुर के अध्यक्ष, मंत्री एवं जयपुर-ब्यावर अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर सेवाएँ दे चुके हैं। आपने शैक्षणिक योग्यता के रूप में बी.टेक. (कंप्यूटर साइंस) की डिग्री प्राप्त की है। परम पूज्य आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से मृदुभाषी, तीक्ष्ण मेधाशक्ति से संपन्न सुमित जी बम्ब के कार्यकाल में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ और नई ऊँचाइयों को छुए, यही मंगलकामना है।

नवमनोनीत राष्ट्रीय महामंत्री

सुश्रावक सुमित जी दस्साणी

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सत्र 2024-26 हेतु मुंबई निवासी **सुमित जी दस्साणी** को राष्ट्रीय महामंत्री पद पर मनोनीत किया गया है। आप बीकानेर निवासी मुंबई प्रवासी सुश्रावक सुरेंद्र कुमार जी-सुश्राविका मालती देवी दस्साणी के सुपुत्र हैं। बी.कॉम. की डिग्री प्राप्त, पेशे से व्यवसायी सुमित जी का संपूर्ण परिवार संघ एवं शासन समर्पित है। आप समता युवा संघ, मुंबई के अध्यक्ष पद का निर्वहन कर चुके हैं। आचार्य श्री नानेश-रामेश आपके संपूर्ण परिवार के रोम-रोम में बसे हुए हैं। परम पूज्य आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से मृदुभाषी कर्मनिष्ठ सुमित जी दस्साणी के इस कार्यकाल में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ नवीन संकल्पों को पूर्ण करे, यही शुभेच्छा है।

नवमनोनीत राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

सुश्रावक दीपक जी कंठालिया

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के सत्र 2024-26 हेतु **दीपक जी कंठालिया** को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया है। आप उदयपुर निवासी बड़ीसादड़ी प्रवासी सुश्रावक सुभाषचंद्र जी-सुश्राविका मुन्ना देवी कंठालिया के सुपुत्र हैं। आपका पूरा परिवार संघ एवं शासन के प्रति समर्पित एवं निष्ठावान है। आपने इलेक्ट्रॉनिक्स डिप्लोमा की शिक्षा प्राप्त कर व्यवसाय की राह चुनी। आप मेडिकल इक्यूपमेंट कंपनी आरना सिस्टम्स एंड वेलनेस प्रा. लि. के डायरेक्टर हैं। गत सत्र में आप राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष के रूप से सेवाएँ दे चुके हैं। संपूर्ण कंठालिया परिवार आचार्य श्री नानेश-रामेश का अनन्य भक्त एवं सेवाभावी है। परम पूज्य आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से विशिष्ट प्रतिभा के धनी, मधुर व्यवहारी दीपक जी के इस कार्यकाल में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ नवीन संकल्पों के साथ ऊँचाइयों के शिखर पर आरोहित हो, यही शुभभावना भाते हैं।

ज्ञान और आचरण में अंतर है। ज्ञान सिर्फ जानकारी देता है, जबकि आचरण से ज्ञान से जाने हुए विषय का स्वरूप जीवन में आता है। ज्ञान और क्रिया ही जीवन के मुख्य अंग हैं। ज्ञान की साधना और आचरण की आराधना, इन दोनों का संगम जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने वाला है। जब तक दो का संगम नहीं होता, तब तक जीवन सक्रिय नहीं बनता। प्रत्येक पदार्थ की गतिशीलता में दो तरह के तत्त्व सदा काम करते हैं। सारे संसार का निचोड़ दो तत्त्वों के भीतर है। इन दोनों तत्त्वों को आगम के आधार पर समझ करके चलें, जिससे सही ज्ञान और सही साधना का रूप सामने आएगा। ज्ञान और क्रिया का स्वरूप गुरुजनों से ही मिल सकता है। सोचें कि गुरु का पद कितना गरिमामय और विशिष्ट है? 'आगमधर गुरु' के आगे का विशेषण है समकिती। सम्यक्त्वी का स्वभाव मिथ्यात्वी से सम्यक्त्वी बनाना है, अज्ञानी को ज्ञानी बनाना है और चरित्र को आचरण से पवित्र बनाना है। ऐसे प्रचलन में चारित्र शब्द का पवित्र आचरण ही अर्थ लिया जाता है। आचरण दोनों तरह के होते हैं, गलत भी और सही भी। मनुष्य का आचरण को दो विशेषणों के साथ पुकारा जाता है कि दुश्चारित्री यानी खोटे आचरण वाला, बुरे चारित्र वाला दुराचारी और सद्आचरण वाले के लिए सदाचारी का प्रयोग करते हैं। आचार को सदाचरण के रूप में प्रकट करना, आगमिक ज्ञान के रूप में प्रकट करना ही जीवन की विशेषता है। उसमें जो बाधक तत्त्व हैं उनको हटाना है। वे बाधक तत्त्व मिथ्यात्व हैं। मिथ्यात्व के हटते ही सम्यक्त्व आ जाता है। जब व्यक्ति सम्यक्त्वी बन जाता है तो उसका सारा ज्ञान सम्यक् ज्ञान बन जाता है, अज्ञान नहीं रहता। उसका आचरण सद्आचारण बन जाता है। इसलिए महत्त्वपूर्ण कड़ी इसमें आई कि मिथ्यात्व को हटाने वाला तत्त्व है सम्यक्त्व।

– परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

|| जय गुरु नाना ||

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

HELPLINE NUMBER ONLY FOR WHATSAPP

साधुमार्गी जैन संघ की प्रवृतियों (ग्लोबल कार्ड, इदं न मम, श्रमणोपासक, साहित्य, धार्मिक परीक्षा बोर्ड इत्यादि) से सम्बंधित कोई भी जानकारी के लिए इस हेल्पलाइन नं पर Whatsapp करें। इसके लिए आपकी निम्न जानकारी अनिवार्य रूप से आवश्यक है-

1. MID NO.-
2. नाम -
3. शहर का नाम -
4. संपर्क सूत्र -

- ☐ MID No. होने पर प्राथमिकता दी जाएगी।
- ☐ अपने सुझाव या शिकायत 50 से 75 शब्दों में ही लिखें।
- ☐ केवल WhatsApp मेसेज ही उपलब्ध है।
- ☐ फोन कॉल, WhatsApp Call or SMS इस नंबर पर नहीं है।

सिर्फ WhatsApp पर भेजे गए मेसेज का समाधान शीघ्र किया जायेगा।

हेल्पलाइन नंबर
853 58 58 853
(Only WhatsApp)

|| जय महावीर ||

|| जय गुरु नाना ||

|| जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

:: Donor Portal ::

to view your Donation and Membership
please visit this url or scan the QR Code

https://donor.sadhumargi.com/

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। विशिष्ट पाठकों, लेखकों व अन्य जनों के लिए श्रमणोपासक गुरु गुणानुवाद का विशेष अवसर उपस्थित कर रहा है। श्रमणोपासक के **अक्टूबर 2024 धार्मिक अंक** से **मार्च 2025 धार्मिक अंक** तक के सभी प्रकाशन **आचार्य भगवन् के गुणों, विशेषताओं, साधना व संयमी जीवन, संघ के प्रति आचार्य भगवन् का चिंतन, संघ समर्पणा क्यों आवश्यक, महत्तम आरोग्यम्** पर आधारित रहेंगे। उपर्युक्त विषयों पर आधारित रचनाएँ आप सभी से सादर आमंत्रित हैं। चूँकि महत्तम शिखर वर्ष गतिमान है, अत: हम सभी को महत्तम महापुरुष के गुणों का बखान कर कर्मनिर्जरा करने एवं उन गुणों को आत्मसात करने का अपूर्व अवसर उपलब्ध हुआ है। हम सभी अपने गुरु के गुणानुवाद कर इस अवसर का लाभ उठावें।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। इन विषयों पर आलेख के साथ-साथ आप अपने अनुभव एवं संस्मरण भी भिजवा सकते हैं। यदि आपके पास श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ – लेख, कविता, भजन, कहानी आदि हिंदी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं।

उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाएँ, संस्मरण, कविताएँ, लेख, कहानियाँ या अन्य कोई ऐसी विषयवस्तु जो सर्वजन हिताय प्रकाशित की जा सकती हो, तो इन रचनाओं का भी सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

-श्रमणोपासक टीम

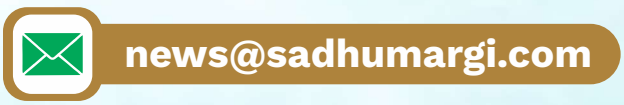

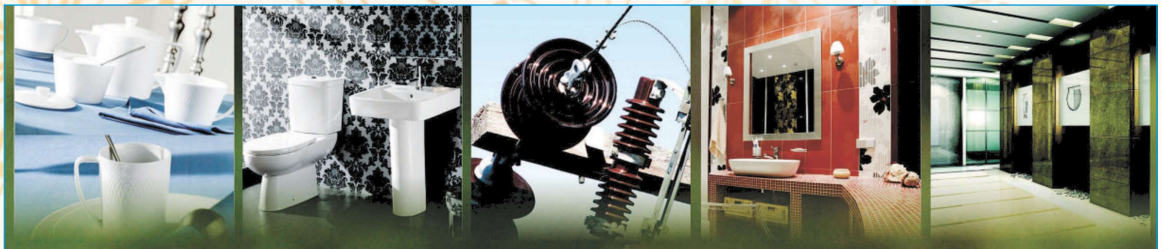

Serving Ceramic Industries Since 1965

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन

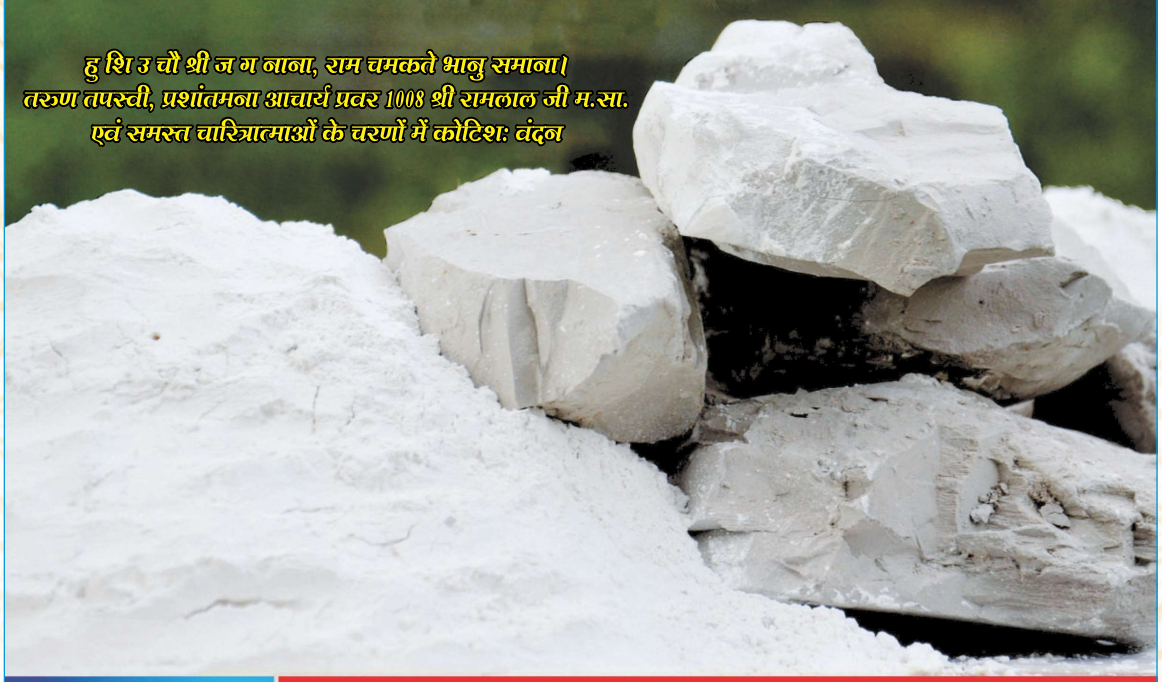

A Premier Clay Specialists in The Country...

- 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
- Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
- In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
- Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
- Export good quantity of minerals to various countries.
- Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.

JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group

Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA

Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com

www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

इसका उद्घाटन फरवरी 2025 से पहले होना संभावित है।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681
IFSC Code : SBIN0003401
Branch : G.S. ROAD, Bikaner
Mob. : 7073311108
E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 6375633109	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	: 9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	: 7231933008	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक
लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

जय गुरु नाना

जय महावीर

जय गुरु राम

YOUR TRUST

RAKSHA PIPES

FLEXIBILITY IS OUR STRENGTH
52 RAKSHA SHAND GROUP
SINCE 1977

OUR GUARANTEE

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

FIRST IN INDIA
ISI FITTINGS WITH ADVANCED CO-MOULDED DURO RING SEAL

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिश: वंदन!

Sri Shantilal, Sanjay, Ajay & Tushar Shand

SHAND GROUP OF INDUSTRIES

No. 52, 7th Cross, Wilson Garden, Bengaluru - 560027.INDIA
Phone: +91-80-22235726, 22271902, 22225734.
Fax: +91-80-22234779. E-mail: mkt@shandgroup.com

RAKSHA FLO
P.T.M.T TAPS & ACCESSORIES

Diamond Duroflex

Diamond DUROLON

DURO RING

Now with new M.R.O. Technology Resists high Impact

LEAK PROOF

NSF/ANSI/CAN 61 IAPMO

IS 15778 : 2007 CM/L NO : 2526149

ENVIRONMENT FRIENDLY LEAD FREE

cftri CERTIFIED

UV STABILIZED

LUCALOR FRANCE

www.shandgroup.com

रक्षा — जीवन भर की सुरक्षा

www.rakshapipes.com

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24,800

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh